

Barcode : 99999990293905
Title - Dhatumanjari Prachingrahita
Author - Shastri,Jivram
Language - sanskrit
Pages - 194
Publication Year - 1906
Barcode EAN.UCC-13



इदं पुस्तकं बडोदा

पत्तनस्थ नूतनविलासयन्त्रालये मुद्रितम्.

श्री. धातुमञ्जरी.



धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अक	१	कुटिलायां गतौ	अकति	म
अक	१	लक्षणे	अकृतेवृषं	इ उ
अक	१०	लक्षणे	अकृयति	क इ
अकृ	१०	लक्षणे पदेच	अकृयति	क त
अक्ष	१	संघाते(त)व्याप्तौ	अक्षति धनं वैश्यः	ऊ
अक्ष	५	व्याप्तिसंहत्योः	अक्ष्णोति	न ऊ
अग	१	कुटिलायां गतौ	अगति सर्पः	म
अग	१	गतौ	अकृति	इ
अगद	११	नीरोगत्वे	अगद्यति रोगिणां भिषक्	ट
अकृ	१०	लक्षणे	अकृयति	क त
भघ	१०	पापकरणे	अघयति लुब्धः	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अघ	१	गत्याक्षेपे (अथवा)	अंघतेमृगः	इ-इ
अच	१	गतिनिन्दारभजवेपु	अञ्चति (वा) अचते	अ-इ
अच	१	पूजने	अञ्चतिकृष्णम्	उ इ
अच	१	गतिपूजनयोः	अञ्चयति	क
अञ्च	१०	व्यक्तायां वानि	अञ्चति	उ
अञ्च	१	म्लेष्टोक्तौ	अञ्चति (वा) अञ्चते	अ उ
अञ्च	१	गतिपूजनयोः	अञ्चयति	उ क
अञ्च	१०	विशेषणे	अञ्चति	इ
अञ्च	१	आयामे	अञ्चति	
अज	१	गतौ (त) क्षेपे	अजति	अज
अज	१०	भासि	अञ्जयति	क इ
अज	७	अक्षणकान्तिगतिषु	व्यनक्तिविद्यांसाधुः-अ-	ध उ जि
			भ्यनक्ति तैलेनागं.	
अट	१	गतौ	अटति	पर्यटनं
अट	१	अतिक्रमे	अटते विप्रं यवन.	ह
अट	१०	अनादरे	अटयति	अटः
अठ	१	गतौ	अठति	ह
अठ	१	गतौ	अण्ठते	इ ह
अड	५	व्यापने	अड्नाति	न र
अड	१	उद्यमे	अडाति धनाय	
अड	१	अभियोगे	अडति ज्ञानं मुनिः	

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अण	१	शब्दे	अणति	-
अण	४	प्राणने	अण्यते	य ड
अत	१	सातत्यगमने	अतति लोकं हरिः आत्मन् आत्मा	
अत	१	चन्धने	अन्तति दुष्टं राजा	इ
अद	२	भक्षणे	अत्ति (वाअदति १) मो- दकं कृष्णः	ल औ
अद	१	चन्धने	अन्दति दुष्टं राजा	इ
अन	४	प्राणने	अन्यते क्लेशेन भिक्षुः	य ड
अन	२	प्राणने	अनिति प्राणः	ल घ
अन्ध	१०	दृक्क्षये	अन्धयति-अन्धः धा-धं.	क त
अव	१	शब्दे	अंवते शिशुः	ड इ
अम्बर	११	संभरणे	अंवर्यतियोपितं प्रियः	ट
अभ	१	शब्दे	अम्मते अम्भः	ड इ
अभ्र	१	गतौ	अभ्रति अभ्रं	
अम	१	गतिभजनशब्देषु.	अमति	
अम	१०	रोगे	अमयति	
अम्ब	१	गतौ	अम्बति	
अय	१	गतौ	अयते-अयस्	ड
अरर	११	आराकर्माणि	अरर्यति रथकारो रथाय	ट
अर्क	१०	स्तवने	अर्कयति अर्कः	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अर्घ {	१	हिंसायां (अथवा) मूल्ये	अर्घति अर्घः	
अर्च	१०	पूजायां	अर्चयते (तथा) अर्चयति	क ड
अर्च	१	पूजायां	अर्चते (तथा) अर्चति	क
अर्ज	१०	प्रयत्ने (त) सं-स्कारे	अर्जयति धनं उपार्जनं	क
अर्ज	१	अर्जने	अर्जति धनं उपार्जनं	
अर्थ	१०	याचने	अर्थयते याचकोऽर्थ अर्थ-ना अर्थः	क त ड
अर्ह	१	हिंसायां	अर्हति (वा) अर्हते अर्हयति अर्हते	अ
अर्ह {	१	पीडागतियाचनेषु	रक्षःसहस्राणिचतुर्दशार्दत् अर्हति तीर्थ यतिः शरद्वघनं नार्हति चातकोपि	
अर्ह	१०	हिंसायां	अर्हयति (वा) अर्हयते	क अ
अर्व	१	हिंसायां गतौ च	अर्वति	
अर्व	१	हिंसायां	अर्वति	
अर्ह	१	योग्यत्वपूजनयोः	अर्हति	
अर्ह	१०	पूजायां	अर्हयति—अर्हणा	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अल	१	भूषणपर्याप्तिवार- णेषु	अलति (वा, अलते) के- शं माल्येन अलति कंसाय कृष्णः अलतिचोरं राजा	ञ
अव	१	पालने (त) प्री- णने	अवति	
अवधीर	१०	अवज्ञायां	अवधीरयति	क त
अश	९	व्याप्तौ (त) सं- हतौ	अश्नुते विश्वं हरिः	न ङ ऊ
अश	९	भोजने	अश्नाति	ग
अंशः	१०	समाधाते	अंशयति द्रव्यं भ्रातृवर्गः अंश	क त
अप	१	दीप्तिगतिग्रहेषु	अपति	
अस	१	दीप्त्यादानयोः	वासुदेवं परित्यज्य यो- ऽन्यदेवमुपासति (वा) उपासते	व
असू	११	उपतापे	असूयति	ट
असू	११	उपतापे	असूयति	ट
असू	११	उपतापे	अमूयति (वा) असूयते	व ट
अस	२	भुवि	अस्ति हरिः	ल
अस	४	क्षेपणे	अस्यति शरं शूरः अस्त्रं न्यासः	य ऊ इ र

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अंस	१०	समाघाते	(यथांशः प्रथमागतः)	क त
अह	१०	भासे	अंहयति	क इ
अह	१	गतौ	अंहते	उ इ
आछ	१	आयामे	आछति चरणं वामनः	इ
आंदोल	१०	आंदोलने	आंदोलयति	क त
आप	१	लंभने	आपनि	लृ
आप	१०	लंभने	आपयति धनं जनः	क लृ
आप	५	व्याप्तौ	आप्तेति भुवनं विष्णुः	न लृ
आम	१०	रागे	आमयति	क
आशास	२	इच्छायां	मोक्षमाशास्ते मुनिः	उ
आस	२	उपवेशने	आस्तेगृहे	ल ड वि
इ	२	गतौ	एति पथिकः आय	ल
इ	२	अध्ययने	वेदमधीते गिशु.	ल ड
इ	२	अधिउपसर्गे स्मरणे	अध्येति गोकुलं कृष्ण	ल
इ	१०	अधिउपसर्गे स्मृत्यां	अध्यापयति	क
इख	१	गतौ	एखति	
इख	१	गतौ	इंखति	इ
इग	१	गतौ	एगति	
इग	१	गतौ	इगति	इ
इट	१	गतौ	एटति	
इद	१	परमैश्वर्यं	इन्दति इन्दः इन्दुः	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
इध	७	दीप्तौ	इधे वह्निर्इधनेन	य ड ई जि
इभ	१	संघाते	इंभयते	क ड इ
इर	११	इर्प्यायां	इर्ग्यति (वा) इर्ग्यते	ज ढ इ
इरज	११	इर्प्यायां	इरज्यति	ट
इरस्	११	इर्प्यायां	इरस्यति	ट
इल	१०	प्रेरणे	प्रेलयति इला	क
इल	६	गतौ (त) क्षये	इलति पांथः एलिप्यति	श
		क्षेपे	इला एला	
इला	११	विलासे	इलायति	ट
इव	१	व्याप्तौ	इन्वति विश्वं दिप्नुः	इ
इष	४	गतौ	इप्यति	
इष	६	वांछायां	हरिभक्तिमिच्छतिविप्रः	श
इष	९	आभिक्षण्ये	इच्छा इष्णात्यन्नं शिशुः अन्वे- षणं	ग
इष	४	गतौ	इयते	ड
इष	२	{ कान्ति गतिव्याप्ति क्षेपप्रजननखादनेषु	इति (इत्यादि)	ल
इक्षि	१	दर्शने	{ न कामवृत्तिर्वचनीयमोक्ष ते निरीक्षणं निरीक्षि- प्यामि	ड

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ईक्ष्य	१	ईर्ष्यायां	ईक्ष्याते	
ईष्व	१	गतौ	ईष्वति	इ
ईज	१	गतौ	ईजते ईजचिक्रे	ह
ईज	१	{ गतौ (तथा) कु- त्सायां	ईजति (वा) ईजते	ई व
ईड्य	१०	स्तवने	ईडयति	क
ईड्य	२	स्तुतौ	ईडेहरिविप्रः	ल
ईत	१	बन्धने	ईन्तति	इ
ईर	२	गतौ कंपनेच	ईर्त्त समीर.	ल
ईर	१०	प्रेरणे क्षेपेच	ईरयति गमं यन्ता	क
ईर	१	प्रेरणे	ईरति	
ईर्ष्य	१	ईर्ष्यार्थे	ईर्ष्यति साधुं पापी ईर्षा	
ईश	२	ईश्वर्ये	ईष्टेराजा ईशः ईश्वर. ऐ- श्वर्यं	ल ह
ईष	१	उञ्छे	ईषति	उ
ईष	१	गतिदर्शनहिंसा- दानेषु	ईषते पांथः	
ईह	१	चेष्टायां	समीहते धर्माय साधुः	ह
उ	१	शब्दे	अवते अविः	ह
उक्ष	१	सेचने	उक्षति उक्षा (उक्षन्)	
उख	१	शोषणालमर्थयोः	ओषति हिमेन वृक्षः	ऋ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
उख	१	गतौ	ओखति उखा	
उख	१	गतौ	उंखति	इ
उच	४	समवाये	उच्यति बंधुना बंधुः ओक	य
उछ	६	उंछे	उंछति धान्यं	श इ
उछ	६	निवासे (अथवा) वर्जने बन्धने-समाप नेअतिक्रमे	उछति	श इ
उज्झ	६	त्यागे	उज्झति त्वचं सर्पः	श
उठ	१	उपघाते	ओठति	
उन्द	७	क्लेदने	उनत्ति गंगाजलेन गात्रं यतिः उदकः	ध इ
उद्ग	६	उत्सर्गे	उद्गति त्वचंसर्पः उद्गांच- कार उद्गः	
उध्रस्	१०	उज्छे	उध्रासयति कणान्भिक्षुः	क
उव्ज	६	आर्जवे	उव्जति कुव्जां कृष्णः	श
उभ	६	पूरणे	उभति धनेनार्थिनं कर्णः उभयं	श
उंभ	६	पूरणे	उंभति	श प
उरी	६	उद्यमने	उरते	ड ई श
उरस्	११	बलार्थे	उरस्यति	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
उर्णु	२	आछादने	उर्णोति (वा) उर्णुते	ल ड
उर्द	१	{ माने (तथा) की-	उर्दतेस्वर्णं स्वर्णकारः	
उर्व	१	डायां आस्वादे		
उष	१	हिंसायां	उर्वति	झ
उप	१	दाहे (तथा) वधे	ओषति	
उपस्	११	प्रभातीभावे	उपस्यति	ट
उह	१	अर्दे	उंहति	झ
ऊठ	१	उपघाते	ऊठति	
ऊन	१०	परिहाणे	ऊनयति घृतं भोक्ता	क त
ऊय	१	{ तंतुसंताने (अथ-	ऊयते वस्त्रं तंतुवाय. ऊनं	ड ई
ऊर्ज	१०	वा सेवने		
ऊर्णु	२	बलप्राणधारणयोः	ऊर्जयति धार्मिकः	क
ऊष	१	आछादने	ऊर्णोति (तथा) ऊर्णुते	ब ल
ऊह	१	रुजायां	गगनं मेघः	
			ऊषति रोगो देहं ऊषः	
			ऊषरः	
	१	वितर्के	ऊहते शास्त्रे बुधः समूहः	ढ
			अनुक्तमप्युहति पंडितो	
			जनः	
आ	१	प्रापणे	अरति यतिर्विष्णुं आर-	
आ	३	गतौ	इयति	लि र

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कृ	१	हिंसायां	कृणोति	न र
कृक्ष	१	जिवांसायां	कृक्ष्णोति	न र
कृच	६	संवरणेनुत्यां	कृचति हरिं युवःकृक् (वा)कृच्	श
कृच्छ	६	(गतोन्द्रियप्रलयम्- तिमात्रेषु	कृच्छतिवृद्धःकृच्छतिशी- तेनघृतं	श
कृच्छु	१	गतौ	कृच्छति	
कृज	१	(गतौ (अथवा) स्थिर्य-उर्जते अर्जते	अर्जते	ङ
कृज	१	अर्जे	कृजते	इ ङ
कृण	८	गतौ	कृणोति (वा) कृणुते कृतं	द ञ उ
कृत्	१	(स्पन्दनैश्वर्यवृणाग- तिषु	अर्त्तति	
कृत्	२	(जुगुप्सायांरुपा- यांन	कृतीयते दुर्वले धनी- सौत्रः	ल
कृथ	९	वृद्धौ	कृथोति धर्मेण विप्रः कृ- द्धःधा धं	न उ
कृथ	४	वृद्धौ.	कृथ्यति अविध्यति कृ- द्धः धा-धं	उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क्रफ	६	{ हिंसायां (अथवा) दानेच्छाघायां निद्रा यां युद्धे	क्रफति	श
क्रंफ	६	हिंसायां	क्रंफति	श
क्रप	१	आदानसंवरणयोः	अर्पति, वा) अर्पते क्रपभ	
क्रप	६	गतौ	क्रपति	श ई
क्र	२	गतौ	क्रणाति	ग मि
एज	१	कम्पे	एजति	क्र
एज	१	दीप्तौ	एजते	क्र ङ
एठ	१	बाधने	एठते	ङ
एध	१	वृद्धौ	एधते धर्मेण साधु. एधः ऐ- धस्	ङ
एला	११	विलासे	एलायति	ट
एष	१	गतौ	एषते	क्र ङ
ओख	१	शोषणालर्मथयो.	ओखति	क्र
ओज	१०	बलतेजसोः	ओजयति	क त
ओण	१	अपनयने	ओणाति धनं चौरः	
ओलड	१	उत्क्षेपे	ओलण्डति	ङ
ओलड	१०	उत्क्षेपे	ओलण्डयति	क ङ
कक	१	{ लौल्ये (अथवा) इच्छागर्वचापले	करुते काकः	ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कक	१	गतौ	कङ्कते	इ इ
कक्क	१	हसने	कक्कति	
कक्ख	१	हसने	कक्खति	ए
कक्	१	हसने	कक्कति	
कख	१	हसने	कखति कखि:	
कग	१	संवरणे	कगति	ए
कच	१	बन्धने	कचते केशं नारी कचः विकचः	
कच	१	रवे	कचति	
कच	१	दीप्तौ	कच्चते	इ इ
कट	१	गत्यां	कटति	इ
कट	१	गतौ	कटति	
कट	१	कृच्छ्रजीवने	कटति	
कट	१	वर्षावरणे	कटति कटेन गात्रं गो- रक्षकः कटः	ए
कट	१	गतौ	कटति कण्टकं	
कठ	१	तंकने	कण्ठति	
कठ	१	शोके	कण्ठते	ऊ इ
कठ	१	शोके	कण्ठति	इ
कठ	१०	शोके	कण्ठ्यति कण्ठः कण्ठं कण्ठा कण्ठी	क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कड	१	मर्दे	कडति धनेन	
कड	१०	भेदे (तथा) रक्षणे	कण्डयति	क इ
कड	१	मर्दे (तथा) अदने	कडति धनेन मूर्खः	श
कड	१	मर्दे	कण्डते धनेन मूर्खः	इ इ
कड	१	तुषापकरणे	कण्डते तंदुलं स्त्री	इ इ
कड्ड	१	कार्कश्ये	कड्डति कृपणा	
कण्डू	११	मात्रविधर्षणे	कण्डूयति (वा) कण्डूयते मात्रं	ब ट
कण	१	गतौ	कणति काण कण	म
कण	१	शब्दे	कणति	ऋ
कण	१०	निमीलने	कणयति नेत्रं	क
कथ	१	श्लाघायां	कथते हरिकथां कवि	रु
कत्र	१०	शैथिल्ये	कत्रयति	क त
कथ	१	श्लाघाया	कथते हरिकथां कवि	इ
कथ	१०	वाक्यप्रबन्धे	कथयति काव्यं कथकः कथा	क त
कद	१	वैकुण्ठे	कदते	इ
कद	१	वैकुण्ठे	कन्दते	इ इ
कद	१	आह्वानरोदनयोः	कन्दति	इ
कन	१	दीप्तौ (त०) प्री- तिगतयोः	कनति दीपः	इ वि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबंध.
कप	१	चलने	कंपते	इ ड
कव		वर्गे	(इतिकव	
कम	१	कान्तौ	कमते	कामः उ ड
कम	१-१०	कान्तौ	कामयते	उ रु
कम्ब	१	गता	कम्बति	
कर्च	१	गत्यां	कर्चति	
कर्ज	१	व्यथने	कर्जति केशिनं कृष्णः	
कर्ण	१०	भेदे	कर्णयति	कर्णः क त
(आडप- सर्गे)		श्रवणे	आकर्णयति	
कर्त्त	१०	शैथिल्ये	कर्त्तयति	क त
कर्त्र	१०	शैथिल्ये	कर्त्रयति हृदयग्रन्थि	क त
कर्द		कुत्सिते शब्दे	ज्ञानी कर्दति काकः	
कर्च	१		इतिकर्च	
कर्च	१	दृष्टे-गतांच	कर्चति मूर्खः	
कल	१०	संख्याने (त०)	कलते धनं धनी कालः	रु
कल	१०	संख्याने-गतांच	कलयति	क त
कल	१	क्षेपे	कलयति	क
कल	१	अव्यक्ते शब्दे	कलतेस्वरः	रु

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कव	१	वर्ण	कवतेकविःकाव्येन हरि	ऋ ऋ
कश	१	हिंसायां	कवतेचित्रकारः कशति (वा) कशते	ञ
कष	१	हिंसायां	काशः केशाः कशति समूलकाशं कष्टः	
कष	१०	हिंसायां	टा टं	क
कस	१	गतौ	कशयति कष्टः टा टं	ज
कस	२	गतिशासनयोः	कसति विकस्वरः	ल ई ड
काक्ष	१	कांक्षायां	कंस्ते कंसं हरिः	इ
काच	१	दीप्तिबध्ननयोः	कांक्षति कांक्षा	इ ऋ
काल	१०	कालोपदेशे	काञ्चते विभावसुः	क त
काश	१	दीप्तौ	कालयति	ऋ ऋ
काश	४	दीप्तौ	काशते	य उ ऋ ऋ
कास	१	दीप्तौ	काश्यते	ऋ ह
कास	१	शब्दकुत्सायां	प्रकासते	ऋ ऋ
कि	३	ज्ञाने	कासतेरोगी कासः(वा)	लि र
किट	१	गतौ (त०) भय- भीषयोः	काशः चिकेति किटति	लि र

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कित	१	रोगापनयनं	चिकित्सति रोगिणं वै. द्यः चिकित्सा	
कित	३	ज्ञाने-निवासेच	चिकेचि	लि र
किल	६	शान्त्यक्रीडनयोः	किल्यति देहं चन्द्रेण- किल्यत कौलः	श
किल	१०	क्षेपे	केलयति	क
कीट	१०	वन्वने (त) वर्णे	कीट्यति	क
कील	१	वन्वे	कील्यति कृष्णं माता की- लः—कीला	
कु	१	शब्दे	कवने	क
कु	२	शब्दे	कैति	ल टु
कु	६	आतिम्ये	कुवने	श ड शि
कु	९	शब्दे	कुनाति	ग
कुक	१	आदाने	काकने	ल ड
कुल	१	(रोधसंपर्ककौटिल्य- विलेखनेषु)	कोचति	न
कुल	१	तारशब्दे	कोचति कर्षी	
कुल	१	संकोच	संकोचति चन्द्रावृत्तं- संकोच	
कुल	६	संकोच	संकुचति धनी राजभ- यात्	श शि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कुञ्ज	१	कौटिल्याल्पीभाव योः	कुञ्जति खलः—कुञ्जति मनो योगी	उ
कुञ्ज	१	स्तेयकरणे	कोजति नवनीतं कृष्ण.—	उ
कुञ्ज	१	अव्यक्तेशब्दे	कुञ्जति कुञ्जः (वा) नि कुञ्जः	इ
कुट	१	कैवल्ये	कुण्टति	इ
कुट	६	कौटिल्ये	कुटति खलः कोटः	श शि
कुट	१०	प्रतापने छेदनेच	कोटयते	क ड
कुट्ट	१	प्रतापने	कुट्टति कुट्टयति	
कुट्ट	१०	छेदने (त०) त्सायां	कु-कुट्टयति कुट्टनी	क
कुटुम्ब	१०	भृत्यां पूरणे	कुटुम्बयते	क ड
कुठ	१	आलस्ये प्रतिवा तेच	कुण्ठति कुण्ठः कुण्ठ. ठा ठं	इ
कुड	६	चाल्ये (त०) अ- दने	कुडति ज्ञानी	श शि
कुड	१०	रक्षणे अनृतपरि- भाषणेवेष्टनेच.	कुण्डयति	क इ
कुड	१	कैवल्ये	कुण्डति कुण्डं कुण्डं कुण्डी	इ
कुड	१	दाहे	कुडते कुण्डं कुंभकारः कुण्डं	इ इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कुण	१०	आमन्त्रणे	कुणयति	क त
कुण	६	शब्दोपकरणयोः	कुणति काकः	श
कुत्स	१०	अवक्षेपणे	कुत्सयन् कुत्स्य साधुः	क ङ
कुथ	४	पूतीभावे	कुथ्यति मृतकः	य
कुथ	१	हिंसासंक्लेशयोः	कुन्थति रावणं रामः रावणशरेण रामो न कुन्थति	इ
कुद्र	१०	अनृतभाषणे	कुन्द्रयति	क इ
कुन्थ	९	संक्लेशने (त.)	कुन्थाति रोगी	ग
कुथ		श्लिषि		
कुप	१-१०	स्मृतौ (अथवा) स्मृतै	कुपति (वा) कुपयति	कि
कुप	४	रोषे	कुप्यति (अथवा) कु प्यते कोपः	य इ र
कुप	१०	भाषार्थे स्मृतौ	कोपयति	क
कुव	१	छादने	कुन्वति तृणेन गृहं कुंवा	इ
कुव	१०	छादने	कुंवयति	क इ
कुंभ	१०	छादने	कुंभयति	इ क
कुमार	१०	क्रीडायां	कुमारयति गोकुले कृष्णः कुमारः	क त

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
कुमाल	१०	कलौ	कुमालयति	क त
कुर	६	शब्दे	कुरति चुकोर	श
कुर्द	१	क्रीडाया	कुर्दते	ड
कुल	२	बन्धुसहो	कालति कुल	
कुश	४	श्लिषि	कुश्यति	य इ र
कुश	१-१०	द्युतौ	कुशति (वा) कुशयति	क कि इ
कुष	९	निष्कर्षे	टप्णाति स्वर्णं स्वर्ण- कार कोष	ग
कुपुभ	२१	क्षेपे	कुपुभ्यति कन्दुक विलासी	ट
कुस	४	श्लेषणे	कुस्यति कामिनी कान्त	य इ र
कुस	१०	{ भाषार्थे (अथवा) भासने	कुसयति क इ	इ कि
कुह	१०	{ विस्मरणे विस्मा पने विश्व	कुहयते कुहको मायया	क त ड
कु	६	{ शब्दे (तथा) आ त्तस्मिन्	कुवते वाक	श शि ड
कुज	१	{ अव्यक्तेशब्दे (त०) हिकने	कुजति पक्षी	
कू	१०	अप्रसादे परितापे च	कूटयते खल	क ड
कू	१०	दाहे	कूटयति	क त
कूट	१०	टाहमात्रे	कूटयति	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कूड	६	वसने	कूडति वासं वृषः कूडः	श शि
कूण	१०	संकोचे	कूणयते नेत्रं रोगी कूणः	क त ड
कून	१०	संकोचे	कूनयते नेत्रं रोगी कूर्ना	क त ड
कूण				
कूप	१०	दौर्वल्ये	कूपयति	क त
कुर्द	१	क्रीडायां	कुर्दते	ड
कूल	१	आवरणे	कूलति धर्म साधुः कूलं	
कृ	५	हिंसायां	कृणोति (वा) कृणुते	न न
			कृतं युगं	
कृ	<	करणे	करोति (वा) कुरुते	द नं डु
			कटकं कारुकः	
कृञ	१	भजने	कृञ्जयते धान्यं	इ ड
कृड	६	वनत्वे	कृडति	श
कृन	६	छेदने	कृन्तति वृक्षं	श प ई
कृत	७	वेष्टने	कृणत्ति तरुं कंटकेन मा- लाकारः कृत्तिः	ध ई
कृप	१	दयायां	कृपते हरिर्भक्तं	प म ड
कृप	१०	दौर्वल्ये	कृपयति	क त
कृप.कृ प	१	अवकल्कने	कल्पति	

धातु	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कृप-कृ प लृ	१	सामर्थ्ये	कल्पते मोक्षाय	इ ऊ व लृ
कृप-कृ प लृ	१०	अवकलकने	कल्पयति कल्पना	क
कृष	५	कृतिहिंसयोः	कृणोति	
कृषि	५	जिघांसायां	कृदिणोति	न
कृश	४	तनूकरणे	कृश्यति देहं रोगः कृशः शा-शं	या इ र
कृष	१	आकर्षणे	कृपति	औ
कृष-	६	विलेखने	कृपति (वा) कृषते क्षेत्रं कृषकः	श ज औ
कृ	६	विक्षेपे	किरति कुमुमं वायुः सं- कीर्णः णा-णं	श
कृ	९	हिंसायां	कृणाति कीर्णः णा णं	ग ज गि
कृत	१०	संशब्दने	कीर्तयति परगुणं साधुः कीर्तिः	क
केत	१०	आमन्त्रणे श्राव- णचे	केतयति श्राद्धाय मुनिः गृही-केतने	क त
केप	१	गत्यां कंपनेच	केपते	कृ ड
केल	१	गतौ	केलति केलिः	ऊ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
केला	११	विलासे	केलायति विलासी कामात्	ट
केव	१	तेवने	केवते	कृ ङ
कै	१	शब्दे	कायति	
कथ	१	हिंसायां	कथति	
कथ	१०	प्रतिहर्षे	कथयति	क म
कथ	१०	हिंसायां	काथयति	क म
कद	१	वैकुण्ठे	कन्दते	ङ इ
कद	१	आन्धानरोदनयोः	कन्दति अक्रन्दीद्श- ग्रीवः	इ
क्रन्द	१०	आप्रत्यये आक्रं- दमातत्यरोदने	आक्रन्दयति शोकार्तः	क
क्रम	१	पादविक्षेपे	क्रमति	उ
क्रम	४	पादविक्षेपे	क्राम्यति (वा) क्राम्यते वामनोमहीं	य उ
क्रस	१	शब्दे	क्रसति	
क्री	९	द्रव्यविनिमये	क्रीणाति (वा) क्रीणीति तिलं यवैर्जनः क्रीतः ता- तं-कथः-कथविक्रयो	ग ञ ङु
क्रीड	१	विहारे	क्रीडति	कृ
वनूय	१	शब्दे उन्देच	वनूयते नरः	ङ इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कुञ्ज	१	कौटिल्याल्पो भा- वयोः	कुञ्जति खलः कुञ्जति म- नो योगी	.
कुड	६	निमज्जने	कुडते	ह श
कुध	४	रोषे	कुध्यति क्रोधः कुद्धः धा धं	य ल औ
कुन्य	९	क्लिषि-क्लिषि	कुन्नाति	ग
कुश	१	आह्वाने	कोशति कोष्टा	ज औ
कु	६	गतौ	कुवते पान्थः	ह श
कुय	१	शब्दे (अथवा) दुर्गन्धार्दत्वयोः	कुंयते वायुना वृक्षः	इ ह
क्थ	१०	हिंसायां	क्थयति	क
क्थ	१	हिंसायां	क्थति	
क्मर	१	हृष्टने	क्मरति खलः	
क्श	१	वृत्तिभासनयोः	क्शयति	उ म
क्श	१०	भासने	क्शति (वा) क्शयति	इ कि
क्	९	शब्दे	क्णाति (वा) क्णोति	अ ग
क्थ	१०	हिंसायां	क्थयति	क म
क्थ	१	हिंसायां	क्थति	म
कुद	१	वैकुण्ठे	कुन्दते	अि उ इ
कुद	१	आव्हानरोदनयोः	कुन्दति	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क्लिन्	४	आर्द्राभावे	क्लिचति पयसा वटः-क्लि- वः-ना-नं क्लेदः	य ऊ इ र
क्लिन्	१	परिवेदने	क्लिन्दति (वा) क्लिन्दते कामशोकेन रतिः	इ व जि
क्लृप क्लिव क्लृम	१०	व्यक्तायांवाचि	क्लृपयति अक्लृपत् (इति क्लिव)	क
क्लृम	४	ग्यानौ	क्लृम्यति पान्थः क्लान्तः ता-तं-क्लृन्तिः	य उ भ जि इ र
क्लृव	१	भये	क्लृवते	प म ङ
क्लीव(वा) क्लीव	१	अधाष्ट्ये	शोकेन क्लीवते नरः क्लीवः क्लीवं	क्व ङ
क्लिश	४	उपतापे	क्लिश्यते पापी	य ङ उ
क्लिश	९	विबाधने	क्लिश्नाति धनिकं चोरः क्लेशः	ग ङ
क्लृ	६	गनौ	क्लृवते पान्थः	ङ श
क्लृश	१	बाधने (त.) ववे- अव्यक्तायांवाचि	क्लृशते पापिनं रोगः क्लृशः	
क्लृण	१	शब्दे	क्लृणति क्लृणः क्लृणः	
क्लृथ	१	निष्पाके	क्लृथति वैद्यः क्लृथं	ए ज
क्लृज	१	गता	क्लृजति	ङ
क्लृज	१०	निके क्लृज्ज्वावन	क्लृजयति	क इ

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क्षज	१	क्षाने गतो	क्षजते	इ प म ङ
क्षज	१	क्षानगत्योऽ	क्षजते	प म ङ
क्षण	८	हिंसायां	क्षणोति (वा) क्षणुते वि प्रं सलः क्षतं क्षतर्ज	द व उ
क्षप	१०	कांतो (अथवा) शाक्तौ (वा) क्षांतौ	क्षपयति चन्द्रः	क इ
क्षप	१०.	प्रेरणे	क्षपयति	क इ
क्षम	१	सहने	क्षमतेऽपरार्धं क्षमा	ङ जि ष ऊ
क्षम	४	सहने	क्षाम्यति पुत्रापरार्धं ता-क्षमा	य उ इ र भ
क्षर	१	संचलेने	क्षरति नदी क्षारः	ज
क्षल	१	चलेने	क्षलति	ज
क्षल	१०	शौचे	क्षालयति गङ्गाजलेन गात्र	क
क्षि	१	क्षये (तथा) ऐ श्वर्ये	क्षयति (वा) क्षयते	ज
क्षि	६	हिंसायां	क्षिणोति	न
क्षि	६	निवासे (त०) गतौ	क्षियति	श
क्षि	९	हिंसायां	क्षिणाति	ग ष
क्षिण	८	हिंसायां	क्षिणोति (वा) क्षिणुते	द व उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क्षिद्	४	मान्त्रेण (तथा) स्नेहे	क्षिद्यति गां बन्धाद्दोषः	य जि आ
क्षिद्(वा)	१	मोक्षे स्नेहे	क्षेदते	ऋ आ ङ जि
क्षिद्				
क्षिद्(वा)	१	अव्यक्ते शब्दे	क्षेदति क्षेदः	जा जि
क्षिद्				
क्षिप्	४	प्रेरणे	क्षिप्यति वागनं वीरः	य औ
क्षिप्			क्षिप्रं	
क्षिप	६	प्रेरणे	क्षिपति (त०) क्षिपते	श ञ औ
क्षिप			क्षिप्तः ता-तं	
क्षिप			(इति क्षिप)	
क्षिप	१	निरसने	क्षेवति	उ
क्षिप	४	निगमने	क्षीव्यति	य उ
क्षी	१	हिंसायां	क्षयति	
क्षीन	१	अव्यक्ते शब्दे (तः)	क्षीनति पक्षी	
क्षी		क्षिप्ते		
क्षीप	१	निरसने	क्षीवति	
क्षीव	१	मदे	क्षीयते धनं क्षीयः वा-प	ऋ उ
क्षु	२	जठरे	क्षीति	ल ऋ
क्षुद्	७	संयोगे	क्षुण्णति (त०) क्षुण्णे त-	य ञ ङ औ
			रिद्रां जनः-क्षोदः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क्षुध	४	क्षुभुक्षायो	क्षुध्यति भिक्षु क्षुध् क्षुधा	य लृ औ
क्षुभ	१	मचलने	क्षुभित-ता तं	
क्षुभ	४	मचलने	क्षोभते क्षोभः	ड
क्षुभ	२	संचलने	क्षुभ्यति युद्धेन शूर	य
क्षुर	६	छेदने (त०) वि- लेखे खननेच	क्षोभ क्षुब्ध धा-धं क्षुभ्नाति क्षुरति क्षुरः	ग श
क्षेड	१०	भक्षणे	क्षेडयति	क त
क्षेव	१	निरसने	क्षेवति	उ
क्षे	१	क्षये	क्षायति	
क्षोट	१०	क्षेपे	क्षोटयति (वा) क्षोटयते	कि
क्षुण्	२	अपनयने	क्षणुते दोष	ल ड
क्षुण्	२	तेजने	क्षणौति शास्त्रं	ल
क्ष्माय	१	विधूनने	क्ष्मायने वायुर्वृक्षं	इ ड
क्ष्मील	१	निमेषणे	क्ष्मीलति	
क्ष्विड	१	स्नेहमोक्षयोः	क्ष्वेडति	
क्ष्वेल	१	स्नेहमोक्षयोः चल- नेच	क्ष्वेलति	ऊ
खक्व	१	हासे	खक्वति	
खच	१०	बन्धने	खचयति	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
खच	६	भूतिपूत्योरुत्पत्तौ	खचति	श
खच	९	भूतप्रादुर्भावे	खच्चाति	ग
खञ	१	मन्यने	खजति जलं वराहः	
खज	१	गतिवैकल्ये	खज्जति खज्ज खज्जनः	इ
खट	१	कांक्ष्ये	खटति धनं लुब्धः खट्वा	
खट्ट	१०	वृत्तौ	खट्टयति	क
खड	१	भेदे	खण्डति	इ
खड	१	मन्ये	खण्डं खण्डं खण्डते घटं	इ इ
			कृष्णः	
खड	१०	भेदे	खण्डयति खण्डः (वा)	क इ
			खण्डं	
खड	१०	भेदे	खाडयति	क
खद	१	हिंसायां (त०)	खदति रिपुं	
		स्थैर्ये		
खद	१०	संवरणे	खादयति	क
खन	१	अवद्वारेण	तृपितो जान्हवीतीरे कूपं	उ
			खनति दुर्मतिः (वा) ख-	
			नते खनिः खानी (वा)	
			खातिः खनित्रं	
खम्व	१	गतौ	खम्वति	
खर्व	१	गत्यां	खर्वति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
खर्ज	१	मार्जने (त०) व्य	खर्जति गात्रं . खर्जूरः	
खाया				
खर्द	१	दर्शने	खर्दति मूलकं बालः	
खर्व	१	गतौ	खर्वति खर्वं वा-वं	
खर्व	१	दर्पे	खर्वति मूर्खः खर्वः वा-वं	
खल	१	चलने संचये च	खलति खलः	
खव	२	भूतप्रादुर्भावे	खौनतिजनः	ग
खप	१	वधे	खपति	
खाद	१	भक्षणे	खादति	क
खिद	४	दैन्ये	खिद्यते वेदः	य ड
खिद	६	परिधाते	खिदति साधुं दमी खेदः	श प औ
खिद	७	दैन्ये	खित्ते भिक्षुः	ध ड औ
खु	१	शब्दे	खवते	ह
खुज	१	स्तेयकरणे	खोजति नवनीतं कृष्णः	उ
खुड	१	भेदे	खोडति	
खुड	१	भेदे	खुण्डति	इ
खुड	६	संवरणे	खुडति धनं धनिकः	श
खुड	१	खल्ले	खुण्डते	इ ड
खुड	१०	खण्डने	खुण्डति (वा) खुण्डयति	कि इ
खुर-क्षुर	६	छेदने	खुराति धान्यं कृपकः खुरः क्षुरः	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुयन्ध.
खुर्द, खुर्दी	१	क्रीडायां	खुर्दते	ड
खेट	१०	भक्षणे	खेटयति मांसं अंखेटः खेटः टा-टं.	क त
खेट-खि ट	१	उत्त्रासने	खेटति केशी गोष्ठं आखे- टकः खेट	.
खेड	१०	भक्षणे	खेडयति	क
खेल	१	गतौ	खेलति - खेला	उ
खेव	१	सेवने	खेवते	क ड
खै	१	खेदने	खायति धननाशेन लोकः	
खै	१	स्थैर्ये . खननहिं-	खायति	
खाट	१	सयोः गत्यावाते	खोटति	क
खोट	१०	क्षेपे भक्षणेच	खोटयति शरं शूरः	क त
खोड	१	गति प्रतिघाते	खोडति खोडः—डा-डं	क
खोड	१०	क्षेपे	खोडयति	क त
खोर	१	गतिप्रतिघाते	खोरति	क
खोल	१	गतिप्रतिघाते	खोलति	क
ख्या	२	प्रकयने	ख्याति गुणेन लोकः ख्यातिः	ल
गग्व	१	हसने	गग्वति	
गज	१	शब्दे-मदेच	गजति गजः	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गज	१	स्वने	गज्जति	उ
गड	१	मेचने	(डलयोरैक्यात्) गलति जलं गाडः गाल गडक.	म
गड	१	वदनैकदेशे	गण्डति गण्डः	इ
गण	१०	मंख्याने	गणयति गणको ग्रहणम्	क त
गद	१	व्यक्तायांवाचि	गदति	
गद	१०	मैघशब्दे	गदयति घनः	क त
गद्गद	११	वाक्स्खलने	गद्गदयति	ट
गन्ध	१०	अर्दने	गन्धयते लुब्धो वदान्यं	क रु
गम्ब	१	गतौ	गम्बति	
गम	१	गतौ	गच्छति	ल औ
गर्घ	१	गत्या	गर्घति गर्घ	
गज्ज	१	शब्दे	गज्जति	
गज्ज	१०	शब्दे अभिका-	गज्जयति	क
गर्ह	१	क्षायां	गर्हति सिंहः	
गर्ह	१०	शब्दे अभिकां-	गर्हयति सिंहः	क
गर्घ	१०	अभिकांक्षायां	गर्घयति भक्षयं भिक्षुः	क
गर्ब	१	गतौ	गर्बति	
गर्व	१	दर्पे	गर्वति मूर्खः गर्वः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गर्व	१०	माने	धनैर्गर्वयते मूर्खः गर्वः	क त ड
गर्ह	१०	विनिन्दने	गर्हयति	क
गर्ह	१	विनिन्दने	गर्हति	
गर्ह	१	कुत्सने	गर्हते पापं गर्हा	ड
गल	१०	त्नावे	गलयते	क ड
गल	१	अदने (त्नावे)	गलति मूलकं गलति जलं	
ग्राम	१०	आमन्त्रणे	ग्रामयति	
गर्ह	१	कुत्सने	गर्हते गर्हः	क
गवेष	१०	अन्वेषणे	गवेषयति हरिणं नरः ग- वेषणा	ड क त
गह	१०	गहने	गहयति गहनः ना-नं-ग- हनं	
गा	३	स्तुतौ जन्मनि	जिगाति देवान् जिगाति मुम्रयुः	लि र
गा	१	गतौ	गाते	ड
गाध	१	प्रतिष्ठालिप्सयोः ग्रन्थे	गाधते धनं गाधिः गाधः	ऋ ड
गाह	१	विलोडने	गाहते जलं वराहः	ड ड
गु	२	शब्दे	गवते	ड
गु	६	विष्टोत्सर्गे	गुवति	श शि औ
गुज	१	कूजने	गोजति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गुज	६	शब्दे	गुजति	श शी
गुज	१	अव्यक्ते शब्दे	गुञ्जति पक्षी	इ
गुठ	१०	वेष्टे	गुण्ठयते	क इ
गुड	६	रक्षायां	गुडति	गुडः
गुड	१०	वेष्टने (त०)	गुण्डयति	क इ
		रक्षणेचूर्णीकरणेच		
गुण	१०	आमन्त्रणे	गुणयति	गुणः क त
गुद	१	क्रीडायां	गोदते शिशुः	ह
गुध	१	क्रीडे	गोधते	ह
गुध	४	परिवेष्टने	गुध्यति	य
गुध	९	रोषे	गुह्नाति	ग
गुप	१	गोपने	गोपते पापं जुगुप्सा	ह
गुप	४	व्याकुलत्वे	गुप्यति लोकं कोपः	य इ रू
गुप	१	रक्षणे	गोपायति भुवं राजा	ऊ
गुप	१०	भाषार्थे (अथवा)	गोपयति	क
		मासि		
गुफ	६	ग्रन्थे	गुफति माल्यं मालाकारः	श
गुंफ	६	ग्रंथे	गुंफति माल्यं मालाकारः	श
गुर	१	उद्यमे	गोरति माता बद्धुं हरिं	
गुर	६	उद्यमे	गुरते धनाय वैश्यः	श शि ङ ई
गुह	१	निकेतने-क्रीडायां	गुहते	ह

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गेष	१	अन्वेष्टायां	गेषते मुक्तिं मुनिः	ऋ ङ
गें	१	शब्दे	गायति	
गोष्ट	१	संचाते	गोष्टेते धान्यं	ङ
गोम	१०	उपलेपने	गोमयति गोमयेन भूमिं	क त
ग्रथ	१	कोटिल्ये-संदर्भे	ग्रथते	ङ
ग्रथ	१	कोटिल्ये	ग्रंथते चित्तं खलः	इ ङ
ग्रन्थ	९	संदर्भे	ग्रथ्नाति ग्रन्थं कविः	ग
ग्रन्थ	१	संदर्भे	ग्रंथति	
ग्रन्थ	१०	संदर्भे-बन्धनेच	ग्रंथयति	क
ग्रस	१	ग्रहणग्रासयोः	ग्रसति	
ग्रस	१	अदने	ग्रसते ग्रासं भिक्षुः	ङ उ
ग्रस	१०	अदने ग्रासे	ग्रासयतिचन्द्र राहुः	क
ग्रह	१-१०	आदाने	ग्रहति (वा) ग्राहयति	कि उ
ग्रह	९	उपादाने	गृह्णाति (वा) गृहीते	ग उ
			धर्म धार्मिकः गृहीत.	
			ता ता तं.	
गुर्व	१	उद्यमने	गुर्वति फलार्थी फलाय	इ
गुच	१	चौर्ये	गुचति नवनीतं कृष्ण.	उ इ
ग्लस	१	अदने	ग्लसते	ङ उ
ग्लह	१-१०	आदाने	ग्लहति (वा) ग्लहयति	कि उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शु	१	शब्दे	रवते	ह
घुट	१	परिवर्त्तने	गोटते प्रवासी	ह
घुट	६	प्रतिपाते	घुटति गज घोटक	श शि
घुट	६	व्यापाते रक्षे	घुटति	श शि
घण	१	भ्रमणे	गणते तथि मुनि	ह
घृण	६	भ्रमणे	घृणाते भिक्षायै भिक्षु	श
			घृण	
घुण	१	ग्रहणे	घृणते	ह इ
घुर	६	भीमात्तिशब्दे	घुरति भयेन शिशु घोर	श
			रा-र-घोर	
घूर घूर	४	हिमाज्ञानयो	घूर्यते	य ह इ
घुप	१	वधे	घोपति	इ र
घुप	१०	वधे	घोपयति	क इ र
घुप	१	शब्दे	माधुर्योपनि गोविन्द घोष	इ र
घुप	१०	शब्दे	घोपयति नीति जनेषु	क इ र
			राजा घोषणा	
घुप	१	घृशे कान्तिकर-	घुपते	इ ह
		णेन		
गुर्णे	१	भ्रमणे	निद्रया गृणानि क्षीव	
गृर्णे	६	भ्रमणे	गृर्णति भिक्षायै भिक्षु	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
घृ	३	क्षरणदीप्त्योः	जिघर्त्ति जलं जिघर्त्ति घृतं वरति	ल इ रू
घृ	१०	क्षरणदीप्त्योः प्र- सह्यकरणेच	वरयति	क
घृ	१	सेचने	वरति दग्धं पयसा	
घृण	१	ग्रहणे	घृणते	इ ङ
घृण	८	दीप्तौ	घृणोति (वा) घृणुते	द व ट
घृष	१	संचर्षे	वर्षति काष्ठं मूर्खः	ट
घोर	१	गतिचातुर्ये	घोरत्वश्वः	
घ्रा	१	गन्धोपादाने	जिघ्रति पुष्पं भ्रमरः	
ङु	१	ध्वनौ	ङ्वते	ङ
चक	१	दीप्तौ प्रतिघात- तृप्त्योः	चकति (वा) चकते	व म
चक	१	दीप्तौ	चकते विद्यया विप्रः चाकः	ङ
चक्र	१०	न्यसने	चक्रयति	क
चकास	२	दीप्तौ	चकास्ति.	ल ऋ ॠ
चक्ष	२	न्यक्तायांवाचि	आचक्षे धर्मगुरुः	ल ङ
चय	५	वातने	चक्षोति	न
चञ्च	१	गत्यां	चञ्चति	ल
चट	१०	भेदे (त०) ववे	चाटयति	क
चट	१	भेदे	चटति	

धातु	गण	अर्थः	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चड	१	कोपे	चण्डते चण्डे चण्डी	ड इ
चल	१०	कोपे	चण्डयते	क इ ङ
चण	१	शब्दे	चणति	
चण	१	हिंसागत्योः	चणति	भि
चण	१	दाने	चणति चणकः	म
चत	१	याचने	चतते (वा) चतति चा- तकः	न उ
चद	१	याचने	चदते (वा) चदति	ए न
चद	१	आलहादने दी- तौ च	चन्दति—चन्द्रः—चचन्द्र— चन्द्रोज्ज्वलचारुचित्तौ वि- दर्भराजो मिलने मुरारेः	इ
चन	१	हिंसायां-श्रद्धायांच	चनति	म
चन	१	शब्दे	चनति	
चप	१	मान्त्वने	चपति शिष्यं	
चप	१०	कल्के	चपयति	क म
चप	१०	गत्यां	चपति (वा) चपयति	इ कि
चम	१	अदने	चमति (वा) आचमति	उ
चम	१	अदने	आचामयति नलं पथिकं माधुः	उ
चम	५	यक्षे	चमनोति	न उ र
चम्ब	१	गत्यां	चम्बति	

धातुः	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चय	१	गतौ	चयते	ङ
चर	१	गतौ (त०) अ- दने	चरति चारः	
चर	१०	असंशये	विचारयति धर्मं पंडितः विचारणा	क
चर्च	१	गत्यां	चर्चति	
चर्च	१-१०	परिभाषणतर्जन- योः	चर्चते (वा) चर्चयते	ङ कि
चर्च्च	६	परिभाषणतर्ज- नयोः	चर्च्चति	श
चर्च्च	१०	अध्ययने	चर्च्चयते वेदं शिशुः च- र्च्चा.	क ङ
चर्व	१	गतौ	चर्वति	
चर्व	१	अदने	चर्वति (वा) चर्वयति— चर्वणं	कि
चल	१	कंपने	चलयति (वा) चालयति तरुं कपिः	स
चल	६	विलसने	चलति भर्त्रा नारी	श
चल	१०	भृत्यां	चलयति	क
चष	१	वधे	चषति	
चष	१	भक्षणे	चषति (वा) चषते चषकं	ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चह	१	परिकल्कने	चहति तीर्थे लोकः	
चह	१०	परिकल्कने	चहयति कपटी	क त
चाय	१	पूजानिशामनयोः	चाययति (वा) चायते धर्म	कृ अ
चि	१	हिंसायां	चयति	र इ र्ण
चि	१	चयने	चयति (वा) चयते	अ
चि	६	चयने	चिनोति (वा) चिनुते धान्यं कृपकः	न अ
चि	१०	चयने	चययति	क मि
चिक्क	१	आर्त्तौ	चिक्कयति	क
चिट	१	प्रेष्ये	चेटति भृत्यं चेटः चेटी	
चिट	१०	प्रेष्ये	चेटयति	क
चित	१	संज्ञाने	चेतति प्रलये हरिश्चेतति चिचेत रामस्तत्क्लेशं	इ
चित	१०	स्पृत्यां	चिन्तयति चिन्ता	क इ
चित	१०	संवेदने	चेतयते	क ड
चित्र	१०	चित्राकरणे	चित्रयति पटं चित्रकारः चित्रः त्रा-त्रं-चित्रं	क त
चिल	६	वसने	चिलति चैलेन मुखं बधुः	श
चिल्ल	१	शौथिल्ये (त०) हावकृतौ	चिल्लति साधुर्दयया चिल्लः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चीक	१-१०	आमर्षणे मर्षणे	चीकति (वा) चीकयति	कि
चीव	१	आदान संवरणयोः	चीवति (वा) चीवते	ऋ अ
चीभ	१	कथने	चीभते	ऋ ङ
चीय	१	संवृत्यादानयोः	चीयति (वा) चीयते	ऋ अ
चीव	१०	भाषार्थे-दीप्तौ	चीवयति	क
चीव	१	ग्रहसंवृत्योः	चीवते	ऋ ङ
चीव	१	आदान संवरणयोः	चीवति (वा) चीवते	ऋ ङ
चुक्	१०	व्यसने	चुक्कयति	क
चुच्य	१	अभिषवे	चुच्यति	ई
चुट	६	छेदे	चुटति	श शि
चुट	१०	छेदने-भेदनेच	चाटयति धान्यं	क
चुट	१०	छेदने	चुटयति केशं शिशुः	क इ
चुट	१	अल्पीभावे	चोटति वेदः कलौ	
चुट	१	अल्पीभावे	चुण्टति	इ
चुट्ट	१०	अल्पीभावे (अ-थवा) संहतौ	चुट्टयति शोकेन देहः	क
चुड	१	अल्पीभावे	चुण्डति	इ
चुड	१०	छेदने	चुण्डयति	क इ
चुड	६	संवरणे	चुडति	श
चुड	१	हावकरणे	चुडुति नटी	
चुण	६	छेदे	चुणति शाकं भिक्षुः	श शि

धानु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चुत	१	आसेचने	चोतति	इ र
चुद	१	निशाने	चुन्दति (वा) चुन्दते	उ इ र व इ
चुद	१०	संचोदने	चोदयति चोदना	क
चुप	१	मंदायां गतो	चोपतिखलः	
चुव		वक्रसंयोगे	चुंवति (वा) चुंवयति	इ कि
चुर	१-१०	स्तेये	चोरति (वा) चोरयति	कि
			चोरः	
चुर	४	दाहे	चूर्यते	य ड इ
चुरण	११	चौर्ये	चुरण्यति	ट
चुल	१०	निमज्जने समुच्छ्रा- येच	चोलयति गंगायां मुनिः चोलः चोला	क
चुछ	१	हावकरणे	चुछति प्रियेण नारी	
			चुछी	
चुलुम्प	१	लोपे	चुलुम्पति	
चूण	१०	संकोचे	चूणयति	चूणः क
चूर्ण	१०	पेषणे-संकोचेच	चूर्णयति	क
चूप	१	पाने	चूपति स्नानंशिशुः	
चृत	६	हिंसायां (त०) ग्रन्थे	चृतति चर्त	श इ
चृत	१-१०	संदीपने	चर्तति (वा) चर्तयति	कि
चूप	१०	संदीपने	चर्पयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चेष्ट	१	चेष्टायां	चेष्टते पठितुं	चेष्टा ड
चेल, चेल्ल	१	गतौ	चेलति	चेलं ऊ
च्यु	१	गतौ	च्यवते	ड
च्यु	१०	हाससहनयोः	च्यावयति	क
च्युत	१	आसेचने	च्योतति वङ्गो हविः, अ- च्युतः, च्योतः	इ र्
च्युस	१०	हानौ-सहनेच	च्योसयति	
छद	१	अपवारणे	छदति	
छद	१०	अपवारणे	छादयति	क
छद	१०	संवृत्तौ	छदयति	क त
छद	१०	उर्जने	छदयति पुत्रं घृतेन पिता	क इ र् म
छद	१०	संवरणे	छन्दति (वा) छन्दयति	कि इ
छप	१०	गतौ	छपयति	क इ
छम	१	अदने	छमति	उ
छर्द	१०	वमने	छर्दयत्यन्नं गेगी	क
छिद	७	द्वैधीकरणे	छिनत्ति (वा) छिन्ते तृणं- शिष्यः छेदः	धञ इ र औ
छिद्र	११	विभेदे	छिद्रयति कलशं जनः छिद्रं	क न
छुष्ट	९	छेदे-संहतौ	छुटति	श शि
छुष्ट	१०	छेदने-संहतौ	छोटयति	क
छुड	९	संवरणे	छुडति	श

धातु.	गण.	अर्थ.	वदाहरण.	अनुबन्ध
लुप	६	स्पर्शे	लुपति	श औ
लुर	६	छेदे (त०) लोपे	लुरति	श शि
लृद	१	संदीपने	लृदति	ई
लृद	१०	संदीपने	लृदयति तेजो ऽर्जुनस्य	क कि ई
लृद	७	देवनद्यातिवमनेषु	हरिः लृणत्ति (वा) लृन्ते	ध व उ इ र्
लृप	१०	संदीपने	लृपयति	क
लृद	१०	द्वैधाकरणे	लृदयति तरुं तक्षां	क त
लो	४	छेदने	लयति धान्यं कृषाणः	य
ल्यु	४	गतौ	ल्युयते	ङ
लक्ष	१	दानगत्योः	लक्षते	इ ङ म
लक्ष	२	भक्षहसनयोः	लक्षिति मूलकं	ल क्ष लु ध
लज	१	युद्धे	लजति	
लज	१	युद्धे	लजति	इ
लट	१	संहतौ	लटति जटा	
लन	३	जनने	लजन्ति बीजं सत्क्षेत्रे— जन—जन्मा	लि म र
लन	४	प्रादुर्भावे	बीजादंकुरो जायते	य म इ ङ
लन	१०	जनने	जनयति विश्वं विष्णुः	
लप	१	मानसे	लपति—जपः—जापः—	
लप	१०	संवाते	जापयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
जस	४	मोक्षणे	जस्यति वत्सं गोपः	उ इ र य
जस	१०	हिंसायां (त०)	जासयति रिपुं राजा	क
जस	१०	अनादरे		
जस	१०	रक्षणे	जंसयाति	क इ
जस्	१०	ताडने	जासयाति (वा) जसति	उ कि
जागृ	२	निद्राक्षये	जागर्ति मुनिः	ल लु
जि	१	जये अभिभवेच	जयति कृष्णः जयः	
जिम	१	अदने	जेमति	उ
जिरि	५	हिंसायां	जिरिणोति	न र
जिव	१	प्रीणने	जिवति	इ
जिवि	५	जिघांसायां	जिविनोति	न
जिष	१	सेचने	जेपति	उ
जीव	१	प्राणधारणे	जीवति हरिकथया साधुः	ऊ
			जीवः	
ज्व	१	गतौ	जवते जवः	ढ
ज्व	१	अंहासि	जवति	र
जुग	१	त्यागे	जुंगति	इ
जुड	६	बन्धे	जुडति जनः सूत्रेण व.	श शि
			स्त्रं, जोडः, जोडनं	
जुड	६	गतौ	जुडति जुजोड	श
जुड	१०	धिरणे	जुण्डयति भृत्यं राजा	क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवन्ध.
जुत	१	भासने	जोतते विद्यया नरः	ऋ ङ
जुन	६	गतौ	जुनति	श
जुल	१०	पिषि	जोलयति	कं
जुष	१-१०	परितर्कणे (त०)	जोषति (वा) जोषयति	किं
जुष	६	तृप्तौ	धूर्त्तचतुरः	श ङ ई नि
जूर	४	प्रीतिसेवनयोः	जुपते हरिभक्तः	य ई
जू	४	जीर्ण हिंसावयो-	जूर्यते वृद्धः	
जू		हान्योः		
जूर्व	१	वधे	जूर्वति	ई
जूष	१	हिंसायां	जूषति (वा) जूषते	व
जू	१	न्यक्कारे	जरति	
जूभ	१	गात्रविनामे	जर्भते	ङ ई
जूभ	१	गात्रविनामे	जूंभते (त०) जूंभति—	इ ङ
			जूंभः—जूंभ जूंभं जूंभणं	
जू	४	वयोहानौ	जीर्यति—जीर्णः—णा—णं	य प म इ र्
जू	९	वयोहानौ	जूणाति जरया जनः जी-	ग गि
			र्णः—णा—णं	
जू	१-१०	वयोहानौ	जरति (वा) जरयति	क कि
जैष	१	गतौ	जेषते	ऋ ङ
जैह	१	यत्ने	जैहते	ऋ ङ
जै	१	क्षये	जायति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
जि	१	अभिभवे	जयति धर्म कलिः	
जी	९	ज्याने	जिणाति	ग गि
ज्ञा	९	अवबोधने	जानाति	ग
ज्ञा	१०	मारणतोषणनिशा- मनेषु (त०) स्तु- तौनिशाने च	ज्ञपयति रिपुं राजा ज- पयति मित्रं नरः ज्ञपय- ति पांडित्यं सभायां	क म
ज्ञा	१०	नियोजने	ज्ञापयति भृत्यं राजा	क
ज्ञप	१०	मारणतोषण नि- शामनेषु स्तुतौ च	ज्ञपयति	क म
ज्या	९	जराया	जिनाति	ग गि
ज्यु	१	गत्या	ज्यवते	ङ
ज्युत	१	भासने	ज्योतति	इ र्
ज्युत	१	भासने	ज्योत्ते	ऊ ङ
ज्यो	१	नियमवृत्तादेशोपा- नीतिषु	ज्यवते	ह
ज्वर	१	रोगे	ज्वरत्यजीर्णेन ज्वर.	म
ज्वल	१	दीप्तौ	ज्वलति वह्निः ज्वाला-	ज
ज्वल	१	दीप्तौ	ज्वलति (वा) ज्वाल- यति चित्तं क्रोधः प्रज्वा- लयति	
जट	१	सधाते	जटति केशः जटा	—

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अम	१	अदने	अमति	उ
अर्च	६	परिभाषणतर्जनयोः	अर्चति	श
अर्छे	६	परिभाषणतर्जनयोः	अर्छति	श
अर्झ	१	परिभाषणतर्जनयोः	अर्झति	श
अर्झ	६	परिभाषणतर्जनयोः	अर्झति	—
अप	१	अहे	पिधाने—अपति (वा)	अ
अप	१	हिंसायां	अपति	—
अप	१	गतां	अवते	उ
अप	१	हिंसायां	अपति	—
अप	४	वयोहानौ	शीर्यति—शीर्णः—णा—णं	य प
टक	१०	बन्धे	टण्कयति—टण्कः—विटण्कः	क इ
टल	१	विक्रमे	टलति	ज
टिक	१	गत्यां	टिकते	क उ
टिप	१०	क्षेपे	टिपयति	क
टीक	१	गत्यां	टीकते	क उ
टीक	१	गत्यां	टीकते	क उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृल	१	विकृवे	वृलति	ज
डप	१०	महतौ	डपयते	क ड
डप	१०	मंहतौ	डंपयते	क इ ड
डब	१०	क्षेपे	डंबयति	क इ
डिप	४	क्षेपे	डिप्यति	य इ
डिप	६	क्षेपे	डिपति शरं	श शि
डिप	१०	क्षेपे	डेपयाति	क
डिप	१०	महतौ	डेपयते	क ड
डिप	१०	मंहतौ	डिंपयते	क इ ड
डिब	१०	क्षेपे	डिबयति	क इ
डिभ	१०	संघाते	डिभयते	क इ ड
डो	४	गतौ	डोयते पक्षी	य ड
डो	१	विहायसागतौ	डयते गगने हंस , प्रडी- नं, संडीनं, उडुनिं	
डुब	१०	अदने	डुंबयति	क इ
डुभ	१०	संघाते	डुंभयते	क इ ड
णक्ष	१	गतौ	नक्षति	
णख	१	गतौ	नखति	
णव	१	गतौ	नवति प्रयागात् कार्शो	इ
णट(इ ति)नट	१	नृत्ये	नाटयति	म

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
णट	१	नृत्ये (त.) हिं- नायां	णटति	
णद	१	स्त्रिष्टौक्तौ	नदति	नद
णद	१०	भाषार्थे (वा०) भामार्थे	नादयति	क
णभ	९	हिंसायां	नभ्राति	ग
णभ	१	हिंसायां	नभते	नाभिः लृ रु
णभ	४	हिंसायां	नभ्यति	य
णम(वा)	१	प्रवृहशब्दे	नमति, प्रणमति	गुरुं शि-
नम			प्यः, प्रणामः	
णय	१	रक्षणे (त०) गतौ	नयते	ह
णद्	१	"	(इति नद्ः)	
णल	१	बन्धे-गन्धे च	नलति	ज
णश	४	अदर्शने	नश्यति	कामः नाशः य लृ ऊ
णम	१	कौटिल्ये	नमते	मूलः
णह	४	बन्धने	नध्यति (वा) नध्यते	य ज ओ
णाथ	१	"	(इति नाथ)	
णाध	१	क्र	(इति नाध)	क
णाम	१	शब्दे	नामते	नामा क्र ड
णिज	३	शाने	नेनेक्ति (वा) नेनिक्ते ज-	नि. ड. ज. ओ
			लेन वस्त्रं निर्णेजनं	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
णिज	२	श्रुद्धौ	प्रणिक्ते जलेन गावं	ल इ ऊ
णिद	१	कुत्मायां (त.)	नेदति (वा) नेदते पापि-	ऊ ङ
		मन्निधौ	नं साधुः निद्यते	
णिद	१	कुत्सने	निन्दति इति निद	इ
णिल	६	गहने	निलति	श
णिव	१	मेके	निवति	इ
णिश	५	ममाधौ	नेशतिमुनि. निशा	
णिप	१	मेके	नेषति	ल
णिस	२	चुंबने	निम्ते हरिमुखं नन्दः	ल ङ ङं
णी	१	प्रापणे	कृष्णं मथुरां नयते (वा)	अ
			नयत्यक्रूरः नयः नायः	
			नीति नायकः	
णील	१		(इतिनील)	
णिवि	१		(इतिनीव)	
णु	२	स्तुतौ	नौति	ल
णुद	६	प्रेरणे	नुदति (वा) नुदते पठ-	श अ औ
			नाय पुत्रं पिता	
णू (अ.)	६	स्तवने	नुवति हरि मुनिः	श शि
णु-				
णेद-इ	१	कुत्सायां (त.)	नेदति (वा) नेदते	ऊ अ
ति णिद		सान्निधौ		

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
णेष	१	गतौ	नेपते	ऋ ऌ
तक	१	सहनहामयोः	तकति	
तक	१	गतौ	तकते	ऌ इ
तक	१	कृच्छ्रजीवने	तंकति	इ
तक्ष	१	तनूकरणे त्वचनेच	तक्षति वृक्षं तक्षा	ऌ
तग	१	गतिकंपस्वलनेषु	तगति	इ
तंच	७	संकुची	तनक्ति	ध
तंच	१	गतौ	तंचति	ऌ
तंज	७	संकोचे	तनक्ति	ध ऌ
तट	१	उच्छ्राये	तटति तटं	
तट	१०	आहतौ	तटयति	क
तड	१०	आघाते (त.)	ताडयति ताम्रं ताम्रकारः	क
		त्विषि		
तड	१	ताडने	तण्डतेरिपुं	ऌ इ
तंतस्	११	दुःखे	तंतस्यति	ट
तद	१	कल्याणे	तन्दते गृहे नरः	इ
तन	८	विस्तारे	तनोति (वा) तनुते तन्त्रं	द ज ऌ
			तन्तुवायः वितानः	
तन	१-१०	श्रद्धापतापयोः (तथा) उपकृतौ निवाकग्रंजनः श्रद्धाघातिशब्देच	तनति (वा) तानयतिज्ञा यति	किं ऌ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तप	१	संतापे	तपति तापः	औ
तप	४	ऐश्वर्ये	तप्यते सेनया राजा	य ड औ
तप	१-१०	दाहे	तपते (वा) तापयते	कि ड
तंत्र	१	गतौ	तंत्रति	
तम	४	ग्लानौ (त०)	ताम्यति दुराचारेण विप्रः	यभ इर् उ
		इच्छायां		
तय	१	गतिरक्षयोः	तयते	ड
तरण	११	गतौ	तरण्यति	ट
तत्र	१०	कुटुंबभरणे	तन्त्रयते कुतन्त्रेण कुमतिः	क इ ड
तर्क	१०	भाषार्थे दीप्तिर्क	तर्कयति	क
		योश्च		
तर्ज	१	तर्जने	तर्जति तं ततर्जानिलात्मजं	
तर्ज	१०	तर्जने	तर्जयते	क ड
तर्द	१	हिमायां	तर्दति ततर्द	
तर्ब्ब	१	गतौ	तर्ब्बति	
तल	१-१०	प्रतिष्ठायां	तलति (वा) तालयति दे- वालये राजा तलः तालुः	कि
तस	४	उत्क्षेपणे	तस्यति मल्लो मल्लं वि- तस्तिः	य उ इर
तस	१-१०	अलंकारे	तंसति (वा) तंसयति उ तंसः अवतंसः	कि इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तस्	४	उपक्षये	तस्यति	उ य
ताय	१	संताने पालने च	तायते धर्म साधुः	ऋ ङ
तिक, ती	१	गतौ	तेकते	ऋ ङ
क				
तिक	५	जिवांसायां	तिक्रोति	न
तिग	५	जिवांसायां (त.)	तिशोति	न
		स्कन्दनेच		
तिथ	६	वातने	तिघ्नोति	न
तिज	९	निशाने क्षमायां च	तितिक्षते खलं साधुः	ङ
तिज	१०	निशाने	तेजयाति शूलं भट्टः ते- जना	क
तिप	१	क्षरणे (त.) द्युति	तेपते जलं वटात्	उ ऋ ङ
तिम	४	आर्द्रभावे	तिम्यति तैलेन देहः	य
तिल	६	स्नेहने	तिलति तैलेन गात्रं तिलः	श
तिल	१०	स्नेहने	तेलयति तैलेन देहं जनः	क
तिल (वा)	१	गतौ	तेलयति	
तिष्ठ				
तिरस्	११	अन्तर्द्धौ	तिरस्यति कुटिलो वार्त्ता छन्ना	ट
तीक	१	गतौ	तीकते	ङ ऋ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तीम	४	आद्रिभावे	नीम्याति तैलेन देहः	य
तीर	१०	समाप्ता	तीरयति तीरं	क त
तीव	१	स्थैर्ये	तीवति	
तु	२	गतिवृद्धिवृत्तिहिंसा	तौति	ल
तुज	१	पूर्त्तेषु		
तुज	१०	हिंसायां	तोजति तुतोज	
तुंज	१०	भारार्थे	तुंजयति	क इ
तुंज	१०	हिंसायां	तुंजयति	क इ
तुज	१०	हिंसाबलादान	तोजयति	क
तुंज	१	निकेतनेषु		
तुंज	१	हिंसाबलवेष्ट- नप्राणनेषु	तुंजति तुंगः तुंगी	इ
तुट	६	कलहकर्माणि	तुटति खलः पित्रा सह	श शि
तुड	१	तोडने	तोडति जरासंधं भीमः	ऊ
तुड	६	तोडने	तुडति बन्धनं हस्ती	श शि
तुड	१	तोडने(त.)वधे	तुंङते तृणं तुण्डं	इ ङ
तुड्	१	अनादरे	तुड्ति	
तुण	६	कौटिल्ये	तुणाति खलः	श
तुत्थ	१०	स्तुतौ	तुत्थयति	क त.

धातु.	संज्ञ.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तुद	६	व्यथने	तुदति (वा) तुदते विधुं	श ज औ
तुद(त.)	१	चेष्टायां	तुदो विधुं तोत्रं	
तुद			तुन्दति सुखाय तुन्दं	इ
तुप	१	वधे	तोपति	
तुप	१०	तर्दने	तुपयति	क इ
तुप	६	हिंसायां	तुपति	श प
तुप	६	हिंसायां (त०)	तुपति	श
तुप		क्लिशि		
तुप	१	वधे	तुपति	
तुफ	६	हिंसायां	तुफति	श
तुफ	६	हिंसायां	तुफति	
तुफ	६	तृप्ति	तुफति भोजने विप्रः	श
तुव	१-१०	अर्दने अदर्शनेच	तुवति (वा) तुवयति-	कि इ
			तुवी	
तुभ	१	हिंसायां	तोभते	लृ ङ
तुभ	४	हिंसायां	तुभयति	य
तुभ	९	हिंसायां	तुभ्नाति	ग
तुर	३	त्वरणे	तुतोत्ति लुब्धो, धनाय	लि र
			तुरितं, तुरा, तुरगः, तुरंगः	
तुरण	११	त्वरायां	तुरण्यति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तुर्व	१	हिंसायां	तुर्वति	इ
तुल	१०	पूरणे	तोलयते	क ह
तुल	१-१०	उन्माने	तोलति (वा) तोलयति	कि
तुष	४	तुष्टौ	कांचनं जनः तुष्टा तुप्यति तुष्टः, टा, टं, तुष्टिः	य लृ औ वि
तुस	१	शब्दे	तोसति	
तुह	१	अर्दने	तोहति	इ र
तूड	१	अनादरे, तोडनेच	तूडति	ऋ
तूण	१०	मंकोचे	तूणयति	क त
तूण	१०	पूरणे	तूणयते, तूणः, तूणा, तूणी, तूणीरः	क ह
तूर	४	चरणे, हिंसायां	तूर्यते याचकः	य ङ इ
तूल	१	निष्कर्षे	तूलतिकनकं तूलिका	
तूष	१	तुष्टौ	तूषति कृष्णः	
तृक्ष	१	गतौ	तृक्षति तृक्षः ताक्ष्य	
तृण	८	अर्दने	तृणोति (वा) तृणुते तृणं वृषः	द व उ
तृद	७	हिंसादनयोः (त.) अनादरे	तृणात्ति (वा) तृत्ते	घ न इर् औ

धातुः	गणः	अर्थः	उदाहरणः	अनुबन्धः
तृप	१-१०	प्रीणने (त.) सं- जीप्सेसंदीपे	तर्प्यति (वा) तर्प्यति हविषा वन्हि विप्रः	कि
तृप	४	प्रीणने	तृप्यति पयसा बालः तृ- प्तिः तर्पणं	य वि उ
तृप	५	प्रीणने	तृप्नोति	न
तृप	६	प्रीणने	तृपति	श प
तृप	६	प्रीणने	तृपति	श
तृफ	६	तृप्तौ	तृफति भोजने विप्रः	श
तृप	४	पिपासायां	तृप्यति चातकः तृट् तृषा तृप्णः णा-णं-तृप्णा	य इर वि श ऊ
तृह	७	हिंसायां	तृणेडि रिपुं जनः	ध ऊ
तृह	१	वृद्धौ	तृंहति	इ
तृंह		हिंसायां	तृहति	श ऊ
तृ	१	तरणाभिभ— वपुवनेषु	तरति गंगां धीवरः तर- णिः तरणी तरिः तरी	
तृ	९	हिंसायां	तृणाति	
तृ	९	हिंसायां	तृणाति (वा) तृणीते	व ग
तेप	१	कम्पेक्षरणे	तेपते	क ड
तेव	१	द्युत्यांच	तेवते	क ड
तोड	१	देवने अनादरे	तोडति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तौक	१	गतौ	तौकते	ऊ ङ
त्रक	१	गतौ	त्रंकते	ङ इ
त्रख	१	गतौ	त्रखति	
त्रख	१	गतौ	त्रंखति	इ
त्रग	१	गतौ	त्रंगति	इ
त्रद	१	चेष्टायां	त्रंदति	
त्रप	१	लज्जायां	त्रपते वधूः	उ, ङ, प, मि
त्रस	१	उद्वेगे	त्रसति	इ ण
त्रस	४	उद्वेगे	त्रस्यति खल्लात्साधु. त्रास	य
त्रस	१०	निवारणे(त) श्रेह- निषेधेक्षतौ	त्रासयति शत्रुं शूरः	क
त्रस	१-१०	भाषा (वा) भासि	त्रंसति (वा) त्रंसयति	कि इ
त्रुट	४	छेदने	त्रुटयति	य
त्रुट	६	छेदने	त्रुटति	श शि
त्रुट	१०	छेदने	त्रुटयते	क ङ
त्रुप	१	वधे	त्रुपति	
त्रुप	१	वधे	त्रुंपति	
त्रुफ	१	हिंसायां	त्रोफति तस्करो धनाय	
			पाथं	
त्रै	१	पालने	त्रायते	ङ
त्रौक	१	गतौ	त्रौकते	ऊ ङ

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवत्थ.
त्वक्ष	१	तनूकरणे	त्वक्षति वृक्षं	
त्वक्ष	१	त्वचोग्रहे	त्वक्षति	
त्वग	१	गतिकम्ययोः	त्वंगति	इ
त्वच	६	संवरणे	त्वचति दोषं दानेन दा- ता, त्वचं, त्वक्, त्वचा	श
त्वंच	१	गतौ	त्वंचति	उ
त्यज	१	हानौ	त्यजति गृहं यतिः	औ
त्वर	१	सम्भ्रमे	त्यागः त्वरते भोजनाय त्वरा	जि प म ङ
त्सर	१	छद्मगतौ	त्सरति खलः त्सरुः	
त्विष	१	भासे	त्वेषति (वा) त्वेषते	औ ज
थुड	६	संवृत्तौ	थुडति	श शि
थुर्व	१	हिंसायां	थुर्वति	ई
दक्ष	१	हिंसायां	दक्षते	म ष ङ
दक्ष	१	वृद्धौ(त.) स्यंदे	दक्षते धर्मेण दक्षः	ङ
दघ	१	घातने	दंघति	इ
दघ	५	घातने—पालनेच	दघ्नोति	न
दंड	१०	दंडनीपातने	दण्डयति दण्डयं राजा	क त
			दंडः	
दद	१	दाने(त.) धृतौ	ददते	ङ
दध	१	धारणे(त.) दाने	दधते	ङ

धातु	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
दध	१	पालने	दधति कृष्णं नन्दः	
दभ	१०	नादे	दभयति	क
दभ	१०	नोदे	दंभयति	क इ
दंभ	५	दभे	दभ्रोति धूर्तः	न उ
दंभ	१०	सधाने	दंभयते	क ङ
दम	४	उपशमे	दाम्यति मुनि, दम, दान्तिः, दान्तः, ता तं	यं भ उ इर
दय	१	गतौ दाने हिंसायां	दयते	जि ङ
दरिद्रा	२	दुर्गतौ	दरिद्राति दरिद्रः	ल लु क्ष
दल	१०	विदारणे	दालयति	क
दल	१	भेदे-विशरणे	दलति दलं	मि
दव	१	व्रजे	दंवति	इ
दश	१०	भाषार्थे-त्विषि	दंशयति	क इ
दश	१०	दंशने(त.) दर्शे	दशयते मूलं दंशः	क इ ङ
दंश		दशने	दशति मूल दंशः	औ
दस	४	उत्क्षेपे	दस्यति	य इर औ
दस	१०	दंशने	दंसयते गात्रं	क इ ङ
दस	१०	भाषि	दंसयति	क इ
दस	१०	दंशने-दर्शनेच	दसयते श्रीकृष्णं भक्तः	ङ क
दस	४	उपक्षये	दस्यति	य उ
दह	१	भस्मीकरणे	दहति वनं वह्निःदाहः	औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
दह दा	१० ३	दीप्तौ-दाहेच दाने	दहयति ददाति गां विप्राय (अ- थवा) दत्ते, आ उपसर्गे आदत्तः	क इ लि ड डु
दा दाण्ड-	२ १	लवने दाने	दाति दात्रेण धान्यं यच्छति धनं विप्राय	ल प
तिदा दान	१	अवखण्डने(अथवा) आर्जवे	दीदांसति (वा) दीदां- सते काष्ठं वर्द्धकि	उ ङ
दाय	१	दाने	दायते	ऋ ङ
दाश	१	दाने	दाशति (वा) दाशते वि- प्राय वस्त्रं	ऋ ज
दाश	१०	दाने	दाशयते	क ऋ ङ
दाश	५	हिंसने	दाशनोति	न र .
दास	१	दाने	दासाति (वा) दासते दासः	ऋ ज
दास	५	जिघांसायां(त.)वधे	दास्रनोति रिपुं	न र
दिप	१०	संघाते	दिपयते	क ङ
दिप	१	संघाते	दिपति (वा) दिपते	ज
दिभ	१०	नोदे	दिभयति	क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
दिभ	१०	संघाते	दिभयते	क ह
दिव	१०	अर्द्धे	देवयति	क
दिव	१	प्रीतो	दिवाति	इ
दिव	४	क्रीडाविमिगीषा- व्यवहारद्युतिमोदम दस्वभकांतिगतिषु	दिव्यति—दिदेव—	य उ
दिव	१०	परिकूजने	परिदेवयतेप्रातः—पक्षी—	क ह
दिश	६	अतिसर्जने (अथ वा) शौचे	दिशते	श ङ औ
दिप	१०	मर्दने	दिपयति (वा) देपाति कुचं कामिन्याः	उ कि
दिह	२	उपचये	देग्वि (वा) दिग्धे देहो वृत्तेन	ल ङ औ
दी	४	क्षये	दीयते	य ङ औ
दीक्ष	१	मौह्ये—उपनयने व्रतादेशेच	दीक्षते. कार्तिकपूर्णिमा- यां यतिः दीक्षते पुत्रं पिता—दीक्षते शिष्यं दीक्षा	
दीधी	२	दीप्तिदेवनयोः	दीधीते गगने मानुः	ल, लृ, र, र, स
दीप	४	दीप्तौ-क्षरणेन	दीप्यते	प ई श्र क
दु	१	गतौ	द्ववति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
द्रा	२	कुत्सायां (त०)	द्राति निद्राया निद्रालुः	
द्राक्ष	१	यलायने घोरवासिते (त०)	द्राक्षति	इ
द्रास्व	१	क्रांक्षे शोषणालमथर्योः	द्रास्वति हिमेन वृक्षः	ऋ
द्राद्य	१	आयामे-सामर्थ्येच	द्राद्यते मोक्षे मुनिः श्र- मायामशक्तिषु	ऋ ङ
द्राड	१	विशरणे	द्राडते पुष्पं	ऋ ङ
द्राह	१	जागरे, निक्षेपेच	द्राहते	ऋ ङ
द्रु	१	गतौ	द्रवति लोहं द्रावः	
द्रुम्	१	अनुतापे	द्रवति	र ण
द्रुङ्	१	मज्जने	द्रोडति	
द्रुड	६	मज्जने	द्रुडति	श शि
द्रुण	६	गतौ, जैह्वे, वधे	द्रुणति हयः द्रोणेः	श
द्रुह	४	जिघांसायां	द्रुह्यति रिपुं राजा द्राहः	य ल ङ
द्रू	९	हिंसायां-गतौ	द्रूणाति (वा) द्रूणीते	ग ज
द्रूक	१	शब्दोत्साहयोः	द्रूकते युद्धे वीरः	ऋ ङ
द्रू	१	स्वप्ने	द्रायति . रात्रौ लोकः, निद्रा, निद्रालुः	
द्रुम्	१	स्थगने	द्वरति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
द्विष	१	अप्रीतौ	द्वेषति (वा) द्वपते द्वेष.	अ
द्विष	२	अप्रीतौ	द्विषन्ति मंदाश्रितं म- हात्मनां (त०) द्विष्टे द्वेषः	ल औ अ
धक्क	१०	नाशने	धक्कयति	क
धण	१	ध्वाने	धणति	
धण	१	रवे	धणति	
धन	२	धान्ये	दधन्ति शालि भूमि धनं धान्यं	ल लि र
धर्ज	१	गतौ	धर्जति	
धव	१	व्रजे	धवति	इ
धा	३	धारणपोषणयोः (त०) दाने	दधाति (वा) धत्ते	लि लु अ
धाव	१	गतौ—श्रुद्धौ च	धावत्यश्वः धावति (वा) धावते कोष्टेन दन्तान्	उ अ
धि	५	प्राणने	धिनेति हव्येन हिर- ण्यरेतसं	न
धि	६	वारणे	धियति वेदं बालः	श
धिक्ष	१	मंदापने-जीवनेच्छे- शने च	धिक्षते बान्हिः कोष्टेन	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
धिव	९	प्रीणने (त०) गतौ	धिनोति हव्येन हिरण्य- रेतसं	न इ
धिप	३	शब्दे	दिधोष्टि	लि र
धी	४	अनादरे (त) अधारे	धीयते साधुं खलः	च ङ औ
धु	९	कंपने	धुनोति (वा) धुनुतेशा लिनं वातः	न ज
धु	१	स्थैर्ये (तथा) स- पणे	ध्रुवति ध्रुवः	वि
धु	६	स्थैर्ये-सर्पणेच	ध्रुवति	श शि
धुर, झ	४	हिंसायां (त) गतौ	धूर्यते रिपुं बली	य ई व
धूर्	१	हिंसायां	धूर्वति	हृ
धू	१	कंपने	धवति (वा) धवते	व
धू	१	जवध्वंसने	धवते पत्रं वृक्षात्	ह
धू	९	कंपने	धूनोति (वा) धूनुते शालिनं वातः	न व
धू	६	विधूनने	ध्रुवति हस्तं नटः	श शि
धू	९	कंपने	धूनानि पल्लवं वातः धूनः ना-नं	ग मि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
धू	१०	कपेन	धामयति (वा) धावय- ने धूनयति (यथा) वायुर्विधूनयति केसर- पूष्पंजातं.	क ज
धूक्ष	१	संदीपने जीवने क्ले- शने च	धूक्षते बान्हेः काष्ठेन	ङ
धूप	१	संतापे	धूपायति	
धूप	१०	भाषार्थे (त०) दीप्तौ	धूपयति	क
धूश	—	—	इति धूस (तथा) धूष	
धूष	१०	धूशे	(इति धूस)	क
धूष	१०	संहतो हिंसे	धूषति	उ
धूस	१०	कान्तिकरणे	धूसयत्यंगं कुंकुमे जनः	क
धू	१	धारणे	धरति (वा) धरते, धुरं, धुर्यः धुरंधरः	ज
धू	१०	धृतौ	धारयति	क
धू	६	अवस्थाने	ध्रियते यावदेकोपि रिपुं	श ङ
धू	१	दृष्टेने	धरति	
धू	१	सेचने	धरति मेघो भूमिं	
धू	१	अवध्वसे	धरते	ह
धूज	१	गती	धर्जति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
धृज धृष	१ १-१०	गतौ प्रहसने-अमर्षेच	धृजति धर्षति (वा) धर्षयति धृष्टो धार्मिकं	इ कि
धृप धृप	१० ९	शक्तिवन्धे प्रागल्भ्ये	धर्षयते धृष्णोति सभायां देवद- त्तः धृष्टः, टा टं:	क ऊ न जि आ
धे धेक धोर ध्मा	१ १० १ १	पाने दर्शने गतिचातुर्ये शब्दाग्निसंयोगयोः	धयति वत्सो धेनुं धेकयति कपर्द्दिनं शैवः धोरत्यश्वः धमति शंखं कृष्णः— धमति लोहं लोहकारः	ट क
ध्माक्षत- ध्वाक्ष ध्वै	१ १ १	घोरवासिते (त०) कांक्षे चिंतायां	ध्मांक्षति ध्माक्षः ध्यायति हरिं यतिः ध्यानं	इ
ध्रज ध्रज ध्रण, ध्रण	१ १ १	गतौ गतौ ध्वाने	ध्रजति ध्रंजति ध्रणति (तथा) ध्र- णाति	इ
ध्रस ध्रस	९ १०	उत्क्षेपे-उज्ज्ळे उत्क्षेमे	ध्रस्नाति ध्रासयति	ग उ क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
धाक्ष		घोरवासिते (त०)	धाक्षति	इ
धाख	१	काक्षे		ऋ
धाघ	१	शोषणालमर्थयो.	धाखति हिमेन वृक्ष.	ऋ ङ
धाड	१	राक्तौ	धाघते	ऋ ङ
धिन	१	विशरणे	धाडते पुष्पं	
धुव	६	गतौ	धेजति	श
धू	६	गतिस्थैर्ययो.	धुवति	श शि
ध्रैक	१	गतिस्थैर्ये	धुवति	ह ऋ
ध्रै	१	शब्दोत्साहयो	ध्रैकते	
ध्वज	१	तृप्तौ	ध्रायति	ध्वज
ध्वज	१	गतौ	ध्वजति	
ध्वण	१	गतौ	ध्वंजति	इ
ध्वन	१	बाने	(इतिध्वन)	मि
ध्वन	१०	शब्दे	ध्वनति ध्वनि.	क त
ध्वन	१०	शब्दे	ध्वनयति ध्वन ध्वनि	
ध्वन	१०	शब्दे कपे	ध्वनयति धनुर्दन्वी (वा)	क
			ध्वानयति (यथा) ध्वा	
			नयति वृक्ष वायुः	उ ङ लृ
ध्वस	१	गतौ चूर्णने अं-	ध्वसते	
ध्वृ	१	शेच		
		यर्णे, कौटिल्येच	ध्वरति वशं	अध्वर

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
धाक्ष	१	घोरवासिते	धाक्षति	इ
नक्क	१०	नाशने	नक्कयति	क
नख	१	सपणे	नखति नखः	इ ओ ङ
नज	१	न्हिये	नजते	
नट	१	नृत्ये (त०) हिंसायां	नटति नटः	
नट	१०	अवस्यंदने, भ्रंशे, दीप्तौ च	नाटयति हस्तं नटी	क
नड	१०	भ्रंशे	नाडयति	क
नद	१	अव्यक्ते शब्दे	नदति नदी	
नद	१	समृद्धौ	नन्दति—ननन्द पारिलुव- नेत्रया नृपः नन्देत चक्रु- लं पुंसां	इ ङ
नम्ब	१	गतौ	नम्बति	
नम	१०	नृत्यां	नामयति (वा) नमयति	
नम	१	अव्हे शब्दे	नमति, प्रणमति गुरुं शि- ष्यः, नमस्कारः	
नय	१	गतौ	नयते	ङ
नर्द	१	शब्दे	नर्दति ननर्दचासुरः सोपि	
नर्व	१	गतौ	नर्वति	
नल	१०	अपवारणे	नालयति (वा) नलति	कि

धातु	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
नल .	१०	दीप्तौ	नालयति	क
नह	४	बन्धने	नहति (वा) नहते	य ज औ
नाथ	१	याञ्चोपतापैश्चर्या- मीः पु	नाथते (तथा) नाथति (यथा) नाथतिम्वल साधुं नाथति यानकावदा न्यं नाथः	ऋ
नाथ	१	याञ्चोपतापैश्चर्या- शो पु	नाथते	ऋ ङ
निक्ष	१	चुम्बने	निक्षति मुपं	
निद	१	कुत्साया	निन्दति निन्दा	इ
निष	१	मंचने	नेपाति	उ
निष्क	१०	परिमाणे	निष्कयते निष्क	क ङ
नील	१	वर्णे	नीलति पट नीलः नीली	
नीव	१	स्थौल्ये	नीवति	
नुड	६	वधे	नुडति	श शि
नृत	४	गात्रविक्षेपे	नृत्यति नर्त्तकः	य
न	१	नघे	नरति	म
पक्ष	९	नघे	नृणाति नरं राजा	ग मि
पक्ष	१०	परिग्रहे	पक्षयति पक्षः	क क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पच	१	पाके	पचति (वा) पचते पचा पाकः पचनं पक्कः का कं	ज औ ष
पच	१	व्यक्तीकरणे	पचते गुणं कविः	ङ औ
पच	१	व्यक्तीकरणे	पंचते	इ ङ
पच	१०	विस्तारं	पञ्चयति पाञ्जिकां भिक्षुः	क इ
पठ	१०	ग्रंथे (त०) वेष्टने	पठयति माल्यं माल्यकारः	क त
पठ	१०	भाषायां-त्विषि	पाठयति	क
पठ	१	गतौ	पठति	
पठ	१	व्यक्तायांवाचि	पठति पाठं पाठकः	
पड	१०	संहतौ	पडयति	क
पड	१०	संहतौ-नाशनेच	पण्डयति	क इ
पड	१	गतौ	पण्डते पण्डा पण्डितः	ङ इ
पण	१	व्यवहारे (त०)	पणते वणिगापणे पणः	ङ
		स्तुतौ	पणायते हरिं विप्रः	
पण	१०	व्यवहारे	पणयत्यापणे उपसर्गेप्र- पाणयति	क. त
पत	१	गत्यां ऐश्वर्ये	पतति	लृ ज
पत	४	ऐश्ये	पत्त्यते	य ङ
पत	१	गतौ (त०) ऐश्ये	पतयति पतं गोगगने	क त
पथ	१	गतौ	पथति पथः	ए ज

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पथ*	१०	गतौ	पंथयति	पांथ. क इ
पथ	१०	प्रक्षेपे	पाथयति	क
पद्	१	स्थिर्ये	पद्मति	ए
पद्	४	गतौ	पद्यते	य ड औ
पद्	१०	गतौ	पदयते	क त ङ
पन	१	व्यवहारे (त०)	पनते वणिगापणे इति	
		स्तुतौ	पण पनायति हरिं विप्र.	
पंपस्	११	दुःखे	पंपस्यति गदेनार्त्तः	ट
पंथ	१	गतौ	पंथति	
पथ	१	गतौ	पथते	ङ
पथस्	११	प्रसृतौ	पथस्यति	ट
पर्ण	१०	हरितभावे	पर्णयति तरुपर्णं मेव	क त
			पर्ण, पर्णः	
पर्प	१	गतौ	पर्पति	
पर्द	१	कुत्तिसतेशब्दे व्यवहारे, स्तुतौ च	पर्दते गर्दभः	
पर्व	१	गतौ	पर्वति	
पर्व	१	पूरणे	पर्वति	
पर्ष	१	स्नेहने	पर्षते पुत्रे पिता पर्षत्-स	ञ
			स्पर्षते	
पल, पल्ल	१	गतौ	पलति (वा) पल्लति	ज

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पल	१०	रक्षणे	पालयति (वा) पलयति	क
पल्युल	१०	लूनिपूत्योः	पल्युलयति	क त
पल्यूल				
पश	९	वाधे-ग्रंथेच	पशति (वा) पशते	ञ
पश	१०	वन्धे	पाशयति पाशेन पशुं गो- पः पाशः	क
पश	१०	वन्धवाधयोः— स्पर्शगत्योश्च	पाशयति पाशः	क त
पष	१	वाधनस्पर्शयोः	पषति (वा) पषते	ञ
		वन्धे-स्पर्शने ग्रंथे		
पष	१०	वन्धे-अनुपसर्गात्- गतौ	पषयति	क
पष	१०	वन्धवाधयोः स्पर्शगत्योश्च	पषयति	क त
पस	१	वधग्रंथयोः	पसति (वा) पसते	ञ
पस	१०	वन्धे	पसयति	क
पस	१०	नाशने	पंसयति पांसुः	क इ
पा	१	पाने	पिबति पानं	
पा	२	रक्षणे	पाति पुत्रं पिता	ल
पार	१०	समाप्तौ	पारयति राजसूयं युधि- ष्टिरः पारणापारं	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पाल	१०	रक्षणे	पालयति	क
पि	६	गतौ	पियति	श
पिच्च	१०	कुट्टने	पिचयति सोमं सोमपाः	क
पिछ	६	बाधे	पिछति	श
पिछ	१०	कुट्टने	पिछयति	क
पिज	१०	निकेतने	पेजयति	क
पिज	२	वर्णे-वर्णपूजयोः	पिंक्ते पिंजरः	ल इ ङ
पिज	१०	हिंसायां-भाषट्कार्थे- षट्बलादाननिकेत- नेषु	पिजयति	क इ
पिट	१	संहतौ (त०)	पेटति धान्यं	पेटकः
पिठ	१	ध्वनौ हिंसायां (त०)	पेठति	.
पिड	१	क्लेशि	पिण्डते	पिण्ड
पिड	१०	संघाते	पिडयति	पिड.
पिल	१०	क्षेपे	पेलयति	ड इ क इ क
पिव	१	सेचने	पेवते	क ङ
पिश्	६	अवयवे	पिशति	पेशी
पिष	७	संनूर्णे	यवंपिनष्टिचेटी	पेषः श प ध ल औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पिष	१०	हिंसायां	पिषयति	क
पिष	१	गतौ	पिषति	
पिम	१	गत्यां	पिमति	ऋ
पिस	१०	निकेतने हिंसावद्- ज्ञानेषु गत्यां च	पिसयति	क
पिस	१०	भाषार्थे, त्विषि च	पिसयति	क इ
पिस	१-१०	त्विषि	पिसयति (वा) पिसति	कि इ
पिस	१०	नाशे	पिसयति	क इ
पी	४	पाने	पीयते पयः शिभुः	य ल
पीड	१०	अवगाहने (त०) वधे	पीडयति प्रजामवग्रहः पीडा	क ऋ
पील	१	प्रतिष्ठे	पीलति बालः पीलुः	
पीव	१	स्थौल्ये	पीवति पीवरः	
पुच्छ	१	प्रमादे	पुच्छति कृत्ये मूढः पुच्छं	
पुट	१०	भाषार्थे-चूर्णे भा- सिच	पोटयति	क
पुट	६	संश्लेषणे	पुटति कामं रतिः पुपोट	श शि
पुट	१०	संसर्गे	पुटयति संपुटे पुप्पं जनः	क त
पुट	१०	दीप्तौ	पुंटति (वा) पुंटयति	इ कि
पुट्ट	१०	अल्पी भावे तौ- ल्ये	पुट्टयति शोकेन देहः	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पुड पुड पुण	६ १ ६	उपक्षेप महें-खण्डनेच शुभे कर्मणि	पुडति पुण्डति पुणति स्नानेन जन पुण्य प्या-प्य निपुण णा-ण	श इ श
पुथ पुथ पुथ	१० ४ १	भाषार्थे, त्विषिच हिंसाया हिंसाया सक्रेशेच	पोथयति पुथयति रिपुं वातपोथ पुथति	क य इ
पुर	६	अग्रगमने	पुरति कौरवान् भीष्म, पुपोर	श
पूर्व पुल पुल पुल पुल पुप पुप पुप पुप पुप पुप्प	१ ६ १ १० १ ४ ९ १० ४	पूरणे महत्वे महत्वे सघाते उच्छिद्रौ पुष्टौ पुष्टौ पुष्टौ धारणे विकसने	पूर्वति जलेन कलशं पुलति पोलति पुलयति तृण कृपाण पोषति देह पुप्यति पुष्पाति देह मूर्ख पोषयति कवचं कुमार पुप्पयति कलिका प्रात पुप्प पुम्यति	श ज क य ऋ औ ग क य
पुस	४	विभागभ्रंशयो		य इर्

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पुंस	१०	मर्दे—अभिवर्द्धनेच	पुंसयाति	क
पुस्त	१०	आदरानादरयोः	पुस्तयाति धनं पुस्तकं	क
पू	९	वन्धे (त०) पवने	पुनाति (वा) पुनीते	ग अ गि
पू	१	पवने	विश्वं गंगा पवते गंगा पवन	ङ
पू	४	पवने	पूयते	य ङ
पूष्य	१०	संघाते	पूष्यति	क
पूज	१०	पूजायां	पूजयति गुरुं शिष्यः पूजा	क
पूण	१०	संघाते	पूणयति	क
पूय	१	विशरेण दुर्गं धेच	पूयते मृतकः	ङ
पूर	४	आप्यायने	पूर्यते जलेन तरुः	ङ
पूर	१०	आप्यायने	पूरयति धनैर्याचकं कर्णः	ङ
पूर्व	१०	निकेतने	पूर्वयति	क
पूर्व	१०	निकेतने	पूर्वयतिगृही	क
पूल	१	संघाते	पूलति तृणानि	
पूष	१	वृद्धौ	प्रतिक्षणं पूषति यस्य विक्रमः	
पृज	२	वर्णे	पृङ्क्ते	ङ ङ ल
पृ	९	प्रीतौ	पृणोति साधुरतिथीन्	न

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबध
पृ	६	व्यायामे	धर्मे व्याप्रियते साधु व्यापार	श ङ
पृ	१०	पूरणे (त०) पा लेन	पारयति पयसा कलश	क
पृ	३	पालनपूरणयो	पिपत्ति पुत्र धनेन पिता	लि
पृच	११०	सयमने (त०) स पर्के	पर्चति (वा) पर्चयति	वि
पृच	२	सपर्के	सपृक्त साधुभि साधु	उ इ ङ
पृच	७	सपर्के	सपृणक्ति न केनापि यति	ध इ
पृज	२	सपर्के	पृक्ते	ल ङ ङ
प्रेष	१	गतौ	प्रेषते	ऋ ङ
पृड	६	सुखे	पृडति धर्मो लोक	श
पृण	६	प्रीणने	पृणति हरि भक्त्या कुय पपणे	श
पृथ	१०	प्रक्षेपे	पृथयति	क
पृप	१	सेर्के	पृपति	उ
पृ	९	पालनपूरणयो	पृणाति विश्व जलेन शक्र	ग गि नि
पृ	३	पालनपूर्यो	पिपत्ति	लि
पृ	१०	पृत्तौ	पारयति	क
प्रेण	१	प्रेषणगतिश्लेषेयु	प्रेणति	ऋ
पेल	१	गतौ	पेलति	ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पेव	१	सेवने	पेवते	ऋ ङ
पेस	१	गतौ	पेसति	ऋ
पै	१	शोषणे	पायति हिमेन वृक्षः	
प्यै	१	वृद्धौ	प्यायते	ङ
प्याय	१	वृद्धौ	प्यायते	इ औ ङ
प्युष	४	भागे—दाहे	प्युष्यति	य इर्
प्युष	१०	उत्सृजे	प्युषयति	क
प्रच्छ	६	जिज्ञासायां	पृच्छति गुरुं शिष्यः	श औ
प्रथ	१	प्रख्याने	प्रथते विद्यया कविः प्रथा	म प ङ
प्रथ	१०	प्रक्षेपणे (त०)	प्राथयति	क
		ख्यातौ		
प्रस	१	विस्तारे, प्रसवु	प्रसते परगुणं साधुः	ङ
प्रा	२	पूरणे	प्राति जलेन घटं	ङ
प्री	९	तर्पणे—कान्तौच	प्रीणाति (वा) प्रीणीते	ग ङ
			पितरं पुत्रः प्रीतः ता, तं प्रीतिः	
प्री	४	प्रीतौ	प्रीयते धर्मसाधुः प्रीतः, ता, तं, प्रीतिः	य ङ
प्री	१०	तर्पणे	प्राययति (वा) प्रायय- ति देवतां हविषा यज्वा प्रीणयति	क ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
प्री	१	तर्पणे	प्रयति (वा) प्रयते	ज
पु	१	गतौ	प्रवते	ह
पुप	१	दाहे	प्रोपति	उ
पुप	९	स्नेहनमोचनपूरणे	पुष्पाति पृत्रं पिता-विपु	ग
		दाहेच	पविपुष्	
प्रोथ	१	पर्याप्तौ	प्रोथति (वा) प्रोथते	झ ङ
			नार्जुनाय कर्ण	
पुक्ष	१	भक्षणे	पुक्षति (वा) पुक्षते	ञ
			पुक्षः	
पुव	१	गतौ	पुवते	पुव
प्री	९	गतौ	प्रीनाति	ह
प्रीह	१	गतौ	प्रीहते	ग
पु	१	गतौ	पुवते	ङ
पुप	१	दाहे	पुपति	ह
पुप	४	दाहे	पुप्यति गात्रं ज्वरेण	उ
			पुष्ट , टा, टं, लोप	य ल
पुप	९	स्नेहनमोचनपूरणे-	पुष्पाति	ग
		पु दाहेच		
पुस	४	दाहविमागयोः	पुस्यति	य इ
पुव	१	सेवने	पुवते	ऊ ङ
प्सा	२	भक्षणे	प्साति	ल

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
फक्क	१	नीचैर्गतौ	फक्कति खलः	ण मिण
फण	१	निःस्नेहे	फणति	
फण	१	गतौ	फणति (वा) फणयति सर्प्य सर्प्य वैद्यः फाणय- ति दुग्धं	
फर्व	१	पूरणे	फर्वति तमसा निशा ब्रह्मांडं	क ज
फल	१०	संघाते	फालयति	
फल	१	गतौ संघातेच	फलति	
फल	१	निष्पत्तौ	फलति धर्मः	जि आ
फल	१	विशरणे	फलति फालः	
फुल्ल	१	विकसने	फुल्लति कलिका फुल्लं	
फेल	१	गतौ	फेलति फेला	क म
फूल	१	जीवने	फवलति	
वक	१	गतौ	वंकते	
वक	१	कौटिल्ये	वंकते चित्तं खलः वंकः	इ इ क
वज	१०	मार्मणसंस्कारे	वाजयतियोद्धा वाजः वाजिनः	
वट	१०	वंटने	वंटयति धनं भ्राता	
वट	१०	पैल्ये	वटति	क इ
वण	१	शब्दे	वणाति	

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुयन्ध
वद	१	मथ्यर्थे	वदति	
वध	१	बन्धने, निद्रायाच	वधते बीभत्सते पापसाधु बीभत्सा	ङ
वा	१०	सयमने	वाधयति न केशान् द्रौपदी	क
वन	८	याचने	वनुने	द उ ङ
वन्ध	९	बधने	वध्नाति कृष्ण माता	ग औ
वन्ध	१०	बन्धने	वन्धयति	क
वभ्र	१	गतौ	वभ्रति	
वम्ब	१	गत्या	वम्बति	
वव्व	१	गत्या	वव्वति	
वर्ह	१	वधौ दीप्तौ च	वर्हति	
वर्ह	१	स्मृतिहिंसा दान	वर्हते	ङ
वर्ह	१	वाक्षु श्रेष्ठे	वर्हते	ङ
वल	१	दानवधनिरूपेषु	वर्त्ते	ङ
वल	१	धान्यावरोधे जी	वलति	ज
वल	१०	वने च भृतौ प्राणने च	वलयति बालपिता	क
वल	१०	निरूपणे	वलयते	क ङ
वलह	१	श्रेष्ठे	वलहते	ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
बल्ह	१	स्मृतिहिंसा दान- वाक्षु	बल्हते	ह
बल्ह	१०	त्विषि(त०)भाषार्थे	बल्हयति	क
वस्त	१०	अनादृत्यादृत्योः अदनेच	वस्तयति	क
वह	१	वृद्धौ	बहते	हं इ
वाध	१	विलोडने	बाधते	ऋ ङ
विद	१	अवयवे	विदति	इ
विल	६-१०	भेदने-क्षेपचे	विलति (वा) वेलयति	श क
विस	४	क्षेपे	विश्यति	य इरू
वीज	१	गतौ	वीजते	ह
बुक्क	१-१०	भषणे	बुक्कति (वा) बुक्कयति श्चा बुक्कं	कि
बुक्क	१०	व्यसने	बुक्कयति	क
बुट	१-१०	हिंसे	बोटति (वा) बोटयति	कि
बुड	६	संवरणे (त०) उत्सर्गे	बुडति	श शि
बुद	१	निशामने	बोदति (त०) बोदते	इरू उ ज
बुध	१	बोधने	बोधाति (वा) बोधते शास्त्रं	इरू ज ज
बुध	१	अबोधने	बोधाति शास्त्रं बालः प्र- बोधः	औ

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध
बुध	४	अवगमने बुधु-	बुध्यते (अथवा) बुध्यति	य औ
बुन्द	१	क्षयाच	बुदति (वा) बुंदते	इर् उ अ
बुन्ध	१	निशामने	बुन्धति (वा) बुन्धते	इर् उ अ
बुन्ध	१०	निशामने	बुन्धयति	क
बुल	१०	बन्धे	बोलयति	क
बृह	१०	मज्जने	बृहति वैश्य बृहती बर्हि	श उ
बृ	६	उद्यमे	(इति बृ)	—
व्युस	४	हानौ	व्युस्यति	य इर्
व्रण	१	शब्दे	व्रणति	—
व्रू	२	यक्ताया वाचि	व्रवीति (वा) व्रूते	ल अ
व्रूस	१०	हिंसाया	व्रूसयति व्याघ्रश्चौर	क
भक्ष	१	भक्षणे	भक्षति (वा) भक्षते	अ
भक्ष	१०	अदने	भक्षयति	क
भज	१	सेवाया	भजति (वा) भजते विष्णुबुध भाग , भक्ति	अ औ
भज	१०	विश्राणने पाकेच	भजयति मन्त्रिणे राज्य राजा	क
भज	१०	भापार्थे-भासि	भजयति	क इ
भञ्ज	७	आमर्द्दने	भनक्ति पादप दन्ती भग	ध ओ औ
भट	१	परिभाषणे	भटति	म

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भट	१	भूतो	भटति भृत्यं भटः	
भट	१०	प्रतारणे	भंटयति वालं भंटकः	क इ
भड	१	परिहासे	भंडते	इ ङ
भड	१०	शिवे	भंडयति	क इ
भण	१	शब्दे	भणति	ऋ
भद्	१	मुत्प्रीत्योः शुभे क- ल्याणे सुखेच	भन्दते	इ ङ
भद्	१०	शुभे	भंदयति	क इ
भर्भ	१	हिंसायां	भर्भति	
भर्व	१	हिंसायां	भर्वति	
भर्त्स	१०	तर्जने	भर्त्सयते	क ङ
भल	१०	निरूपे—आभंडनेच	भलयते	क ङ
भल	१	परिभाषणे—हिंसा- यां—दानेच	भलते	भालं ङ
भल्ल	१	परिभाषणे—हिंसा- यां—दानेच	भल्लते	भल्लः ङ
भष	१	भर्त्सने	भषति श्वा भषकः	
भस	३	भर्त्सनदीप्त्योः	वभस्ति दुर्वलं दुष्टः	लि र
भा	२	दीप्तौ	भाति सूर्यः भानुः	ल ष
भाज	१०	पृथक्कर्मणि	भाजयति धनं आता वि- भागः	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भाम	१	क्रोधे	भामते मूर्खः	ड
भाम	१०	क्रोधे	भामयति	क क त
भाष	१	व्यक्तायांवाचि	भाषते भाषा	ऋ ङ
भास	१	दासौ	भासते विद्यया विप्रः	ऋ ङ
भिक्ष	१	याज्ञायां	भिक्षतेऽन्नं भिक्षुः भिक्षा	ङ
			भिक्षुः	
भिद	७	विदारणे	भिनात्ति (वा) भिन्ते द-	धञ् इर् औ
			धिमाङं कृष्णः, भेदः	
भिल	१०	भेदने	भिलयति	क
भिषज्	११	चिकित्सायां	भिषज्यति भिषक्	ट
भिष्णज्	११	उपसेवायां	भिष्णज्यति	ट
भी	३	भये	बिभेति पापात् भयः	लि
भीम	१	गतौ-शब्देच	भीमति	ऋ
भुज	६	कौटिल्ये	भुजति भुजं	श ओ औ
भुज	७	पालनाभ्यवहारयो	भुनाक्ते भक्तं हरिः भुंक्ते	ध ञ औ
			पिलु फलं कृष्णः भोगः	
भुङ	१	भरणे	भुङ्ते कपटं	इ ङ
भू	१	सत्तायां	गमःस्थिरो भवति	
भू	१-१०	प्राप्तौ	भवते (वा) भावयते	कि ङ
			मोक्षं ज्ञानो	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भू	१०	अवकल्कनेशुद्धिमिश्रणयोः	भावयति वेदार्थं वैदिकः भावना	क
भूष	१-१०	अलंकारे	भूषति (वा) भूषयति भूषणं	कि
भृ	१	भरणे	भरति (वा) भरते भि- क्षुरुदरं	ञ टु डु
भृ	३	धारणपोषणयोः	विभृते धरां वासुकिः (त०) विभर्ति	लि डु टु ज
भृज	१	भर्जने	भर्जते	ङ ई
भृङ	६	निमज्जने	भृङ्गति गंगायां यात्रिकः	श
भृश	१०	दीप्तौ	भृशति (वा) भृशयति	इ कि
भृश	४	अधःपतने	भृश्यति वभर्श	य इर् उ
भृ	९	भर्त्सने भृतौ भृजि	भृणाति कुपुत्रं पिता	ग गि
भेष	१	भये	भेषति (वा) भेषते पा- पात्साधुः	ऋ व
भ्यस	१	भये	भ्यसते	ह
भ्रक्ष	१	अदने	भ्रक्षति	
भ्रण	१	शब्दे	भ्रणति	
भ्रम	१	चलेन	भ्रमति तीर्थं मुनिः	ज ण उ
भ्रम	४	अनवस्थाने	भ्राम्यति लुब्धः भ्रमः भ्रान्तः ता-तं भ्रान्तिः	य भ ज ण उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भ्रंश	१	अवस्रंसने	भ्रशते भ्रष्टः—ष्टा—ष्टं	उ ड लृ
भ्रंश	४	अधपतने	भ्रंश्यति वृक्षात्पत्रं बभ्रंश	उ इरू उ
भ्रस्ज	६	पाके	भृज्जति (वा) भृज्जते भृष्टं	श न औ
भ्रंस	१	अवस्रंसने	भ्रंसते	ह
भ्राज	१	दीप्तौ	भ्राजते	ह
भ्राज	१	दीप्तौ	भ्राजते	भ्राजथुः ङ ण ऋ ॠ
भ्राश	१	दीप्तौ	भ्राशते	ऋ ण ॠ ॡ
भ्रास	—	—	(इतिभ्राश)	—
भ्री	९	भरणे (त.) भये	भ्रीणाति नारी भर्ता	ग मि
भ्रुड	६	संवृतिसंहत्योः	भ्रुडति	श शि
भ्रुण इति भ्रूण	१०	आशायां (त.) विशकायां	भ्रुणयते पुत्रं बंध्या	क ड
भ्रेज	१	दीप्तौ	भ्रेजते	ऋ ड
भ्रेष	१	चले भये	भ्रेषति (वा) भ्रेषते	ऋ न
भ्रुक्ष	१	अदने	भ्रुक्षति	—
भ्राश	१	दीप्तौ	भ्राशते	ऋ ण ॠ ॡ
भ्रास	—	—	(इतिभ्राश)	—
भ्रुष	१	गती	भ्रुषति	ऋ
भ्रुक	१	मंडने	भ्रुकते स्तनं कुंकुमेन	ह इ
भ्रुक	१	गती	भ्रुकते	ह इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मक्क	१	गतौ	मक्कते	ङ
मक्ष	१	संघाते	मक्षति जलेनान्नं मक्षिका	
मख	१	गतौ	मखति	
मख	१	गतौ	मंखति	इ
मग	१	सर्पणे, गतौच	मङ्गति	इ
मगध	११	परिवेष्टने नीचदा	मगध्यति नीचः	ट
		स्येच		
मघ	१	भूषे	मंघति	इ
मघ	१	कैतवे गतौ आ-	मंघते कितवो द्यूतेन	ङ इ
		क्षेपेच		
मच	१	कल्कने	मचते मूर्खः	ङ
मच	१	धारणे उच्छ्रायधृ-	मच्चते माल्यं कंठे मभ्रः	इ ङ
		त्यर्चाभाःसु		
मञ्ज	१	गत्यां	मभ्रति	
मञ्ज	१०	मृजाध्वनयोः	मञ्जयति	
मठ	१	निवासे, मदेच	मठति मठः	
मठ	१	शोके	मंठने	इ ङ
मड	१०	सुखे	मंडयति (वा) मंडति	कि ग इ
			मङ्गाति	
मड	१	वेष्टने (त०) वि-	मंडते	इ ङ
		भागे		

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
मड	१-१०	भूपायां, हर्षेच	मंडति (वा) मंडयति मंडनं	कि इ
मण	१	शब्दे	मणति	
मंतु	१७	अपराधे रोषेच	मंतूयति	ट
मंतु	११	अपराधे रोषेच	मंतूयते	अ ट
मथ	१	विलोडने	मथति	ए ज
मथ	१	कुथे	मंथति	इ
मद	१	स्तुतिमोदमदस्वप्न कान्तिगतिषु आ- ज्येच	मन्दते मुनिर्माधवं मन्द- दाः दं.	इ ङ
मद	१०	तृप्तियोगे	मनो मदयते द्रव्यं	क ङ
मद	४	हर्षे	माद्यति धनेन भिक्षु. मद- यत्त. ता तं	य,भ,ज,र्द,इर्
मद	१०	हर्षमुपनयो.	मदयति मनो मित्रागम- मदयति रिपु बली	क
मन	८	बोधने	मनुते मुनिः	द ङ ल
मन	४	ज्ञाने	धर्मं न मन्यते भूढः	य ङ औ
मन	१०	स्तम्भे	मातयते सेनां दुर्गः	क ङ
मन्थ	१	विलोडने (त०) कुन्थे	मन्थति रथं ममन्थ स- हयं	
मन्थ	९	विलोडने	मन्नाति	ग

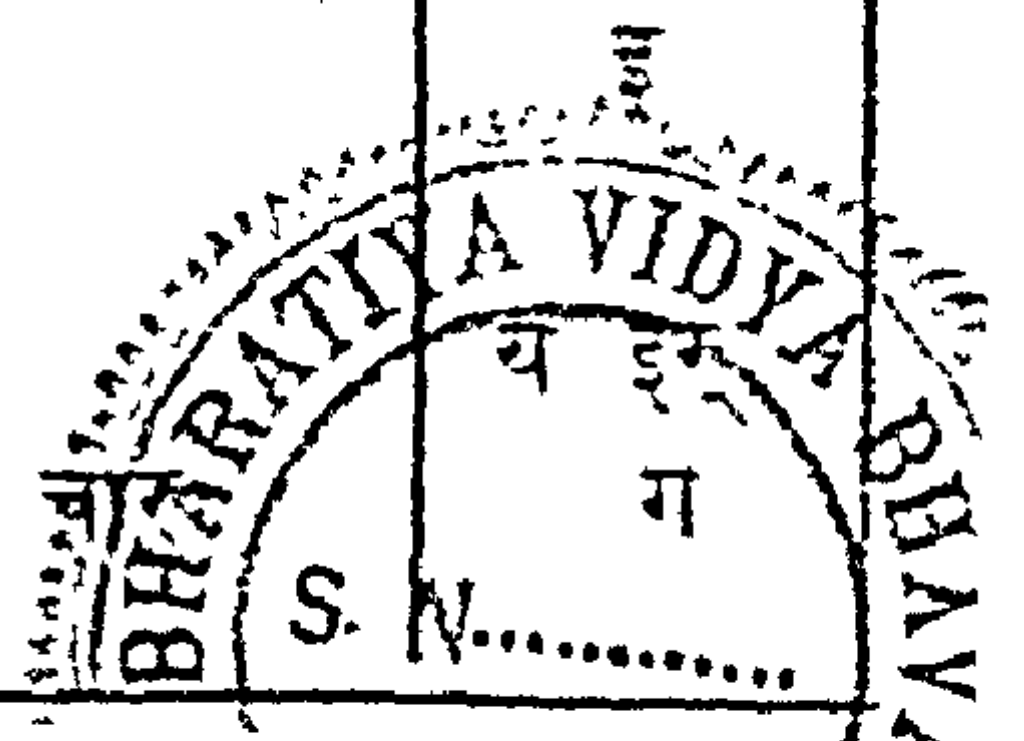
धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मम्ब्र	१	गत्यां	मम्ब्रति	
मय	१	गतौ	मयति	ङ
मर्व	१	गत्यां	मर्वति	
मर्च	१०	शब्दे	मर्चयति	क
मर्व्व	१	गत्यां हिंसायां च	मर्व्वति	
मर्व्व	१	पूरणे (त०) गतौ	मर्व्वति	
मत्र	१०	गुप्तभाषणे	मंत्रयते मंत्रिणा राजा	क ई ङ
मभ्र	१	गतौ	मभ्रति	
मल	१	धारणे	मलते माल्यं—मलः	
मल	१०	धारणे	मलयति	क त
मल्ल	१	धारणे	मल्लते मल्लः	
मव	१	बन्धने	मवति रज्ज्वा पाटच्चरं	
मव्य	१	बन्धने	मव्यति चौरं राजा	
मश	१	शब्दे (त०) कोपे	मशति मशकः	
मष	१	हिंसायां	मषति	
मष्क, मस्क	१	गतौ	मष्कते (वा) मस्कते	ङ
मस	४	परिमाणे (त०) परिणामे	मस्यति स्वर्णं स्वर्णकारः मसूरः मासः—मापः—मापकः	य इर् ई
मस्ज	६	शुद्धो (वा) स्नाने	मज्जन्ति मुनयः सर्वे	ज ङ झ ञ

धातु	गण.	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
मह	१	पूजाया	महति	
मह	१०	त्विषि	महयति	क इ
मह	१	वृद्धौ	महते	इ अ
मह	१०	पूजाया	महयति	क त
मा	२	माने	माति दडेन भूमि— प्रमाण	ल
मा	३	माने शब्दे च	धर्मं मिमीते मुनि	लि ल
मा	४	माने	मायते	य ल
माक्ष	१	काक्षाया	माक्षति	इ
माड	१	माने	माडति (वा) माडते स्वर्णे—माड	ऊ ज
माथ	१	कुथे	माथति	इ
मान	१	पूजाया जिज्ञासा या च	मीमासते शास्त्र बृज -- मीमासा	
मान	१०	पूजाया	मानयति	क
मान	१	पूजाया	मानति	
मार्ग	१०	मस्कारसर्पयो	मार्गयति	क
मार्ग	१ १०	अन्वेषणे	मार्गति (वा) मार्गयति	कि
माज्ज	१०	शब्दे (तथा) पूजार्थ	माज्जयति—माज्जार	क
माह	१	माने	माहति (वा) माहते	ऊ उ न

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मि	५	प्रक्षेपणे	मिनुति (वा) मिनुतेतृणं- वायुः	न ज डु
मिञ्	६	वाधे, उत्क्षेपे च	मिच्छति	श
मिज	१०	दीप्तौ	मिजति (वा) मिजयति	इ कि
मिथ	१	वधे, मेधायां च	मेथति	ऋ ज
मिद	१०	स्नेहने	मिदति (वा) मिदयति.	इ कि
मिद	१	गर्वे	मेदने मेदति	
मिद	४	स्नेहने	मेदति, मेदं, मेदः मेदस्	य लृ
मिद	१	स्नेहने	मेदते पुत्रे पिता	आ जि ङ
मिद	१०	स्नेहने	मेदयति	क
मिद	१	मेधाहिंसयोः	मेदते (वा) मेदति वेदं बालः	ऋ ज
मिथ	१	मेधाहिंसयोः	मेधति (वा) मेधते	ज ऋ
मिश्र	१०	संपर्के.	मिश्रयति वृत्तेनान्नं जनः	क त
मिल	६	श्लेषणे	मिलति (वा) मिलते साधुं साधुः मेलकः	श ज
मिव	१	सेके	मिवाति	इ
मिश	१	शब्दे	मेशति	
मिष	१	सेचने	मेषति	उ
मिष	६	स्पृष्टायां	मिषति कृष्णं शिशुपालः	श

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
मिह	१	सेचने	मैहति मेह — प्रमेह — मेहन	औ
मी	१ १०	गतौ मत्स्या च	मयति (वा) माययति	कि
मी	४	हिंसाया	मीयते मान	य ड टु
मी	९	हिंसाया	मीनाति (व) मीनाते रिपु	ग ज
मीम	१	गतौ	मीमति	ऊ
मील	१	निमेषणे	निमीलति भिया नेत्र	ऊ
मीव	१	स्थौल्ये	मीवति	
मुच	१०	प्रमोचने मोदने च	मोचयति कचुरु सपे	क
मुच	६	मोचने	मुञ्चति (वा) त्वामुचते देह विरक्त	श प ज लृ आ
मुञ्च	१	कलकने	मोचते	ड
मुञ्च	१	कलकने	मुञ्चते	इ ह
मुञ्च	१	गत्या	मुचनि	
मुज	१०	मृणाञ्चनयो	मोजयति	क
मुज	१	शब्दे—मृणा ञ्चनयो	मुजति मुज	क इ
मुट	१	मर्द्दने	मोटति तरु गज	
मुट	१	मर्द्दने	मुटति	इ
मुट	६	आक्षेपप्रमर्दनयो	मुटति कालीयस्य दम्प कृष्ण	श शि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मुट्	१-१०	संचूर्णने	मोटयति (वा) मोटयति- धानाःशिलया	क्रि
मुठ्	१	पलायने	मुंठते	इ ङ
मुंड	१	मुंडने	मुंडते मुंडं जलेन नापितः	इ ङ
मुड	१	खंडने	मुंडति मुंडं मुंडी	इ ङ
मुड	१	मर्शे	मुंडते	इ ङ
मुड	१०	मर्दने	मोडयति	क
मुण	६	प्रतिज्ञाने	मुणति नियमं मौनी	श
मुथ	१	कुंथे	मुंथति	इ ङ
मुद्	१	हर्षे	मोदते यशसा कविः— आमोदः	जि ङ
मुद्	१०	संसर्गे	मोदयति गुडेन धान्यं नारी, मोदकः	क
मुर	६	संवैष्टने	मुरति कंठकेन वार्टी कृ- पकः. मुरः मुरा	श
मूर्छे	१	मोहसमुच्छ्राययोः	मूर्छति मुमूर्छे सख्यं रा- मस्य	आ
मूर्ध्व	१	बन्धने	मूर्ध्वति	इ ङ
मुप	१	बधे	मोपति	इ ङ
मुष	४	स्तेये—छिदि	मुप्यति	य इ ङ
मुष	९	स्तेये	मुप्याति वनं	ग



धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
मुप, मूष	१	स्तेये	मोपति-यो मूषति परद्रव्यं	
मुस	४	खंडने	मुस्यति शंकुलया क्रमुकं	य
मुस्त	१०	संधाते	मुस्तयति मुस्ता	क
मुह	४	वैचित्ये	मूढो मुह्यति मोहेन	य उ लु नि
मू	१	बंधने	भवते चौरं राजा	ह
मूत्र	१०	प्रसवणे	मूत्रयति बालस्तल्पे-मूत्र	क त
मूल, मृल	१०	रोहणे	मूलयति जलेन वृक्षं मा- लाकारः-मूले	उ क
मूल	१	प्रतिष्ठायां संधाते च	मूलति (वा) मूलते	ज
मृ	६	प्राणत्यागे	यशः कृष्णस्य मूलं म्रियते पापेन जन्तुः	श ह
मृग	४	अन्वेषणे	मृगयति धनं भिक्षुः	य
मृम	१०	अन्वेषणे	मृगयते मृगं व्याधः मृ गया	क त ह
मृज	१	शब्दे	मर्जति	
मृज	१-१०	शौचालंकारयोः	मार्जति (वा) मार्जयति चंदनेन ललाटे नारी, मार्जयति जलेनात्मानं मुनिः	कि उ प
मृज	२	शुद्धौ	मार्ष्टिज्ञानेनात्मानं	ल उ प
मृड	६	मुखे	मृडति धर्मो लोकं	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मृड	९	सुखे	मृड्नाति गिरा शुकः	ग
मृण	६	हिंसायां	मृणाति रिपुं मृणालं	श
मृद	९	क्षौदे	मृदनाति नलिनीं गजः- विमर्दः	ग
मृध	१	उदे	मर्द्धते (वा) मर्द्धति मृधं	
मृश	६	आमर्शने	मृशति गुरुवचनं साधुः- परामर्शः	श औ
मृष	१	सेचने	मर्षति	उ
मृष	१	सहने	मर्षते दोषं हरिः	उ
मृष	१-१०	तितिक्षायां	मर्षते (वा) मर्षयते	कि उ
मृष	४	क्षमायां	मृष्यति (वा) मृष्यते	य अ
मृष	१०	क्षांतौ, सहने च	मर्षयति	क त
मृ	९	वधे	मृणाति	ग गि
मे	१	प्रतिदाने	मयते-तिलैर्धान्यं-विनि- मयः नैमेयः निमया वै- मयः विमयः	उ
मेट	१	उन्मादे	मेटाति धनेन नीचः	
मेड	१	उन्मादे	मेडति	ऋ
मेथ	१	संगे मेधायां वधे च	मेथति	ऋ ज
मेद	१	मेधाहिंसयोः	मेदति (वा) मेदते मेदः	ऋ अ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
मेध	१	संगमे वधे	मेधति (वा) मेधते स- खासखायं मेधा, मेधः	ऋ ल
मेधा	११	आशुग्रहणे	मेधायति	ट
मेप	१	गत्यां	मेपने	ङ क
मेव	१	मेवने	मेवते	क ङ
मोक्ष	१-२०	असने	मोक्षति (वा) मोक्ष- यतिशरंशूरः	किं
म्रा	१	अभ्यासे	मनति वेदं शिशुः आ- म्नायः	
म्रक्ष	१	संघाते	म्रक्षतिजलेनान्नं	
म्रक्ष	१०	म्रक्षणे म्लेछने च	म्रक्षयतिरजसादेहैकृष्णः	क
म्रच	१	गतौ	म्रचति	
म्रड	१	उन्मादे	म्रडति	क
म्रद	१	मर्दने-क्षोदे च	म्रदते बलं बली	ङ
म्रुच	१	गत्यां	म्रोचति	इर उ
म्रुच	१	गतौ	म्रुचति	
म्रेट	१	उन्मादि	म्रेटति धनेन नीचः	क
म्रुंच	१	गतौ	म्रुंचति	
मुच	१	गतौ	मुचति	इर उ
मुच	१-१०	अव्यक्तायांवाचिदे इगोक्तौ च	मुचति (वा) म्लेछयति म्लेछः	किं

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
उन्मादे	१	उन्मादे	उन्मादेति धनेन नोत्रः	ऊ
उन्मादे	१	उन्मादे	उन्मादेति	ऊ
सेवने	१	सेवने	सेवते	ऊ इ
कान्तिसंक्षये	१	कान्तिसंक्षये	मुपयति, उपमुपयति, प्रमुपयति	
गात्रविनामे	१	गात्रविनामे	मुयति पुष्पंवातेन मुनिः	
पूजायां	१०	पूजायां	यक्षयते	क इ
इवपूजासंगतिकरः णद्गनेषु	१	इवपूजासंगतिकरः णद्गनेषु	यजति हरिं—यजतिताप- सं साधुः पशुना शिवं यजते	ए औ ज
प्रयत्ने	१	प्रयत्ने	यततेमूकायनरः	इ इ
निकारोपस्कारयोः	१०	निकारोपस्कारयोः	यातयतिशत्रुं वली—यात- यति स्नानेन देहं यतिः	क
मैथुने	१	मैथुने	यत्नति	
मैथुने	१	मैथुने	यभति	औ
उपरमे	१	उपरमे	यच्छतिपापात्साधुः	औ उ
परिवेषणेष्टने	१	परिवेषणेष्टने	यामयत्यन्तंविप्रायसाधुः— यमयति विमार्गात्प्रजां- राजा	क
संकोचने	१०	संकोचने	यंत्रयति यंत्रेण खलं रा- जा—यंत्रं	क इ

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
यस	४	प्रयत्ने	यस्यति धनाय नर प्र	य उ इरू
या	२	प्रापणे, गतौच	यास	
याच	१	याञ्जाया	याति	ल
			याचति (वा) याचते	क टु डु व
			धन याचक	
यु	२	मिश्रण, मिश्रणयो	यौति घृतेनान्न यौति ख	ल
			ग्नेभ्य साधु यव याव	
यु	९	बधे	युनाति (वा) युनीते	ग न
यु	१०	जुगुप्साया	यावयते वृद्ध युवति	क ङ
			यौति	
युग	१	वर्जने	युगति	इ
युछ	१	प्रसादे	युछति	
युज	१ १०	मयमने	योजति (वा) योजय	कि
			ति हले वृष गोप	
युज	७	योगे	युनक्ति (वा) युक्ते यो-	य न इरू औ
			गयोगी योग	
युज	४	ममार्थी	युज्यते गुहाया योगी	य ङ औ
युज	१०	नन्दे	योजयते	व ङ
युत	१	भासने	योतते	ऊ ङ
युध	४	मप्रहारे	युध्यत योध — युद्ध	य ङ औ
युप	४	ल्यारुत्वे	युप्यति	य इरू

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
यूष	१	हिंसायां	यूषयते	क इ
येष	१	प्रयत्ने	येषते	कृ ङ
यौट, यौ-	१	संबन्धे	यौटति (वा) यौटति-	कृ
ट, यौड			स्वमणीं कृष्णः	
रक	१०	आस्वादने (त	राकयति मोदकं बालः	क
		था) आपने		
रक्ष	१	पालने	रक्षति, रक्षा	जि
रख	१	गत्यां	रखति	
रख	१	गत्यां	रंखति	इ
राख	१	शोषणाद्यर्थयोः	राखति हिमेन वृक्षः	कृ
रग	१०	स्वादि आसौ च	रगयति	क
रग	१	शंकायां	रगाति साधुः—खलेभ्यः	म ए
रग	१	गतौ	रंगति	इ
रघ	१०	भासि	रंघयति	क इ
रघ	१	गतौ	रंघते रघुः	क इ
रघ	१०	आस्वादने	राघयतिलेह्यं करेण कुमारः	क
रच	१०	प्रतिपत्ने, कृत्यां	रचयति	क त
रंज	१	रागे	रजनि (वा) रजंत्यु-	म ओ ज
			वायुवर्तौ (यथा) रज-	
			कः-रागः-रक्तः-जानं	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुव
रञ	४	रागे	रज्यति (वा) रज्यते- वत्सं रंगकारः	य ज औ म
रट	१	वाचि	रटतिकाक.	
रट	१०	परिभाषणे	रटयति विराटः	क
रठ	१	भाषणे	रठति	
रण	१	गतौ	रणति रणः	म
रण	१	शब्दे	रणति	
रद	१	विलेखने	रदतिभूवनं वराहः रदन	
रघ.	४	हिंसायां (त०) पाकेसराद्धौ च	रध्यति पाशंडी वैदिकं- विराधः	य लृ उ
रप	१	व्यक्तायां वाचि	रपति	
रफ	१	गत्या (त.) षधे	रफति	
रफ	१	गत्यां (त.) षधे	रम्फति	इ
रव	१	शब्दे	रंवते	इ इ
रव	१	गतौ	रंवति	इ इ
रभ	१	रामस्य	रभने ब्रजे कृष्णः सुरभि (आउपसर्गे) आरभते पठितुं	औ इ
रभ	१	शब्दे	रंभते	इ इ
रम	१	क्रोडायां	रमते	उ इ ज औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
रम	१०	क्रीडायां	रमयति (विउपसर्गे) विरामयति	
रय	१	गर्तौ	रयते रयः	ङ
रर्क	१	गतिवधयोः	रर्कति	
रव	१	व्रजे	रंवति	इ
रस	१	शब्दे	रसति	
रस	१०	आस्वादनेस्त्रहने च	रसयति रसनयाद्राक्षार- सिकः	क त
रह	१	त्यागे	रहतिगृहं विरक्तः, वि- रहः, रहरहम्	
रह	१०	त्यागे	रहयति गेहं विरागी	क त
रह	१	गर्तौ	रंहयतिवायुः, रंहः, रं- हम्. रंहसा	इ
रंह	१०	गर्तौ—त्विति च	रंहयति	क त
रा	२	दाने (त.) आदाने	राति धनं विप्राय	ल
राव	१	मामर्थ्ये	रावतेयुध्यायवीरः	क ञ
राज	१	दीप्ता	राजते (वा) राजति राजा	क ञ
राध	४	संसिद्धौ	राध्यति ज्ञानेन यतिः	य औ
राध	५	संसिद्धौ	राध्नाति योगेन मुनिः	न औ

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
राश	४	शब्दे	राश्यते पक्षी	य ड ऋ
रास	१	शब्दे	रासते	ऋ ड
रि	५	हिंसायां	रिणाति मलिम्लुचः पाथं	न
रि	६	गतौ	रियति	श
रिग	१	गतौ	रिंगति रिगणं	इ
रिच	१-१०	वियोजनसंपर्चन- योः	रेचाति (वा) रेचयति राज्यं रिपोः रेचयति ह- रितक्यारोगी	कि
रिच	७	विरेचने	रिणाक्ति (वा) रिक्ते- रोगी-विरेकः	ध ज इ रू औ
रिज	१	ऋज्यर्थे	रेजते	ड
रिफ	६	कत्थनयुद्धनिंदा- हिंसादानेषु	रिफति रिपुंशूरः-रेफः- फा-फं	श
रिम्फ	६	वधे	रिम्फति	श प
रिव	१	व्रजे	रिवति	इ
रिश	६	हिंसायां	रिशति	श औ
रिष	१	हिंसायां	रेपाति	
रिष	९	विप्रयोगे	रिष्णाति संन्यासी संवे- धिम्यः-	ग
रिह	६	कत्थनयुद्धनिंदा- हिंसादानेषु	रिहति दुर्जनः साधुं	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
री	४	स्त्रवणे	रीयते जलं वटात्	य ड औ
री	६	रेपणे वधे गतो च	रीणाति	ग मि
री	२	प्रजनने	रेति नारी	ल
रु	२	शब्दे	रैति	ल टु
रु	१	रोपे, वधे, गत्यां च	रवते चौरायराजा—रवः रविः	ड
रुक्ष (वा)	१०	पारुष्ये	रुक्षयतिदुष्टः रुक्षः—क्षा-	क त
रुक्ष			क्षं	
रुच	१	वृत्तौ प्रीतिप्रका-	रोचते गोरोचना	ल ठ
		शयोः		
रुज	६	रोगे, भंगे, मंगे च	रुजति रोगेन हस्तः	श ओ औ
रुज	१०	हिंसे	रोजयति	क
रुट	१	प्रतिवाते (त)	रोटने	ल ङ
		दीप्तौ		
रुट	१०	रूपे घृत्तौ च	रोटयति	क
रुट, रुडच	१	स्तेये	रुटति धनं	इ
रुट	१	उपवाते	रोटति कलिधर्मं	
रुट	१	प्रतिवाते	रोटने	कृ ङ
रुट	१	गत्यान्वस्यास्तेय-	रुटनि	इ
		भोटे		
रुद	२	अश्रुविमोचने	रोदीत रोदनं	ल य इरू

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
रुद	१	चेष्टाया	रुदति सुखाय	इ
रुध	४	अभिलाषे	(अनुउपसर्गे) अनुरध्य ते कृष्ण गाप्य (यथा) अनुरुध्यति	य ङ औ [र, औ
रुध	७	आवरणे (त) रुन्धे	रुणद्धि गोपां गा गोष्ठे	ध, ज, जि, इ
रुप	४	व्याकुलत्वे	रुप्यति	य इ र
रुश	६	हिंसाया	रुपति	श औ
रुश	१०	दीप्तौ	रुशयति (वा) रुशति	इ वि
रुप	१	हिंसाया	रोपति	
रुप	४	रोपे प्रतिधाते च	रुप्यति रोप	य इ रू जि
रुप	१०	रोपे	रोपयति रोप	क
रुह	१	जन्मप्रादुर्भावयो	रोहतिमृत्तिकाया घट रो हति विष्णुर्मेमया	जि ज आ
रूप	१०	रूपक्रियाया	रूपयति गात्रविगर्सीनी रूप, निरूपण	क त
रूप	१	भूषाया	रूपतिशरीरमङ्गरणेन मुग्धा प्रियार्थं	
रेक	१	शकाया	रेकते	क ङ
रेग	११	रुग्णामादनयो	रेसायति यानक म्वार्थं गनिन	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
रुद	१	चेष्टायां	रुंदति सुखाय	इ
रुध	४	अभिलाषे	(अनुउपसर्गे) अनुरुध्य- ते कृष्णं गोप्यः (यथा) अनुरुध्यति	य ङ औ [र, औ
रुध	७	आवरणे (त) रुन्धे	रुणाधि गोपां गां गोष्टे	ध, ज, जि, इ
रुप	४	व्याकुलत्वे	रुप्यति	य इ र
रुश	६	हिंसायां	रुपति	श औ
रुश	१०	दीप्तौ	रुशयति (वा) रुशति	इ कि
रुप	१	हिंसाया	रोपति	
रुप	४	रोपे प्रतिघाते च	रुप्यति रोपः	य इ र् जि
रुप	१०	रोपे	रोपयति रोपः	क
रुह	१	जन्मप्रादुर्भावयोः	रोहति मृत्तिकाया घटः रो- हति विष्णुर्देवक्या	जि ज आ
रूप	१०	रूपक्रियायां	रूपयति गात्रं विलासीनी- रूपं, निरूपणं	क त
रूप	१	भूपायां	रूपति शरीरमलंकरणेन- मुग्धा प्रियार्थं	
रेक	१	शंकायां	रेकते	क ङ
रेखा	११	स्नात्वासादनयोः	रेखायति याचकः स्वार्थ- यानेन	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
रेज	१	दीप्तौ	रेजते	ऋ ङ
रेट	१	परिभाषणे, याचनेच	रेटति (वा) रेटते	ऋ ङ
रेप	१	शब्दे, गमनेच	रेपते	ऋ ङ
रेभ	१	शब्दे	रेभते	ऋ ङ
रेव	१	प्लवेगतौच	रेवते रेवा रेवती	ऋ ङ
रेष	१	अव्यक्ते शब्दे	रेपते रेषा	ऋ ङ
रै	१	शब्दे	रायति	
रोड	१	अनादरे उत्सादेच	रोडति खलः सार्धं	ऋ
रौट	१	अनादरे	रौटति	ऋ
रौड	१	अनादरे	रौडति	ऋ
लक	१०	आस्वाद्यने (त.) आपने	लाकयति	क
लक्ष	१-१०	दर्शनांकनयोः	लक्षयति (वा) लक्षय- ते-लक्षणं	क इ
लक्ष	१०	आलोचने	लक्षयते	क ङ
लख	१		लखति	
लख	१		लंखति	इ
लग	१	संगे	लगाति धर्मे विप्रः लग्नं	म ए
लग	१०	स्वादापने	लगयति	क
लग	१	गतिस्त्रंजयोः	लंगति	इ
लघ	१	गतौ अभुग्त्योः	लंघते	इ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लघ	१	शोषणे-गतौ	लंघति मर्यादां लंघति पापी	इ
लघ	१०	मापार्ये-त्विषि	लंघयति	क इ
लृञ	१	लक्षणे	लृञति चक्रेण गृहं	
लज	१०	अन्तर्द्धौ	लजयति	क
लज	१०	भानिकैतनहिंसाव- लदानेषु	लंजयति	क इ
लज	१०	प्रकाशने	लजयति विद्यां विप्रः न्याजा	क त
लज	१	भर्त्सने	लजति	
लज	१	भर्त्सने	लंजनि	इ
लज	६	ब्रीडे	लजति (वा) लजते वधूः	श ज इ ओ
लंज	१०	भासने	लंजयति	फ त
लृट्	१	बाल्ये बाल्योक्तौ	लृटति स्वार्थे लोकः	
लृट्	१	विलासे	लृडति	
लृट्	१	जिह्वोन्मथने	लृडयति रसनां परद्रव्ये नोरः	म
लृट्	१०	उपसेवायां	लृडयति शिशुं माता	क
लृट्	१०	लोप्सायां	लृडयते	क क
लृट्	१-१०	मापणे मासनेच	लृडति (वा) लृडयति	कि इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरणं.	अनुबन्ध.
लङ्	१-१०	उत्क्षेपे	लङ्घति (वा) लङ्घयति.	क्रि इ औ
लङ्	१०	आक्षेपे	लङ्घयति	क त
लप	१	व्यक्तायांवाचि	लपति विलापः प्रलापः आलापः अनुलापः वि- प्रलापः संलापः सुप्रलापः अपलापः	ऋ
लव	१	अवसंसने अवलंब- ने शब्देच	लवते शस्त्रायां	इ ङ
लभ	१	शब्दे	लभते	ई ऋ
लभ	१	प्राप्तौ	लभते भिक्षां लाभः सु- लभः भा भं लभन्ति पुन- रुत्थानं	इ ष डु औ
लय	१	गतौ	लयते	ङ
लर्व	१	गतौ	लर्वति शकटेन गोकु- लात् मथुरानंदः	
लल	१०	ईप्सायां	लालयते मृतं बाला	क ङ
लश	१०		(इतिलस)	
लप	१	क्रान्तौ	लपति (वा) लपते धर्म- साधुः	ञ
लष	४	क्रान्तौ	लष्यति (वा) लष्यते	य ञ
लष	१०		(इतिलस)	

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
लस	१	श्लेषणविलसयो	लपति विलसति विनास	
लस	१०	शिल्पयोगे	लासयति नटो बाला	क
लज्ज	६	व्रीडे	लज्जते वधु लज्जा लज्जि त—ता—त	श ड इ ओ
ला	२	दाने आदानेच	लाति	ल
लास	१	शोषणालम्भयो	लासति हिमेन वृक्ष	ऋ
लाघ	१	सामर्थ्ये	लाघते	ऋ ड
लाछ	१	लक्षणे	लाछति	इ
लाज	२	भर्त्सने भर्गेच	लाजते	इ ह
लाज	१	भर्त्सने भर्गेच	लाजति	
लाट	११	जीवने	लाट्यति जीवनात्मधसा	ट
लाड	१०	आक्षेपे	लाडयति	क त
लाभ	१०	प्रेरणे	लाभयति लाभाय सूत वैश्य लाभ	क त
लिख	१	गतौ	लेखाति	
लिख	६	लेखने	लिमति लेखरो ग्रथ ले खन लिखन लेखा लेखनी	श
लिग	१	गतौ	लिगति	इ
लिग	१	वित्रोकरणे	लिगयति पट रगकार	क इ
लिट	११	अलङ्कृतसनयो	लिह्यति पितरिपुत्र	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लिप	६	उपदेहे	लिपति (वा) लिपते देहं चंदनेन जनः	श प ब नि औ
लिश	६	गतौ	लिशति	श औ
लिश	४	अल्पीभावे	लिश्यते देहो रोगेन, ले- शः, लिष्टः, टा टं	य ङ औ
लिह	२	आस्वादने	लेढि (त.) लीढे गुडं वालः	ल व औ
ली	१-१०	द्रवीकरणे	लयति (वा) लाययति- बन्धिनाघृतं होता	कि
ली	४	श्लेषणे	लीयते लज्जया भूमिनारी	य ङ
ली	९	श्लेषणे	लीनाति पतिनारी	ग गि
लीड	१	उन्मादने	लीडति	क
लुञ्च	१	अपनयने	लुञ्चति	
लुञ्ज	१०	भानिकेतनहिंसाव- लदानेपु	लुञ्जयति	क इ
लुट	१	विलोडने	लोडति भूमौ	
लुट	४	विलाडने	लुट्यनि रावणः पुत्रशो- केन	य ल ऋ
लुट	१	प्रतिघाते	लोडते विरहेण भूमौ रामः	ङ ल
लुट	६	संश्लेषणे	लुटति	श शि
लुट	१०	भाषार्थे भासार्थेच	लोडयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
लुट् लुंठ	१ १-१०	स्तेये स्तेये (त०) अ- वज्ञायांच	लुंठति धनं लुंठति (वा) लुंठयति	इ कि
लुठ	१	उपधाते	लोठति कलिर्धर्म	
लुठ	१	प्रतिधाते	लोठते विरहेण भूमौ रामः	लृ ङ
लुठ	१	लोठे	लुठति	श शि
लुठ	१०	चौर्ये	लोठयति	क
लुठ	१	आलस्ये (त.) गत्यालस्यस्तेयखो- टेषु	लुंठति	इ
लुड	१	मन्यने	लोडति	
लुड	१	संवृत्तौ, श्लिषे	लुडति	श शि
लुण्ड, लुड	१०	चौर्ये	लुण्डयति	क
लुथ	१	हिंसासंश्लेशयोः	लुन्थति रावणं रामः रा वणशरेण रामो न लुन्थति	इ
लुप	४	व्याकुलत्वे	लुप्यति	य ई र
लुप	१	लेदने	लुपाति (वा) लुपते का- ष्ट वद्धीकः लोपः लुप्तः ना तं	श ष न ङ लृ औ
लुष	१-१०	अर्दने-अदर्शने	लुंषति (वा) लुंषयति	कि इ

धातुः	गणः	अर्थः	उदाहरणः	अनुबन्धः
लुम	४	गाध्यै	लुम्याति पुत्रवंध्या लो- भः लुब्धः घा घं	य
लुम	६	विमोहने	लुभाति मूढं मायिकः	श
लुप, लूष	१०	हिंसायां (त०)	लोषयति	क
लुप, लूष	१	स्तेये	लोपते	क
लुह	१	गाध्यै	लोहति	औ
लू	९	छेदने	लुनाति (वा) लुनीते	ग जि व
लृञ्च	१	अपनयने	लृञ्चति	
लेख	११	विलासेस्वलनेच	लेख्याति धूर्तो मनसि	ट
लेखा	११	विलासे स्वलनेच	लेखायति द्विजोऽतिमो- जने	ट
लेट	११	धौत्ये-पूर्वभावेस्व- नेच—	लेटयति कामुकः प्रिय- याक्षपायां	ट
लेप	१	गमने शब्देच	लेपते	ह
लेला	११	दीप्तौ	लेलायति	ट
लोक	१	दर्शने	लोकते	कृ क
लोक	१०	भाषार्थे दीप्तौच	लोकयते	क क कृ
लोच	१	दर्शने	लोचते	कृ क
लोच	१०	भाषार्थे त्रिषु	लोचयति	क कृ
लोट	१	उन्मादे	लोटति	कृ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लोट	११	धौर्त्य-पूर्वभावे	लोढ्याति धूर्तः	ट
लोष्ट	१	संघाते	लोष्टते धान्यं लोष्टः	क
लौड	१	उन्मादने	लौडति	क
ल्यी	९	श्लेषणे	ल्यीनाति	ग मि
ल्वी	९	गत्यां	ल्वीनाति	ग मि
वक	१	कौटिल्ये	वंकते वंकः	इ क
वक्क	१	गतौ	वक्कते	क
वक्ष	१	रोषे (त०) सं हर्तौ.	वक्षनि शिभु वक्षः	
वख	१	गतौ	वखति	
वख	१	गतौ	वंखति	इ
वग	१	गतौ-खञेच	वंगति	इ
वघ	१	गतौ-गत्याक्षेपेच	वघते	इ क
वच	१	वाचि	वचति	औ
वच	२	परिभाषणे	वक्ति	ल औ
वच	१०	संदेशने	वाचयति पत्रं कृष्णाय रुक्मिणीवाचिकः	क
वच	१	एकचर्यायां	वंचते	इ क
वंच	१	गत्यां	वंचति	ल
वंच	१०	प्रलम्बने वंचनेच	वंचयते वंचना	क
वज	१	गतौ	वजति	क

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वट	१	परिभाषणे	वटति	म
वट	१	वेष्टने	वटति कंटकने वार्टी	
वट	१०	अंथे	वटयति माल्यं मालाकारः वेष्टनं वाटयति	क त
वट	१०	विभाजने	वटयति भूमिं ग्रामिकः	क त
वट	१-१०	विभाजने	वंटति (वा.) वंटय- ति धनं	क इ
वंट	१०	भागे	वंटयति	क त
वठ, वठ	१	स्थौल्ये	वठति	
वठ	१	एकचर्यायां	वंठते	इ ङ
वड	१०	विभागे	वंडयति	क इ
वड	१	वेष्टने (त.) वि- भागे	वंडते कंटकैर्वार्टी	इ ङ
वण	१	शब्दे	वणाति	कृ
वद	१	व्यक्तायांवाचि	वदति संवत्	ऐ
वद	१-१०	भाषणे संदेशव- चने	वदते (वा) वादयते	कि ङ
वद	१	स्थैर्ये	वदति मेरुः	
वद	१	अभिवादनस्तुत्योः	वन्दते हरिं वन्दना	इ ङ
वध	१	हिंसायां	वधति	
वन	१	हिंसायां	वनति	उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वन	१	संभक्तौ (त.)	वनति	
वन	१-१०	शब्दे उपकृतौ श्रद्धा शब्दे उपधा- नेन	वनति (वा) वनयति	कि
वन	१	व्याप्तौ	वनयति—परिउपसर्गे प- रिवानयति	म उ
वन	८	याचने	वनुते भिक्षुः	द ङ उ
वप	१	बीजतंतुसंताने (तथा) मुण्डे	वपति बीजं सत्क्षेत्रे पटं- वपते तन्तुवायः उत्तः ता तं	दृ ए औ अ
वम	१	उद्गिरणे	वमति शोणितं	दृ उ अ
वय	१	गतौ	वयते	ङ
वर	१०	इप्सायां	वरयति वरं स्वयंवरं वराः	क त
वरण	११	गतौ	वरण्याति	ट
वर्ष	१	गत्यां	वर्षति	
वर्च	१	क्षोभे	वर्चते	रु
वर्ष	१०	वेदनपूरणयोः	वर्षयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वर्ण	१०	वर्णक्रिया विस्तार- गुणवर्णने वचने प्रे- रणेच	वर्णयति वर्णः	क त
वद्ध	१०	पूर्तिछेदोः	वद्धयति	क
वर्ह-वर्ह	१-१०	भाषार्थे त्विषि	वर्हति (वा) वर्हयति	कि
वर्ह-वर्ह	१	श्रैष्ठ्ये	वर्हते	क
वर्ह-वर्ह	१०	हिंसायां (त.) दीप्तौ	वर्हयति वर्ह	क
वभ्र	१	गतौ	वभ्राति	
वल	१	संवरणे	वलते धनं	क
वल्लु	१	संवरणे	वल्लते वाल्लिः वल्लभः	
वलभ	१	भोजने	वलभते	क
वल्क	१०	भाषणे	वल्कयति वल्कः वल्कः	क
वला, वला	१	व्रजे	वल्गाति	क त
वल्गु	११	पूजामाधुर्ययोः	वल्गूयति द्विजोऽतिवै- भवेन	ट
वल्गुल	१०	लूनिपूत्योः	वल्गुलयति	
वल्ह, वल्ह	१	त्वि. षि	वल्हयति	क
वल्ह, वल्ह	१	श्रैष्ठ्ये	वल्हते	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वश	२	कान्तौ	वाञ्छि वशः तस्य वशे	ल
वष	१	हिंसाया	वशा	
वष्क(वा)	१	गती	वषति	ल
वस्क	१०	स्नेहनछेदनहन-	वस्कते	क
वस		नेषु	वासयति पुत्रं पिता वा- सयति वृक्षं तक्षां वास यति चोरं राजा	
वस	१	निवासे	निवसति (वा) वसते	ऐ व औ
			चित्ते हरिः, निवास.	
वस	१०	निवासे	वसयति	क त
वस	२	आछादने	वस्ते मुखं हस्तेन वस्त्रं	ल ल
वस	४	स्तम्भे	वस्यति मनो मुनि	य उ इ र
वस्त	१	अर्दने	वस्तयते	क ह
वह	१	प्रापणे	वहति मानं शकटमुवा- ह वृषः वहते प्रवाहः प्र वहः	ऐ व औ
वह, वह	१	वृद्धौ	वंहते	इ ल
वह	१०	द्युतौ	वंहयति	क इ
वा	१०	सुखासंगतिसेवासु	वापयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वा	२	गतिगन्धनयोः गमनहिसयोः	वातिवायुः	ल
वाक्ष	१	कांक्षायां	वांक्षति वांक्षा	इ
वाञ्छ	१	इच्छायां	वाञ्छति वाञ्छा	इ
वाड	१	आप्लावे प्रीतौ च	वाडते गंगायां मुनिः च- क्रवालं	ऋ ङ
वात	१०	सुखसेवनयोः गतौ	वातयति व्यजनेन पतिं पतिव्रता	क त
वाध, वाध	१	विलोडने	वाधते साधुं खलः वाधा	ऋ ङ
वाश	४	शब्दे	वाश्यते	य ऋ ङ
वास	१०	उपसेवायां	वासयति गृहं धूपः	क त
वाह	१	प्रयत्ने	वाहते वाहं	ऋ ङ
विच	७	पृथग्भावे	विनक्ति (वा) विक्ते धनं भ्राता विवेकः	थ लि अ इ र औ
विछ	६	गतौ	विछति	श
विछ	१०	भाषार्थे, त्विषिच	विछयति	क
विज	३	पृथग्भावे	विवेक्ति देहादात्मानं वि- वेकने	लि इर् औ
विज	६	भयचलनयोः	उद्विजते खलात्साधुः, वे- गः, उद्वेगः	श ङ ई औ
विज	७	भयचलनयोः	विनक्ति लोकः	ध ई ओ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
विट	१	शब्दे (त.) आक्रोशे	वेद्यति	
विट	१०	सित्यां	विंढयति	क इ
विड, विड	१	आक्रोशे	वेडति विडालः	
वित्त	१०	त्यागे	वित्तयति	वित्तं क त
विथ	१	याचने	वेथते धनिनं भिक्षुः	क इ
विद्	२	ज्ञाने	वेत्ति विष्णुं बुधः	वेदः ल
विद्	७	विचारणे	विन्ते ब्रह्मविवेकी	ध इ औ
विद्	४	सत्तायां	विद्यते	य इ ओ
विद्	६	लाभे	विंशति (वा) विंदते पु- ण्यं दाता	श, प, म, ल, औ
विद्	१०	वेदनाख्यानविवा- सेषु	वेदयते दुःखं भिक्षुः	क इ
विध	६	विधाने	विधाति विश्वं वेधाः विधिः	श
विष	१०	क्षेपे	वेपयति	क
विल	६	वेदने (त.) स्तूतौ	विलति तरुं हस्ती विलं (इति विलः)	श
विश	६	प्रवेशे	विशति	विवेश श औ
विष	१	सेचने	वेपाति	वेपः उ
विष	३	व्याप्तौ	वेवोष्टि (वा) वेविष्टे विश्वं विष्णुः	लि इर औ
विष	९	विप्रयोगे	विष्णाति	ब ल ग औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
विष्क	१०	हिंसायां	विष्कयति	क
विस	४	प्रेरणे	विस्यति विसं विशं	य उ
वी	२	कांतिगतिव्याप्ति- क्षेपप्रजननसादनेषु	विषं वेति	ल
वीज	१०	व्यजने	वीजयति	क त
वीभ	१	कत्थने कत्थन- श्लाघा	वीभते	ऋ ङ
वीर	१०	विक्रान्तौ	वीरयति वीरः	क त उ
वुग	१	त्यागे	वुंगति खलं साधुः	इ
वुट, वुट	१-१०	हिंसे	वोटति (वा) वोटयति	कि
वुस, वुस	४	उत्सर्गे	वुस्यति कंचुकं सर्पः वुसं	य
वृ	६	वरणे	वृणोति (वा) वृणुते व- रंकन्या	न व
वृ	९	वरणे	वृणाति	ग
वृ	९	संमक्तौ	वृणीते विष्णुं विवेकी	ग ङ
वृ	१	आवरणे	वरति (वा) वरते	अ
वृ	१०	आवरणे	वारयति	क
वृक	१	आदाने	वृकते वृकः	ङ
वृक्ष	१	वरणे संवातेच	वृक्षते कन्या वरं वृक्षः	ङ
वृच	७	वृत्तौ	वृणक्ति	घ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृज	१-१०	वर्जने	वर्जति (वा) वर्जयति	कि
वृज	२	वर्जने	वृक्ते कपटं साधुः	ल ङ इ
वृज	७	वर्जने (त.) वृत्तौ	वृणाक्ति स्त्रलं शिष्टः	घ ङ्
वृञ्	९	मुखे	वृङ्णाति	ग
वृण	६	प्रोणने	वृणति	श
वृण	८	भक्षे	वृणोति (वा) वृणते	द अ उ
वृत्	१	वर्त्तने	वर्त्तते वार्त्ता	व उ ङ लृ
वृत्	४	सम्भक्तौ	वरणे वृत्त्यते	य ङ उ
वृत्	१०	भाषार्थे त्रिषि	वर्त्तयति	क उ
वृध	१०	भाषार्थे दोस्तौ	वर्द्धयति	क
वृध	१	वृद्धौ	वर्द्धते धर्मण	य ङ व लृ
वृष	१	सेचने (त०) प-जनैश्चर्ययोः	वर्षति वृषः	उ
वृष	१०	शक्तिबंधने सेचने-प्रजने ऐश्येच	वर्षयते सपं मंत्री	क ङ
वृह	१-१०	भाषार्थे-द्युतौ	वृंहति (वा) वृंहयति	कि इ
वृह	१	वृद्धौ ध्वनौ	वृंहति वृंहितं	इ ङ
वृह	६	उद्यमे	वृहति वैश्यः	श ङ
वृह	१	वृद्धौ	वर्हति	
वृह	१	जनद्वयोः	वर्हति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृ	९	वरणे (अथवा) भरणे	वृणाति (वा) वृणीते	ग ज
व	१	तंतु संताने	वयति (वा) वयते वस्त्रं तंतु- वायः	ए ज
वेण	१	ज्ञानचिंतानिशाम- नेषु	वेणाति (वा) वेणते	ऋ ज
वेथ	१	याचने	वेथते वेथितः-वेथः	ऋ ङ
वेद	११	धौर्त्ये, स्वप्ने च	वेद्याति ज्ञानी विषयेषु	२
वेन	१	गतिज्ञानचिंतानि- शामनवादित्रग्रहण- चलनेषु	वनति तपस्व्यत्यभ्यासेन	ऋ
वेप	१	चलने	वेपते वातेन वृक्षः	ऋ टु ङ
वेल	१०	कालोपदेशे	वेलयति दिनं गणकः-वेला	क त
वेल	१	गतौ	वेलति वेला	ऊ
वेळ	१	गतौ	वेळति	
वेळ्ळ	१	चाले	वेळ्ळति	ङ
वेवी	१	कांतिगतिव्याप्ति- क्षेपप्रजनखादनेषु	वेवीते	लु ङ र क्ष
वेष्ट	१	वेष्टने	वेष्टते	ङ
वेस	१	गतौ	वेसाति	इ र
वेह	१	प्रयत्ने	वेहते वेहत्	ऋ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृज	१-१०	वर्जने	वर्जति (वा) वर्जयति	कि
वृज	२	वर्जने	वृक्ते कपटं साधुः	ल ह इ
वृज	७	वर्जने (त.) वृत्तौ	वृणक्ति स्त्रल शिष्टः	ध ई
वृड	९	मुखे	वृङ्णाति	ग
वृण	६	प्रोणने	वृणति	श
वृण	८	मक्षे	वृणोति (वा) वृणुते	द व उ
वृत	१	वर्त्तने	वर्त्तते वार्त्ता	व उ ङ लृ
वृत	४	सम्भक्तौ	वरणे वृत्त्यते	य ङ उ
वृत	१०	भाषार्थे त्रिषि	वर्त्तयति	क उ
वृध	१०	भाषार्थे दीप्तौ	वर्द्धयति	क
वृध	१	वृद्धौ	वर्द्धते धर्मेण	य ङ व लृ
वृष	१	संचने (त०) प	वर्षति वृष	उ
		जनैश्चर्ययोः		
वृष	१०	शक्तिवधने संचने—	वर्षयते मर्ष मंत्री	क ङ
		प्रजने ऐश्येच		
वृह	१-१०	भाषार्थे—श्रुतौ	वृंहति (वा) वृंहयति	कि इ
वृह	१	वृद्धौ ध्वनौ	वृहति वृंहितं	इ
वृह	६	उद्यमे	वृहति वैश्यः	श उ
वृह	१	वृद्धौ	वर्हति	इ
वृह	१	ध्वनद्ध्वयोः	वर्हति	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्धः
वृ	९	वरणे (अथवा) भरणे	वृणाति (वा) वृणीते	ग ज
व	१	तंतु संताने	वयति (वा) वयते वस्त्रं तंतु- वायः	ए ज
वेण	१	ज्ञानचिंतानिशाम- नेषु	वेणाति (वा) वेणते	ऋ ज
वेथ	१	याचने	वेथते वेथितः-वेथः	ऋ ह
वेद	११	धौर्त्ये, स्वप्ने च	वेद्यति ज्ञानी विषयेषु	२
वेन	१	गतिज्ञानचिंतानि- शामनवादित्रग्रहण चलनेषु	वनति तपस्यत्यभ्यासेन	ऋ
वेप	१	चलने	वेपते वातेन वृक्षः	ऋ टु ह
वेल	१०	कालोपदेशे	वेलयति दिनं गणकः-वेला	क त
वेल	१	गतौ	वेलति वेला	ऊ
वेल्ल	१	गतौ	वेल्लति	
वेह्ल	१	चाले	वेह्लति	ह
वेवी	१	कांतिगतिव्याप्ति- क्षेपप्रजनखादनेषु	वेवीते	लु ह र क्ष
वेष्ट	१	वेष्टने	वेष्टते	ह
वेस	१	गतौ	वेसाति	इ र
वेह	१	प्रयत्ने	वेहते वेहत्	ऋ ह

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वै	१	शोषणे	वायति	औ
व्यच	६	व्याजीकरणे (त.) सम्भवे	व्यचति साधुं धूर्तः	श शि
व्यथ	१	दुःस्वभयचलने	व्यथते पापात्साधुः व्यथा	थ म ङ
व्यध	४	ताडने	विध्यति व्याधो मृगं	य औ
व्यप	१०	क्षये	व्यपयति	क
व्यय	१	गतौ	व्ययति (वा) व्ययते	य
व्यय	१०	क्षेपे	व्याययति	क
व्यय	१०	वित्तसमुत्सर्गे	व्ययति धनं व्ययशौलः	क त
व्युप	१०	उत्सर्गे	व्योपयति रोगवानौषधं	क
व्युस	४	हानौ-दाहेच	व्युस्यति	य ईर्
व्युस	४	विभागे	व्युम्यति	य
व्ये	१	संवरणे	संव्ययति (वा) संव्ययते मृतं वस्त्रेण नारी	न
व्रज	१	गतौ	व्रजति व्रजः	
व्रज	१०	संकृतौ गतौ त्यागेच	व्रजयति	क
व्रण, व्रण	१	शब्दे	व्रणति	
व्रण, व्रण	१०	पात्रविचूर्णने	व्रणयति भोष्मं शरीरं नः, व्रणः, व्रण वृथाति मूढं पापी व्रियते वरं नारी	क त
वृक्ष	६	उदने		श औ ऊ
व्रि	४	वरणे		ऊ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
व्री	९	वरणे	व्रीणाति रणं शूरः	ग गि
व्रीड	४	लज्जायां (त०) क्षिपि	व्रीड्यति वधूः व्रीडा	य नि
व्रीस	१-१०	वधे	व्रीसति (वा) व्रीसयति	कि
वृड	६	संवृत्ति संहति मा- र्जनेषु	व्रडति	श शि
वृड	६	निमज्जने	व्रडति	श
व्रस	१-१०	वधे	व्रसति (वा व्रसयति	कि
व्री	९	वारणे-गत्यां-वृत्त्यां	व्रीणाति भुवं शेषः (त०) व्रपयति	ग गि
वृक्ष	१०	दृशि	वृक्षयति	क त
शक	४	क्षमायां	शक्यति (वा) शक्यते शिष्यापराधं गुरुः	य न
शक	९	शक्तौ	शक्नोति कंसं जेतुं कृष्णः	न इर ल
शक	१	त्रासशंकयोः	शंकति	इ ङ
शव	१	हिंसायां	शर्घति शर्घः	
शच	१	व्यक्तायांवाचि	शचते कविः	ङ
शच	१	गतौ	शंचते	इ ङ
शट	१	रुजाविशरण गत्य- वसादनेषु	शटति	
शट	१०	श्लाघे	शटयते	क ङ

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शठ	१	कैतवे (त०) वधे केशे च	शठति शठः	-
शठ	१०	श्लाघायां	शठयने	क ह
शठ	१०	संस्कारगत्योः आ- लस्ये-गतौ असं- स्कृतसंस्कृते	शाठयति	क
शठ	१०	सम्यग्भाषणे दु- र्वार्त्ति	शठयति शठेन धर्मं	क त
शड	१	रुनायां (त०) संवे	शंडते शंडः	इ ङ
शण	१	दाने	शणति	म
शद	१	आ उपसर्गे (आ) गतौ	आशदति	औ
शद	१	शातने	शीयेत वृक्षात् पत्रं	लृ न औ
शंख	१	कथने (त०) हि- मायां स्तुतौ	शंसनि स्वकुलं साधुः	उ
शप	१	आक्रोशे	शपति (वा) शपते दु- र्वासाः शक्राय शपः	व
शप	४	आक्रोशे	शप्यति (वा) शप्यते शपिनं साधुः	य न औ
शंन	१	गतौ	शंनति	

धातु.	श्री.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शंव	१०	संवन्धे	शंवाति धनं यतिः, शंवः, संवुः, शंवुकः शंवुकः शं- वुका शंवुकः	क
शब्द	१०	शब्दकृतौ (अथ- ना) उपसर्गे आ- विष्कारे	शब्दयते प्रशब्दयति प्रियशिष्याय गूढमर्थं गुरुः	क
शम	१	अदर्शने (त०) दर्शने	शमयति जलधरो जलै- स्तापं निशामयति रूपं वेद्या	
शम	४	उपशमे	शाम्यति मुनिः	य उ भ इ रू
शम	१०	आलोचने	शामयति कार्यं मंत्री	क ङ
शर्ध	१०	अभिराक्षायां	शर्धयति	क
शर्व, श- र्व	१	हिंसायां—गतौ	शर्वति	
शर्व	१	हिंसायां	शर्वति	
शल	१	चलने (त०) स्तृनौ	शलते पथिकः	ङ
शल	१	वेगे	शलति	
शल	१०	श्लाघे	शल्यति	क ङ
शलभ	१	कत्थने	शलभते	ङ
शव	१	गतौ (त०) वि- कारे	शवति शवः शवं	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शश	१	प्लुतगती	शशति शशः	
शष	१	वधे	शषति	
शस	१	हिंसायां	शसति वंसं हरिः	उ
शस	२	स्वप्ने	शसति	ल लु
शंस	१	आउपसर्गे इच्छा- यां	आशंसते मोक्षं मुनिः	इ व
शंस	१	स्तुतौ दुर्गतावपि	शंसति	उ
शस्त	२	स्वप्ने	शंस्ति	ल लु इर
शाख	१	व्याप्तौ	शाखति शाखा गगनं शाखा	क
शाढ	१	श्लाघायां	शाडते गुणिनं जनः	क क
शान	१	तेजने	शीशांसति (वा) शीशां- सते शूलं	न
शार	१०	दौर्बल्ये	शारयन्ति	क त
शाल	१	कल्थने	शालते	क ल
शास	२	आउपसर्गे आशि- षि	आशास्ते	ल क ल
शास	१	आउपसर्गे आशि- षि	आशास्ते	उ ल
शास	२	अनुशिष्टौ	शास्ति शासनं	ल लु उ स

धातुः	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
शि	९	निशाने	शिनोति (वा) शिनुते गुलं	न व
शिक्ष	१	विद्योपादाने	शिक्षते शिक्षा	ङ
शिख	१	गतौ	शिखति	
शिख	१	गतौ	शिखाति	इ
शिव	१	आघ्राणे	शिवति कुसुमं कृष्णः शिवानं	इ
शिज	२	अव्यक्ते शब्दे	शिकतेरसना शिजितं	ल
शिज	१-१०	अव्यक्ते शब्दे	शिजते (वा) शिजयते	कि ङ
शिष्ट	१	अनादरे	शेष्टति साधुं भंडः	ऋ
शिल	६	उच्छे	शिलति ध्यानं विप्रः	श
शिष	१	हिंसायां	शेषति शेषः	
शिष	१०	परिशेषीकरणे	शेषयाति धनं पुत्रायपिता शेषं	क
शिष	७	विशेषणे	विशिनष्टि गुणैर्विष्णुं	धनिल्ल औ
शी	२	स्वप्ने	शेते सुखं शयालुः (अथ वा) मंडले शयामि	ल ङनि
शीक	१-१०	आमर्पणे स्पर्श-से- के-दीप्तौ	शीकति (वा) शीकयति	कि
शीक	१	सेचने-स्पर्श	शीकते मेघो भूमि	ऋ ङ
शीभ	१	कथने	शीभते	ऋ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
शील	१	समाधौ	शीलति	सुशील- नि
शील	१०	उपधारणे— अ	शीलयति	नीलनिघोल- क त
		भ्यासे—अतिशायने	शीलं	
शुक्	१	गतौ—स्पर्श	शुक्कति	
शुच	१	प्रतिघाते	शुचति शोचना शोक	
शुच	१	शोके	शुचति शोकः शुचि.	
शुच	४	पूतिभावे—विशरणे	शुच्यति (वा) शुच्यते	य न इरू ई
		तेदे	तपसा विप्रः	
शुच्य	१	अभिपत्रे	शुच्यति	ई
शुठ	१	शोपेण	शुठति	शुठा इ
शुठ	१०	शोपणे	शुठयति शुठा मन. शुठा	क इ
शुठ	१	खोटने प्रतिघातेच	शुठति	
शुठ	१	खोटने	शुठति	इ
शुठ	१०	आलस्ये	शुठयति	क
शुठ	१०	संस्कारगत्याः	शुठयति	क इ
शुध	४	शौचे	नर शुद्धयति सत्संगात्	य ल औ
शुंध	१	शुद्धौ	योग. शुंधति सत्त्वेन शुध्वः	
शुंध	१-१०	शुद्धौ	शुधेत (वा) शुंधयते	कि इ
शुन	६	गतौ	शुनति शुनकः	श
शुभ	१	मासने	शोभाति न शोभाति स-	
			मामध्ये	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	भलुबन्ध.
शुभ	१	दीप्तौ	शोभते शोभा	लृ ङ
शुभ	६	शोभायां	शुभति विद्यया विप्रः	श
शुभ	६	दीप्तौ	शुभति	श प
शुंभ	६	शोभायां	शुंभते	श
शुभ	१	भासने	शुंभति	
शुल्क	१०	भाषणे-संवाते-स- र्जने-वर्जने-अति स्पर्शने	शुल्कयति	क
शुल्ब	१०	माने-सर्गेच	शुल्बयति	क
शुल्ब	१०	सर्जने	शुल्बयति विश्वं विधाता	क
शुप	४	शोषणे	शुप्यन्ति मस्या नविनां ब्रूवाहं शोषः (त०) शुष्कः का कं	य औ लृ
शूर	१०	विक्रांतौ	शूरयते शूरः	क त लृ
शूर	४	स्तंभे हिंसायांच	शूर्यते	य ङ ई
शूप	१०	माने	शूपयति शूर्पेण धान्यं नारी शूर्पेणखा	क
शूल	१	रुजायां	शूलति चोरं शूलं	
शूप	१	प्रसवे	शूपति	
शृभ	१	शब्दकुत्सायां	शृद्धतेखरः	उ लृ रु व

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्रण	१०	ज्ञाने	श्राणयति गां राजा— विश्राणनं	क
श्रथ	१-१०	बन्धने-मोक्षे—वधे	श्रथाति (वा) श्रथयति— कुसुमैः केशं नारी	कि
श्रथ	१	बन्धे	श्रथति	म
श्रथ	१०	दौर्वल्ये	श्रथयति	क त
श्रथ	१०	प्रतिहर्षमोक्षयत्न- योः	श्रथयति	क
श्रथ	१	शैथिल्ये	श्रथते नर्विं	इ ह
श्रंथ	१-१०	संदर्भे (त०) वधे	श्रंथति (वा) श्रंथयति	कि
श्रंथ	९	मोचन प्रतिहर्षयोः, संदर्भे	श्रथ्नातिमुमुक्षुं हरिःश्रथा- ति	ग
श्रंम	१	प्रमादे	श्रंमति	उ
श्रम	४	स्वेदे तपसि	श्राम्यति मार्गे पथिकः श्रमः श्रान्तः—ता-तं— श्रान्तिः	य म उ नि इ
श्रा	२	स्वेदे	श्राति	ह
श्रा	१	पाके	श्राति—श्रपयति यवागूं- भिर्भुः	
श्रा	२	पाके	श्राति शकं	ल म
श्रा	९	पाके	श्राणाति (वा) श्राणीते	ग न

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शृघ	१	उंदे	शर्द्धति (वा) शर्द्धते जेलन शिरः	उ व
शृघ	१०	प्रहसने	शर्धयति मूर्खं बुधः	क उ
शृ	९	हिंसायां	शृणाति शीर्णः—णा—णं	ग गि
शैल	१	गतौ	शैलति शैलुः	ऊ
शैव	१	सेवने	शैवते	ऊ
शै	१	गतौ पाके च	शायते	
शो	४	निशाने	श्यति शित.—ता—तं	य
शो	४	तनूकरणे	श्यति काष्ठं वर्द्धकिः	य
शोण	१	वर्णगत्योः	शोणति पद्मं शोण शोणितं	ऊ
शौट	१	गर्वे	शौटति मूर्खः	ऊ
शौड	१	गर्वे	शौडति	ऊ
श्रुन	१	क्षरणे	श्रोतति	इर
श्रुत	१	क्षरणे	श्रुचोतति जलं श्रुचोतः	इर
श्मील	१	निमेषणे	श्मीलति नेत्रं	
श्मील	१	निमेषणे	श्मीलति	
श्यै	१	गतौ	श्यायते	ख
श्रक	१	गतौ	श्रं कते	ख क
श्रग	१	व्रजे	श्रंगति	इ
श्रण	१	दाने	श्रणति	स

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्रण	१०	दाने	श्राणयति गां राजा— विश्राणनं	क
श्रथ	१-१०	बंधने-मोक्षे-वधे	श्रथाति (वा) श्रथयति- कुमुमैः केशं नारी	कि
श्रथ	१	बंधे	श्रथति	म
श्रथ	१०	दौर्वल्ये	श्रथयति	क त
श्रथ	१०	प्रातिहर्षमोक्षयन्न- योः	श्रथयति	क
श्रथ	१	शौथिल्ये	श्रथते नीर्वी	इ ङ
श्रंथ	१-१०	संदर्भे (त०) वधे	श्रंथति (वा) श्रंथयति	कि
श्रंथ	९	मोचन प्रातिहर्षयोः, संदर्भे	श्रथ्नातिमुमुक्षुं हरिःश्रथा- ति	ग
श्रंम	१	प्रमादे	श्रंमति	उ
श्रम	४	स्वेदे तपसि	श्राम्यति मार्गे पथिकः श्रमः श्रान्तः—ता-तं— श्रान्तिः	य म उ ङि इर्
श्रा	२	स्वेदे	श्राति	ल
श्रा	१	पाके	श्राति-श्रपयति यवागूं- भिक्षुः	
श्रा	२	पाके	श्राति शाकं	ल म
श्रा	९	पाके	श्राणाति (वा) श्राणीते	ग न

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
आम	१०	आमंत्रणे	आमयति विश्रामः	क त
श्रि	१	सिवने	श्रयति (वा) श्रयते विष्णुं बुधः श्रयणं श्रायः आश्रयः	ज
श्रिप	१	दाहे	श्रेषति	उ
श्री	१	तर्पणे	श्रयति (वा) श्रयते	ज
श्री	२	पक्षि	श्रीणाति (वा) श्रीणीते	ग ज
श्री	१०	तर्पणे	श्राययति (वा) श्रायय- ते देवतां हविषा यज्वा	क ज
श्रु	१	श्रवणे	श्रवत्यामघटाज्जलं	
श्रु	६	श्रवणे गतौ	शृणोति	न
श्रै	१	पाके	श्रायति दुग्धं	म
श्रै	१	स्वादे	श्रायति	
श्रोण	१	संधाते	श्रोणति श्रोणी श्रोणिः	ऊ
श्लक	१	गतौ	श्लंकते	इ ङ
श्लग	१	व्रजे	श्लंगति	इ
श्लथ	१	हिंसायां	श्लथति	
श्लथ	१०	दौर्बल्ये	श्लथयति	क त
श्लाघ	१	ख्याप्तौ	श्लाघति	ऊ
श्लाघ	१	कृत्येन	श्लाघतेगुणिनं गुणीश्लाघा	ऊ
श्लिष	१	दाहे	श्लेषति	उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्लिष	४	आलिंगने	श्लिष्यति सीता रामं श्लेषः	य लृ ङि औ
श्लिष	१०	श्लेषणे	श्लेषयति	क .
श्लोक	१	संवाते, सर्जने, व- र्जने	श्लोकते कविः श्लोकः	कृ ड
श्लोण	१	संवाते	श्लोणति	कृ
श्वक	१	गतौ	श्वंकते	इ ड
श्वग	१	व्रजे	श्वंगति	इ
श्वच	१	गत्यां	श्वचते	इ ड
श्वच	१	गत्यां	श्वंचते	इ ड
श्वज	१	गतौ	श्वजते	इ ड
श्वज	१	गतौ	श्वंजते	इ ड
श्वठ	१०	गतौ-असंस्कृतसं- स्कृते	श्वठयति	क
श्वठ	१०	गतौ असंस्कृत- संस्कृते	श्वंठयति	क इ
श्वठ	१०	सम्यभाषणे दु- र्वाचि	श्वठयति	क त
श्वभ्र	१०	विले, गतौ; तंके	श्वभ्रयति	क
श्वर्त्त	१०	गंत्यां	श्वर्त्तयति	क
श्वल, श्वल्ल	१	वेगे	श्वलति (वा) श्वल्लति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्वल्क	१०	भाषे	श्वल्कयति	क
श्वस	२	प्राणने	श्वसिति-विश्वास-श्व- सनं	ल लु व
श्वि	१	गतिवृद्ध्योः	श्वयति धर्मेण राजा	टु औ ऐ इ
श्वित	१	वर्णे	श्वततेगेहं-श्वेतः-ता-तं	ल आ ऋ
श्विद	१	शौक्ये	श्विन्दते ज्ञानेन जनः	इ ऋ
ष्वग	१	संवरणे	सगति	म ए
षघ	५	हिंसाया	सघ्नोति	न
षच	१	समवाये	सचति साधुः	
षच	१	सेचने	सेचते जलेन भूमिं	ऋ
षच	१	गतौ	सचति	
षंज	१	सगे	सजति तरुण्यां तरुणः आसक्त-त-तं.	औ जि
षट	१	अवयवे	सटति सटा	
षट्	१०	निकेतनहिंसाह- लदानेषु	सट्टयति	क्व
षण	१	सम्भक्तौ	सनति	
षण	८	दाने	सनोति (वा) सनुते- विप्राय गां	द न उ
षद	१-२०	गतौ-आ लुपसर्गे	आसादति (वा) आ- सादयति	कि

धातु.	गण.	मर्थ,	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पठ	१-६	विशरणगत्य वसादः	पठति विरहेण पाथः	श लृ न औ
पथ	६	निवांसायां	विपादः	
पन	१	संमत्तौ	मघ्नोति	न
पन	८	दाने	मनति	
पप	१	संबन्धे	मनोति (वा) मनुते	द ब ड
पंन	१	सर्पणे	मपति	
पम	१	वैकृत्ये	मंबति	
पम	१	वैकृत्ये	ममति	
पम	१०	वैकृत्ये आन्योन-	ममयति	क न
पन	१	अर्जने	मर्जति	मर्जे:
पन	१	गन्ध्यां	मर्गति	
पन	१	सर्पणे हिमायां च	मर्चति	
पन	१	गन्तौ	मलति	मलितं
पम	२	मज्जे	मम्नि मिमो हरि:	र लृ र
पम	१	गन्तौ	मज्जति (वा) मज्जते	म ड
पम	२	मज्जे	माम्नि	र लृ र
पह	१-१०	मर्पणे	मरति (वा) मारयति	कि
पह	१	मर्पणे	मरयति	
पह	१	मर्पणे	मरति (वा) मारते	न र
पह	४	मर्पणे, पदार्थे	मरति	न

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
पाध			(इति साध)	
पान्त्व	१०	सामयोगे	मान्त्वयति	क
पि	६	बंधने	सिनोति (वा) सिनुते कृष्णं यशोदा विषय	न ज
पि	९	बंधने	सिनाति (वा) सिनाते चौर राजा	म ज
पिच	६	क्षरणे	सिचति (वा) सिचने	श प औ न
पिट	१	अनादरे	सिगति साधु भइ	
पिध	१	गत्या	सेधति मधुरा कृष्ण	उ
पिध	६	शास्त्रे मागल्ये च	सेवति शिष्यगुरु सिद्धो य मुनि	उ
पिध	४	मराद्धौ	मिध्यति मुनिर्योगेन	य उं औं
पिम	१	दीप्तौ हिंसने	सिभाति	उ
पिल	६	उछे	मिलति	श
पित्र	४	नतुसंताने	सोव्यति कथा योगी-सोवन	य उ
पु	६	अभिषेवे मन्यने च	सुनोति (वा) सुनुते सोमलता विप्र.	न व
पु	१	प्रसवे गर्तौ	प्रसवति पुत्रनारी-प्रसवः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पु	२	प्रसवे, ऐश्वर्ये	प्रसोति पुत्रं प्रसवः प्र- सुतिः	ल
पुष्ट	१०	तौष्ठ्ये, अनादरे	सुष्टयति	क
पुंष	१	दीप्तिं हिंसने	सुंषति	
पुर	६	धैर्म्ययोः	सुरति	श
पुह	४	वृत्तां, शक्तौ न	सुहति	य ल
पृ	२	प्राणि गर्भविमो- चने	प्रसुने देवकी कृष्णं	ल क ओ
पृ	४	प्रसवे	सुयते सुयं धर्मः	य क ओ
पृ	६	क्षेपे	सुयति	श
पृष्ट	१	क्षणने निगमे	सुष्टने चोरं राजा सुष्टः	
पृष्ट	१०	आश्रुतिहत्याः नि- रासने	सुष्टयति	क
पृष्ट	४	स्तेन—हिंसे	सुष्टने	य क इ
पृष्ट	१	अनादरे	सुष्टति	
पृष्ट्य वा	१	दृष्ट्यापे	सुष्टयति (वा) सुष्टयति	
पृष्ट्य				
पृष्ट	१	प्रसवे	सुष्टति पुत्रं मातृया	
पृष्ट				
पृष्ट	१	प्रसवे	सुष्टति	ल ल
पृष्ट	१	नाशकृत्याः	सुष्टति	ल

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पेव	१	सेवने	नीचं समृद्धमपि सेवति (वा) सेवते नीचः	ऋ ङ ज
पै	१	क्षये	सायति	
पो	४	अन्तकरणे	रयति कालो लोकं	य
एक	१	प्रतिघाते	स्तकति	म
पुंग	१-१०	संवरणे	स्तगति (वा) स्तगयति	ए मि
एन	१	शब्दे	स्तनति	मि
एभ	१	प्रतिबन्धे	स्तंभने पापात्पुत्रं पिता स्तंभः	इ ङ
एम	१	वैकुण्ठ्ये	स्तमति	
एम	१०	वैकुण्ठ्ये	स्तमयति	क ते
एल	१	स्थितौ	स्थलति	ज
पृक्ष	१	गतौ	स्तृक्षति	
पृह	६	वधे	स्तृहति	श ङ
पृह	६	वधे	स्तृहति	श ङ
ष्टिघ	५	आस्कंदने	स्तिघ्रुते पथिकं घृष्टिः	न ङ
ष्टिप	१	क्षरणे	स्तेपते जलं घटात्	ङ ऋ
ष्टिम	४	आद्री भावे	स्तिम्यति तैलेन देहः	य
ष्टीव	१	निरसने	ष्टीवति	उ
ष्टिम	४	आद्री भावे	स्तीम्यति तैलेन देहः	य

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्तु	२	स्तुतौ	स्तौवि (वा) स्तुते स्ववः स्तुतिः	ज ल
स्तुच	१	प्रसदे	स्ताचते ज्ञानेन मनः	ङ
स्तुप	१०	उच्छ्राये	स्तोपयति	क
स्तुभ	१	स्तोभे	स्तोभते नीचो विद्यया स्तोभते वृद्धशीतम्	
स्तूप	४	उच्छ्राये	स्तूप्यति	य.इर्
स्तेप	१	क्षरणे	स्तेपते जलं घटात्	ङ ऋ
स्तेव	१	निरसने	स्तेवति	
स्ते	१	वेष्टे	स्तायति	
स्तेच	१	वेष्टणे	स्त्यायति	
स्तेच	१	शब्दसंघाते	ष्ट्यायति लोकः	
स्थग	१	संवरणे	स्थगति	म ए
स्थस	४	निवासे	स्थयति	य लृ मि उ
स्था	१	गतिनिवृत्तौ	तिष्ठतिविरलेमुनिः— स्थानं	जि
ष्ठिव	१	निरसने	ष्ठेवति	
ष्ठिव	४	निरसने	ष्ठोव्यति भुक्तमन्नंवालकः	य उ
ष्ठीव	१	निरसने	ष्ठोवति	
ष्णस	४	निरसने	स्तस्यति	उ य
ष्णा	२	शौचे	स्नाति गंगायां स्नानं	ल

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
प्णिह	४	प्रीतौ	स्निह्यति शिष्ये गुरुः स्नेहः	य
प्णिह	१०	स्नेहने	स्नेहयति	क
प्णु	२	प्रमथणे	मथति जलं घटात्	ल
प्णुस	४	भक्षे, निवासेच	मनम्यति	उ य
प्णुह	४	उद्धारे	मनुह्यति	य उ लृ
प्मि	१	हृष्यद्भसने	ममयते ममयः स्मित	ड
प्मि	१०	अनादरे	ममययते	ड
प्वक्र	१	मर्पणे	म्वकते	ड
प्वंज	१	परिप्वगे	स्वजते पुत्र पिता परि- प्वजति पात्राग्ने मध्यम	औ जि ड
प्वद	१०	स्वादे उदे	प्रादुर्नदन म्वदयति	
प्वद	१	आम्वादे प्रीतौलि	म्वदते	ड
प्वप	२	हच शये	म्वपति सिधौ हरि स्वाप म्वप्न.	ल लु, जि, घ औ
प्वर्त्त	१०	गत्यातकयो	स्वर्त्तयति	क
प्विद	१	मोचने, मोहे स्नेहे	स्वेदते पापं तपसा जन	ड जि आ लृ
प्विद	४	मात्रप्ररक्षणे	स्विद्यति (वा) स्विद्यते धर्मण प्रस्वेद स्वेद	य अ लृ आ औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
संकेत	१०	आमंत्रणे	संकेतयति रतये कामिनी कामुकं	क
सग	१	संवरणे	सगति	म ए
संग्राम	१०	युद्धे	संग्रामयते—संग्रामः	क त ङ
सव	९	हिंसायां	सन्नोति	न
संज	१	सर्पणे	संजति	
सट	१०	प्रकाशने	सटयति	क त
सट्ट	१०	हिंसायां	सट्टयति	क
सठ, स्वठ	१०	—————	(इति शठ—श्वठ	
सत्र	१०	सन्तानक्रियायां— संवन्धे—सन्ततौ	सत्रयते पथिकेभ्यो धार्मि- कः, सत्री, सत्रं	क त ङ
सप	१	संवन्धे	सपति	
संवर	११	संभरणे—लज्जायां च	संवर्त्यति गुरुदर्शनाद्वधूः	ट
सभाज	१०	प्रीतिसेवायां दर्श- ने च	सभाजयति गुरुं शिष्यः स- भाजना	क त
संभूयस्	११	प्रभूतभावे	संभूयस्यति पयोवारिणा	ट
सम्ब	१	सर्पणे	सम्बति	
सम्ब	१०	सम्बन्धे	सम्बयति	क
सर्ज	१	अर्जने	सर्जति	
सर्व	१	सर्पणे	सर्वति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
सह	४	शक्तौ	सह्यति भूवहने वासुकिः (इतिपह)	य
साट	१०	प्रकाशने	साटयति	क त
सांत्व	१०	सामप्रयोगे	सांत्वयति शोकाकुलं- ज्ञानी	क त
साध	४	संसिद्धौ	साध्यति ज्ञानेन यतिः सिद्धः	य उ न औ
साध	५	संसिद्धौ	साधोति योगेन मुनिः	
साम	१०	सांत्वने, प्रयाणे	सामयति बालं पयसापिता सामः	क त क
साम्ब	१०	सम्बन्धे	साम्बयति	क
सार	१०	दौर्बल्ये	सारयति सारः	क त
सिच	६	क्षरणे	सिंचति (वा) सिंचते जलेन गेहं विलासी-सैकः- अभिप्रेकः	श प ज औ
सिभ	१	हिंसायां	सेभति कुमन्त्री राजानं	उ
सीक	१	मेके गत्यां	सीकते	ड ऋ
सीक	१-१०	आमर्षे	सीकाति (वा) सीकय- यति	कि
सु	१	गतां ऐश्वर्ये प्रसेवे	सुवति	न ज
सु	५	संधाक्रेदपीडामंधेषु	मुनोति (वा) मुनुते	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
सुख	१०	तत्क्रियायां	सुखयति	क त
सुख	११	तत्क्रियायां	सुखयति धनी संसारे	ट
सुष्ट	१०	अनादरे	सुष्टयति	क
सुम्भ	१	द्युतो हिंसायां	सुम्भति	
सुर	६	ऐश्वर्य्य दीप्तयोः	सुरति राजा सुरः असुरः (इतिपू)	श
सू				
सूक्ष	१	अनादरे आदरेच	सूक्षति	
सूच	१०	पेशून्ये	सूचयति परदोषं खलः सूचकः	क त
सूत्र	१०	अवमोचने वेष्टनेच	सूत्रयति सूत्रणे कलशं पूराधाः सूत्रं	क त
सूर	४	हिंसास्तंभनयोः	सूर्यते रविविव योगी	ड य
सूर्य	१	अनादरे ईर्ष्याया	सूर्यति	
सूप	१	प्रसवे	सूपति	
सृ	१	गतौ	सरति तीर्थं मुनिः	
सृ	३	गतौ	समर्त्ति	लि र
सृ	१०	स्तुतौ	सरयति	क
सृज	६	विमर्गे	सृजति विश्वंवेधा	श ओ
सृज	४	विमर्ग—उत्पादने	संसृज्यते पिता पुत्रं सृ- ज्यते विश्वंविधाता सृष्टिः	
सृप	१	गतौ	सपति	ल ओ

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
सृभ	१	हिसे	सर्भात	लृ
सेरु	१	गता	सेकते	ड ऋ
सेल	१	चालगत्यो	सलति	ऋ
मेव	१	सेवने	सेवते सेवा	ऋ ड
से	१	क्षित्या	सायति	
स्कद	१	उत्प्लुत्यगमने, आ	स्वन्दते वानर शाखा	इ इ
		पवेउद्धते		
स्कद	१	शोषणं गतो	स्कदति हिमेन तरु	इर् आ
म्बम	१	प्रतिबधे	म्बम्भते	इ ड
स्कु	२	आवरणे	स्कुनति कण—बाणरे	ग अ ड
			ज्जुन	
स्कुद	१	आप्रवणे	स्कुदते शाखा मृगोवृक्षा	इ वि
			दृष्टातर	
स्वद	१	स्वदने विदारे	म्बदते मूलक पाथ	ड म प
स्वल	१	चथचलयो	स्वलति	मि
स्तक	१	प्रतिधाते	स्तकति	म
स्तन	१	शब्दे	स्तनति	मि
स्तन	१०	मयशब्दे	स्तनयति धन	क त
स्तभ	१	स्तम्भे	स्तम्भते	इ ड
स्तूप	१०	समुच्छ्राये	स्तूपयति गोधूम—वैश्य	क
			स्तूप	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्तृप	४	समुच्छ्राये	स्तृप्यति धान्यं—स्तृपः	य इर्
स्तृ	५	आच्छादने (त.) प्रीतिरक्षाप्राणनेषु	स्तृणाति (वा) स्तृणु- तेया सप्ता देहं विस्तृतः—ता—तं	न व
स्तृ	९	आच्छादने	स्तृणानि (वा) स्तृणी- ते गगनं मेघः स्तृणीः णा—णं	ग व गि
स्तृक्ष	१	गतौ	स्तृक्षति	
स्तृह	६	वधे	स्तृहति	श ऊ
स्तृ	९	छादने—वधेच	स्तृणाति	ग गि
स्तृ	६	वधे	स्तृहति	श ऊ
स्तेन	१०	चौर्ये	स्तेनयति धनं स्तेनः	क त
स्तेप	१०	क्षेपे	स्तेपयति	क
स्त्ये	१	शब्दसंवाते	स्त्यायति लोकः	
स्तोम	१०	श्लाघायां	स्तोमयति स्तोमः	क त
स्थग	१	मंवरणे	स्थगति	म ए
स्थल	१	संचयं—स्थाने	स्थलति धर्मं मुनिः स्थल स्थली	ज
स्थूल	१०	परिवृंहणे	स्थूलयति स्थूलः ला लं	क त ङ
स्निह	१०		(इति णिह)	क
स्पद	१	किञ्चिच्चलने	स्पदनिबन्धन	इ

धातु.	गण	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्पर्द्ध	१	परपराभवेच्छायां संघर्षे	स्पर्द्धते कर्णोर्जिनं स्पर्द्धा	ङ
स्पर्श	१०	ग्रहणे लेपे	स्पर्शयते	क ङ
स्पर्श	१	बाधने ग्रंथेच	स्पर्शति (वा) स्पर्शते स्पर्शः	ञ
स्पृ	९	प्रीतिरक्षाप्राणनेषु	स्पृणोति	म
स्पृश	६	संस्पर्शे	स्पृशति पुत्रं पिता	श ओ
स्पृह	१०	ईप्सायां	स्पृहयति गंगायै मुनिः स्पृहा	क त
स्फट	१	भेदे	स्फंदति	इ
स्फट	१०	भेदे	स्फाटयति	क
स्फर	६	स्फूर्त्तौ चले	स्फरति	श
स्फल	६	स्फूर्त्तौ—चाले.	स्फलति	इ श
स्फाय	१	वृद्धौ	स्फायते स्फाय· स्फा- ति (वा) स्फायति स्फीतः स्फीतवान्	इ अ
स्फिट	१०	वृत्त्यां—अनादरेहिसे	स्फेटयति	
स्फुट	१	विकसने	स्फोटते (वा) स्फोटति कुसुमं	अ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्फिट्	१०	हिंसायां	स्फिटयति नकुलः सर्प वने	क
स्फुट	६	विकशने	स्फुटति पुष्पं स्फुट टा टं	श शि
स्फुट	१	विसरणे	स्फोटति पुष्पं	इरू
स्फुट	१०	विसरणे	स्फोटयति	क त
स्फुट	१०	भेदे	स्फोटयति	क
स्फुट	१०	परिहासे	स्फुटयति भगिनी पति- श्यालः	क इ
स्फुड	१०	अनादरे	स्फुटयति	क
स्फुट	१	विकशने विशरणेच	स्फुटयति	इ
स्फुड	६	संवृत्तौ	स्फुडति	श
स्फुड	१०	परिहासे अनृतमा- पणेच	स्फुडति (वा) स्फुड- यति	इ कि
स्फुर्	६	स्फुरणे—संचलनेच	स्फुरतिनेत्रं	श शि
स्फुल	१	विस्मृतौ	स्फूर्डति विष्णुं भोगी	आ
स्फुर्ज	१	वज्रनिर्घोषे	स्फूर्जति वज्रः	टु औ आ
स्फुल	६	स्फुर्त्तौ चये चले	स्फुलति	श शि
स्मि	१	ईषद्भासे	स्मयते स्मयः स्मितं	इ
स्मि	१०	अनादरे	स्मययति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्मिष्ट	१०	अनादरे स्नेहे	स्मेष्टयति	क
स्मील	१	निमेषणे	स्मीलति	
स्मृ	१	आध्याने	स्मरति सपितृगृहं	
स्मृ	१	चिताया	स्मरति अपम्मार.	म
स्पद्	१	किञ्चिच्चलने	स्पटतेलाचने	इ ङ
स्पन्द	१	स्त्रवणे	स्पन्दते जल कलशात्	उ व ङ लृ
स्यम	६	वनने	स्यमति	प ण उ
स्यभ	१०	वितर्के	स्याभयति (वा) स्याम यते विप्र	क ज
स्यम	१०	वाने	स्यमयति	क त
स्यल	१०	वितर्के	स्यालयति	क
स्वक	१	गत्या	स्वकते	क इ
स्वह	१	विश्वासे	स्वहते	ङ उ लृ औ
स्वभ	१	विश्वासे	स्वभते मित्रेनर	ङ उ लृ
स्वभ	१	प्रमादे	स्वभते विद्यार्थे मूर्ख	ङ उ
स्वंस	१	प्रमादे	स्वसते स्वार्थे लोक	ङ उ
स्वस	१	भवस्वसने	स्वंसते वृक्षात्पत्र स्वस्त ता त	उ ङ लृ
स्विभ	१	हिंसे	स्वेभति	उ
स्विम्भ	१	हिंसे	स्विम्भति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्त्रिव	४	गतिशोपणयोः	स्त्रीव्यति रविः पयः स्त्री- व्यतियात्रायै गंगा सि- ष्णासुः	उ य
स्रु	१	श्रुतौ—गतौ	स्रवति	
स्रक	१	गतौ	स्रकते	ऋ ङ
स्रै	१	पाके	स्रायति दुग्धं	
स्रिट्	१	स्नेहे	स्रेयति	
स्वग	१	मपणे	स्वंगति	इ
स्वञ	१	आलिङ्गने	स्वञ्जते	ङ ओ व
स्वद	१	आस्वाद्यने	स्वदते	ङ
स्वद	१०	आस्वाद्यने	(आ उपसर्गे) आस्वाद- यति पयोयतिः	क
स्वन	१	शब्दे	स्वनति	ण
स्वन	१०	शब्दे	स्वनयति	क त
स्वन	१	शब्दे	स्वनयति (वा) स्वन- यति भेरी नटः	मि
स्वन	१	अवतंसने	स्वनयति केशं कुंकुमेने नारी	क
स्वव	१०	आक्षेपे	स्ववयत्यर्जुनं कर्णः	क त
स्वर	१०	आक्षेपे	स्वरयति	क त
स्वर्द	१	आस्वाद्यने	स्वर्दते गुडं बालः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्वर्त्त	१०	गतौ आतके	स्वर्त्तयते	क
स्वस्क	१	गत्या	स्वस्कते	ङ
स्वाद	१	आस्वादे	स्वादते स्वादु	
स्वृ	१	शब्दोपतापयो	स्वरानि	
स्वृ	२	हिंसने	स्वृणाति (वा) स्वृणीते	ग गि ज
स्वेक	१	गत्या	स्वेकते	ङ ऋ
हट	१	त्विष्टि	हटतिचद्र. हाटक	
हट	१	बलात्कारे (वा) कीलमन्धे, पुतौ	हटतिराजा	
हृद	१	पुरीषोत्सर्गे	हृदतेरोगी	ङ
हन	२	हिंसागत्यो	हन्ति हनति अहनत् जघान कंसकिलवासुदेवः	ल
हम्म	१	गतौ	हम्मति	
हय	१	गतौ क्लमे	हयति हयः हायनं	
हर्ष	१	क्लमे-गतौ	हर्षति	
हल	१	विलेखे	हलति	
हस	१	हसने	हसति हसः हासः हास्यं	ए
हा	३	गतौ	जिहीते	लि ङ औ
हा	३	त्यागे	जहाति गेहं यतिः	लि क ओ
हि	५	गतौ वर्द्धने	हिनोति	न
हिक्	१	अव्यक्तेशब्दे	हिक्कति (वा) हिक्कते	ज

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
हिक्र	१०	हिंसायां	हिक्रयते.	हिका क ड
हिङ	१	अनादर-गतौ	हिङते	क्र ड इ
हिह	१	आक्रोशे	हेढति चोर भयान्नरः	
हिह	९	भूतप्रादुर्भावे	हेह्णाति	ग
हिल	६	हावकरणे	हिलति	श
हिल्लोल	१०	दोलने	हिल्लोलयति	क त
हिव	१	प्रीतौ	हिवति	इ
हिस	१-१०	हिंसायां	हिंसति (वा) हिंसयति	कि इ
हिस	७	हिंसायां	हिनस्तिरिपुं हिंसा	ध इ
हु	३	दानादनयोः प्रीण- नेच	जुहोति पायसं विष्णवे जटाधरः सन्जुहुधीहपा- वकं जुहोति सवर्प्र- लयाग्निः	लि
हुङ	१	संघाते, वर्णेच	हुङते	इ ड
हुङ	६	संघाते मग्ने	हुङति धान्यं	श शि
हुङ	१	गतौ	होङति	क्र
हुल	१	गतौ छदि	होलति	ज
हूँ	१	कौटिल्ये	हूँति मलः	आ
हूँ	१	गतौ	हूँते	क्र ड
हूँ	१	हरणे	हरति (वा) हरते गंधं वायुः	व

धातु	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
हृ	३	प्रसह्यकरणे	नहर्ति परनारीं दुष्टः	लि र
हृप	१	अलोके	हर्षति खलः साधुं	उ मि
हृप	४	तुष्टौ	हृष्यति हृष्टः दा दं हृष्टिः	य उ मि इरू
हृप	१	बाध्यायां	हंटाति	
हृप	१	बाध्यायां	हंठतेरिपुं बली हेठः	ङ ऋ
हृप	१	वेष्टने	हंटाति	म
हृप	१	अनादरे, गतौ	हंठते	ऋ ङ
हृप	१	गतौ	हंपते	ऋ ङ
हृप	१	अव्यक्तेशब्दे	हंपते हयः हेपा	ङ
हृप	१	अनादरे, गतौ	होडते	ऋ ङ
हृप	१	गतौ	होडते	ऋ ङ
हृप	२	अपनयने	हृतेदुर्जनं सुजनः	ल ङ
हृल	१	चलने	हृलति	म
हृग	१	संवरणे	हृगति	य ण
हृणी	११	रोषे लज्जायांच	हृणीयते कलहांतरिताप- रासक्ताय	ङ ट
हृप	१	गतौ (अथवा) हय शब्दे	हृपते हृपति	ऋ ङ
हृस	१	शब्दे	हृसति	
हृद	१	अव्यक्तेशब्दे	हृदते मेघः	ङ
हृही	३	लज्जायां	जिह्वेति यवनसेवयाद्विजः	लि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ह्रीछ	१	लज्जायां	ह्रीछति	
हुड	१	गतौ	हुडते	ऋ ङ
हुड	१	गतौ	हुडते	ऋ ङ
ह्रीड	१	गतौ	ह्रीडते	ऋ ङ
ल्हग	१	संवरणे	ल्हगति	म ए
ल्हप	१०	व्यक्तायांवाचि	ल्हपयति संस्कृतं मनीषी	क
ल्हस	१	शब्दे	ल्हसति	
ल्हाद	१	मुखे स्वने	ल्हादते पिता पुत्रेण आ- ल्हादः	ङ
ह्रल	१	चलने	ह्रलति ह्रलयति	म
ह्रल	१	कौटिल्ये संवरणेच	ह्ररति खलः	
ह्रल	१	स्पृष्टायां-वाचि	ह्रयति (वा) ह्रयते चाणू- रः कृष्णं आह्वयते पुत्रं पिता आह्वानं (सूत्राणि)	ञ ए
उड	१	संहतौ	ओडति	
उड	१	आघाते	उडति	
उर	१	गतौ	ओरति	
उल	१	दोहे	ओलति	
ऋश	१	गतिस्मृत्योः	अर्शति	

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कज	१	रुहे	कंजति	इ
कष	१	चलने	कषति	
कर्क	१	हासे	कर्कति	
कुठ	१	छिदि	कोठति	
कुत	१	आस्तृतौ	कोतति	
क्षद	१	शुभे-शोभे	क्षन्दति	इ
क्षद	१	संवृतौ	क्षदति	
क्षुप	१	स्वादे	क्षोपति	
चक	१	भ्रांतौ	चंकति	इ
डिम	१	हिसे	डेमति	
तद्र	१	सादे-मोहे	तंद्रति	तंद्री इ
तल	१	गतौ	तलति	
धम	१	ध्वाने	धमति	
नट	१	साधे	नटति	
नड	१	वाते	नडति	
नूष	१	हिंसने	नूषति	
पज	१	रोधे	पंजति	इ
पीय	१	प्रीणने	पीयति	
पुत्त	१	गतौ	पुत्तति	
भिष	१	रुग्जये	भेषति भिषजः भेषजं	
मज	१	श्वनौ	मंजति	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मट	१	सादे	मटति	
युष	१	भजने	योषति योषित्	
रिफ	१	कुत्सने	रेफति रेफः फा फं	र
रश	१	स्वने	रशति	
लत	१	वाते	लतति	
लुल	१	विमर्द्धे	लोलति	
वट	१	स्तेये	वटति	
वड	१	आरोहणे	वडति	
विभ	१	स्वे	वेभते	
शल्ल	१	गतौ	शल्लति	
शिक	१	सेचने	सेकति सिकता	
सातशात	१०	मुखे	सातयति शातयति	
सुद	१	शोभे	सुन्दति सुन्दरः रा, रं	इ
स्कंभ	५-९	रोधने	स्कभ्रोति (वा) स्क- भ्राति	न ग उ
स्कृंभ	५-९	रोधने	स्कृभ्रोति (वा) स्कृ- भ्राति	न ग उ
स्तंभ	५-९	रोधने	स्तभ्रोति (वा) स्तभ्राति	न ग उ
स्तुभ	५-९	रोधने	स्तुभ्रोति (वा) स्तु- भ्राति	न ग उ

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
अ	अइतिअकारउच्चारणार्थः	२	१	२	१
आ	आकारेत्त्वंप्रफुल्लइत्यादौ आदितश्चेति इडभावार्थम्	३	२	३	२
इ	इदित्त्वं नंदतोत्यादौ इदितोनुम् धा- तोरितिनुमर्थम्	२	१	२	१
इर्	इरित्त्वं अच्युतत् अच्योतीत् इत्या- दौ इरितोवेति झेरङ् विकल्पार्थम्	२	१	२	१
ई	ईदित्त्वं उन्नतः इत्यादौ श्वीदितो- निष्ठायां इतिइण् निषेधार्थम्	३	२	३	२
उ	उदित्त्वं शमित्वा शांत्वा इत्यादौ उ- दितोवा इतिइङ् विकल्पार्थम्	३	८	३	९
ऊ	ऊदित्त्वं स्वरति सूति सूयति धृञ्- दितोवा इति सेङ्गा सेधिता इत्यादौ इङ् विकल्पार्थम्	२	१	२	१
ऋ	ऋदित्त्वं अलुलोकत् इत्यादौ नागो- पिशास्वृदितामिति ऋस्वनिषेधार्थम्	२	१०	२	२७
ॠ	ॠइतिप्यंते ऋस्व विकल्प सूचकः संकेतः	२	१०	२	२६
लृ	लृदित्त्वं अगमत् असदत् इत्यादौ पुषादिद्युताङ्गुदितः परस्मैपदेषु इति झेरङ्गर्थम्	२	१	२	१

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
लृक्	लृङिति धृतादि गण सूचनार्थः संकेतः	२	१	२	२
ए	एदित्वं अपथीत् अमथीत् इत्यादौ ह्यंतक्षणश्चसजागृणिश्च्येदितां इति वृद्धचभावार्थ	२	१	२	१
ऐ	ऐकारो भ्रादिगणे भजादित्वात्संप्रसारण सूचनार्थः संकेतः	२	१	२	१
ओ	ओदित्वं पीन इत्यादौ ओदितश्चेति-निष्ठानत्वार्थम्	३	२	३	२
औ	औकार आर्द्धधातुकेऽणनिषेधसूचनार्थः	२	१	२	१
क	क इति अंतिमस्य चुरादिगणस्य संकेतः	२	१०	२	२६
कि	कि इति प्रथमदशमगणयोः प्रयोग-विकल्पसूचनार्थः संकेतः	२	१०	२	२६
क्ष	क्ष इति अक्षादिगणसंकेतः	२	२	२	४
ग	ग इति त्रयादि गण सूचकः संकेतः	२	९	२	२३
गि	गि इति नवम गण मध्येष्वादि गण-सूचकः संकेतः	२	९	२	२३
घ	घ इति अदादिगणांतःपातिरुदादि गणसूचकः संकेतः	२	२	२	४
ङ	ङित्वमनुदात्तङितइत्यात्मने पदार्थम्	२	१	२	१

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
ज	ज इतिभ्वादिसंज्ञकप्रथमगणांतःपाति- ज्जलादिगगसूचकः संकेतः	२	१	०	०
ञ	ञित्त्वं ऊर्णेति ऊर्णते इत्यादौस्वरित- ञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले इत्युभ- यपदार्थम्	२	१	२	१
ञि	ञीत्त्वं इद्ध इत्यादौ ञीतःक्त इति वर्तमानेक्त प्रत्ययार्थम्	३	२	३	२
ट	ट इति षोडशप्रकरणरूपक कंडू- दिगणसूचनार्थः संकेतः	२	१६	०	०
टु	ट्वित्त्वं वेपथु रित्यादौ ट्वितोऽथुच् इति अथुच् प्रत्ययार्थम्	३	८	३	६
ड	ड्वित्त्वं पक्वित्रममित्यादौड्वितः क्वित्रि- ति प्रत्ययार्थं केचित् त्रिमक् इति वदन्ति	३	८	३	६
ण	ण इतिभ्वादिसंज्ञकप्रथमगणांतःपाति- फणादिगण सूचकः संकेतः	२	१	२	१
त	त इति अंते अकारलोपाभाव सूचकः संकेतः	२	१०	२	२६
द	द इतितनादिसंज्ञकअष्टमगण सूचकः संकेतः	२	८	२	१९

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
ध	ध इति रुधादिसंज्ञकसप्तमगण सूचकः संकेतः	२	७	२	१३
न	न इति स्वादिसंज्ञकपञ्चमगणसूचकः संकेतः	२	५	२	१३
प	प इतितुदादिसंज्ञकषष्ठगणांतःपातिमुच्चादिगणसूचकः संकेतः	२	६	२	२०
भ	भ इति दिवादिसंज्ञकचतुर्थगणांतःपातिशमादिगणसूचकः संकेतः	२	४	२	१०
म	म इति भ्वादिसंज्ञकप्रथमगणांतःपातिघटादिगणसूचकः संकेतः	२	१	२	२
मि	मि इति घटादिगणस्थत्वे विकल्पसूचकः संकेतः	२	१	०	०
य	य इति दिवादिसंज्ञकचतुर्थगणसूचकः संकेतः	२	४	२	१०
र	र इति श्रुति मात्रस्थ धातुसूचकः संकेतः	२	२	०	०
ल	ल इति अदादिसंज्ञकद्वितीयगणसूचकः संकेतः	२	२	२	४
लि	लि इति ष्हादिगणसूचकः संकेतः	२	३	२	७
लु	लु इति अदादिसंज्ञकद्वितीय गणांतःपातिस्वपादिगणसूचकः संकेतः	२	२	२	४

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
व	व इति म्वादिसंज्ञक प्रथम गणांतः पातिवृतादिगण सूचकः संकेतः	२	१	२	२
श	श इति तुदादिगणसूचकः संकेतः	२	६	२	२०
शि	शि इति तुदादिसंज्ञक षष्ठ गणांत पातिकुटादिगणसूचकः संकेतः	२	६	२	२१
ष	षिस्त्वं जरा त्रपा इत्यादौ स्त्रधिकारे षिद्धिदादिभ्योऽङ् इति अङ् प्रत्य- यार्थम्	३	८	३	८

यत्र (ङ) कारोऽथवा (ज) कारोऽनुबन्धो नागच्छेत्तत्र परस्मैपदं विज्ञेयं
यत्रगणसूचकोऽक्षरो नागच्छेत्तत्र म्वादिगणो विज्ञेयः ये वकारवत्सु
धातुषु न ज्ञायन्ते ते वकारवत्सु विज्ञेयाः ये षकार वत्सु न ज्ञायन्ते ते

सकारवत्सु विज्ञेयाः

एतद्धातुमञ्जर्याख्यग्रन्थस्यान्ते सौत्रधातवोविज्ञेयाः

गणसंकेतार्थसूचना.

१ म्वादि.	२ अदादि	७ रुधादि.	८ तनादि.
३ जुहोत्यादि	४ दिवादि.	९ क्रयादि.	१० चुरादि.
५ स्वादि.	६ तुदादि.	११ कङ्धादि.	

शुद्धिपत्रम्.

—*ॐॐॐ*

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१	८	अङ्कति	अङ्कति
२	२	गतिनिन्दारभजवेषु	गतिनिन्दारंभजवेषु
२	२	अञ्चति	अञ्चति
॥	४	अञ्ज	अञ्च
॥	१७	अड	अह
॥	११	अड्नोति	अन्होति
६	११	धा	न्धा
॥	१४	अम्भते	अम्भते
४	६	याचकोऽर्थ	याचकोऽर्थ
॥	७	अर्द	अर्द
॥	८	अर्दति (वा) अर्दते	अर्दति(वा)अर्दते
॥	९	अर्दयति अर्दते	अर्दयति अर्दते
॥	११	अर्द	अर्द
॥	११	अर्दति	अर्दति
॥	१२	नार्दति	नार्दति
॥	९	अर्द	अर्द

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	१०	अर्ब्ब	अर्ब
११	११	अर्ब्ब	अर्ब
११	१३	अर्दयति (वा) अर्द- यते	अर्दयति(वा)अर्दयते
११	१४	अर्ब्बति	अर्बति
११	१५	अर्ब्बति	अर्बति
६	२	केशं	केशान्
११	६	अंशः	अंश
११	९	अंश	अंशः
११	१०	दीप्तिगतिग्रहेषु	दीप्तिगतिग्रहेषु
६	१०	इच्छायां	इच्छाया
११	१४	अधिउपसर्गे	अधिउपसर्गे
७	१	इध	इन्ध
११	३	इर्ष्यायां	ईर्ष्यायां
११	४	इरज	इरज्
७	४	इर्ष्यायां	ईर्ष्यायां
६	७	इन्तति	ईन्तति
९	४	१	१
११	११	उछे	उच्छे
११	११	उछति	उच्छति
११	६	निवासे	निवासे

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	११	उछति	उच्छति
११	९	उदकः	उदकं
१०	१	आछादने	आच्छादने
११	२	उदते स्वर्णं	उदतेस्वर्णं
११	६	उंहति	ओहति
११	१३	आछादने	आच्छादने
११	२	ऋक्षणोति	ऋक्षिगोति
११	३	ऋच	ऋच
११	११	ऋचति	ऋचति ऋक्
११	४	ऋछ	ऋच्छ
११	७	ऋच्छति	ऋच्छति
११	८	उर्जने	उपार्जने
११	९	भ्रजे	भर्जने
११	११	ऋञ्जते	ऋञ्जते
११	१६	धा धं	द्धा द्धं
११	१८	धा धं	द्धा द्धं
१२	४	ऋषिः	ऋषिः
११	१४	शोषणाल्मथयोः	शोषणाल्मथयोः
१३	७	केशं	केशान्
१४	९	काण	काणः
१५	१४	१	१०

पृष्ठांक.	पंचयंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	५	कशति समूलकाशं	कपति समूलकाषं
"	८	बध्ननयोः	बन्धनयोः
"	९	कालोपदेशे	कलोपदेशे
१६	१६	भयभीषयोः	भयभीषणयोः
१७	१६	काञ्ची	काञ्ची
"	१८	संकाच	संकोचः
१८	१	कुञ्ज	कुञ्च
"	७		१०
"	१८	कुण्डते	कुण्डते
१९	१०	स्मृतै	स्मृतौ
"	१४	लुभ	कुभ
२०	७	कुष्णाति	कुष्णांति
"	१२	वीस्मारेण	विस्मारणे
२१	११	कृञ्ज	कृञ्जते
२३	७	क्रन्दते	क्रन्दते
"	९	आप्रत्यये	अप्रत्यये
२४	१	क्रुञ्च	क्रुञ्च
"	"	कौटिल्याल्पी भावयोः	कौटिल्याल्पी भावयोः
"	"	क्रुञ्चेति	क्रुञ्चति
"	६	धा धं	द्धा द्धं
"	९	दुग्न्वाद्वर्तव्योः	दुर्गन्वाद्वर्तव्योः

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	१३	क्र	कू
११	११	क्रुणाति क्रुणाते	कूनाति कूनीते
२५	२	ना नं	न्ना न्नं
११	१	परिवेदने	परिदेवने
११	८	ता तं क्लन्ति	न्ता न्तं क्लान्तिः
११	७	कीव	क्लीव
११	१९	कृच्छ्रजीवेन	कृच्छ्रजीवने
११	११	क्षञ्जयाति	क्षञ्जयाति
२६	५	शक्तौ	शक्तौ
११	१४	क्षि	क्षी
२७	१	माचने	मोचने
११	१७	जमः	जनः
२८	५	क्षुपधं धा धं	क्षुब्धः ठधा ठधं
२९	३	खच	खज
११	६	खट्टयवि	खट्टयति
३०	३	दशने	दंशने
११	११	खर्व	खर्व
११	११	खर्वति खर्वः	खर्वति खर्व
११	४	खर्व	खर्व
११	११	खर्वति	खर्वति
३२	१२	गर्ज	गर्ज

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	११	गर्जति	गर्जति
११	१३	गर्ज	गर्ज
११	११	गर्जयति	गर्जयति
११	१४	गर्ह	गर्ह
११	११	गर्हति	गर्हति
११	१५	गर्हयति	गर्हयति
११	१५	गर्ह	गर्ह
११	१६	गर्हयति	गर्हयति
११	१७	गर्ह	गर्ह
११	११	गर्हति	गर्हति
११	१८	गर्ह	गर्ह
११	११	गर्हति	गर्हति
३३	१	गर्ह	गर्ह
११	१६	शब्दे	अव्यक्तेशब्दे
३४	२	गुञ्जा	गुञ्जा
११	३	गुष्ठयति	गुष्ठयति
११	९	क्रोडे	क्रोडायां
११	१९	गुर्ह	गुर्ह
११	११	गुर्हति	गुर्हति
३५	१	गुर्ह	गुर्ह
११	११	निकेतने.	पूर्वनिकेतने

पृष्ठांक.	पिक्तयंक.	मशुद्ध.	शुद्ध.
११	११	गुर्दयति	गुर्दयति
११	७	गूर्द	गूर्द
११	७	गूर्दते (ऋ) गूर्दयति	गूर्दति (वा) गूर्दयति
११	१६	गतिचालयोः	गतिचलनयोः
३६	१	अन्वेच्छायां	अन्विच्छायां
३७	९	घग्व	घव
११	११	घग्वति	घवति
११	११	घटयति	घाटयति
११	१३	घट्टः	घट्ट
११	१७	घर्ष	घर्ष
११	११	घर्षति	घर्षति
३८	१३	शद्वे	अविशद्वे
११	१८	घूर्णति क्षीवः	घूर्णते क्षीवः
३९	१२	व्यसने	व्ययने
११	११	चक्रयति	चक्कयति
४०	९	चनति	चनति (वा) चान- यति
११	१३	चपति (वा) चपयति	चम्पति (वा) चम्प- यति
४१	४	असंशये	संशये

पृष्ठांक.	पञ्चयंक.	अंशुख.	शुख.
११	६	चर्चते	चर्चति
११	११	चर्च	चर्च
११	११	परिभाषणतर्जनयो.	परिभाषणभर्त्सनयोः
११	११	चर्चति	चर्चति
४१	७	चर्च	चर्च
११	११	चर्चयते चर्चा	चर्चयते चर्चा
११	८	चर्व	चर्व
११	११	चर्वति	चर्वति
११	९	चर्व	चर्व
११	९	चर्वति (वा) चर्वय- ति चर्वणं	चर्वति (वा) चर्वयति चर्वणं
४२	९	चययति	चययति (वा) चप- यति
११	१३	संवेदने	संचेतने
११	१७	हावकृतौ	भावकृतौ
४३	१	आमर्षणे	आमर्षणे
११	८	व्यसने	न्ययने
११	११	चाटयति	चोटयति
११	२०	हावकरणे	भावकरणे
४४	५	चुव	चुव
११	७	चुर	चूर

पृष्ठांक.	पंचयंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	११	हावकरणे	भावकरणे
४६	६	हानौ	हासे
११	१०	उर्जने	ऊर्जने
११	१६	११	१०
४७	७	चर्च	चर्च
११	११	परिभाषणतर्जनयोः	परिभाषणतर्जनयोः
११	९	परिभाषणतर्जनयोः	परिभाषणतर्जनयोः
४७	९	मर्ज	जर्ज
४७	११	परिभाषणतर्जनयोः	परिभाषणमर्त्सनयोः
११	११	नर्जति	जर्जति
४८	३	जंसयति	जंसयति जंसति वा
४९	४	परितर्कणे	परितर्कणे
११	७	जूर्व	जूर्व
११	११	जूर्वेति	जूर्वेति
११	११	न्यक्कारे	न्यक्कारे
११	१४	जीर्ण	जीर्णः
११	१६	जीर्णः	जीर्णः
११	१७	जरति (वा) जरयति	जरति (वा) जारयति
५१	५	परिभाषणतर्जनयोः	परिभाषणमर्त्सनयोः
११	११	श्रीर्यति	श्रीर्यति
११	१२	टक्कयति टक्कः विटक्कः	टक्कयति टक्कः विटक्कः

पृष्ठांक.	पक्षयक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
६२	१९	नखति	नक्षति
६३	९	प्रव्हशद्वे	प्रव्हत्वे शद्वे च
"	१०	णर्द्ध	णर्द्ध
"	१०	नर्द्धः	नर्द्ध
६४	१	शुद्धौ	शुद्धौ
"	"	प्रणिक्ते	प्रणिक्ते
"	९	निस्ते	निस्ते
"	१२		स्यौल्यै
६५	६	तगति	तङ्गति
"	७	संकुची	संकोचने
६६	३	तपेत (वा) तापयते	तपति (वा) तापयति
"	११	तर्जयते	तर्जयते
"	१३	तर्ब्ब	तर्ब्ब
"	"	तर्ब्बति	तर्ब्बति
६७	४	जिघांसायां	गतौ
"	५	जिघांसायां	गतौ
"	६	स्कन्दनेच	आस्कन्दने च
"	८	क्षमाय च	क्षमायां च
"	१६	वार्ता	वार्ता
६८	२	समाप्तौ	कर्मसमाप्तौ
"	४	गतिवृद्धिवृत्तिहिंसापूर्तेषु	गतिवृद्धिहिंसापूर्तेषु

पृष्ठांक.	पञ्चयंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
॥	१९	स्तृता	आवरणे
९९	४	तर्दने	तर्दने
॥	७	तुपति	तुम्पति
॥	११	भोजने	भोजनेन
६०	१०	चरणे	त्वरणे
॥	१०	तूर्यते	तूर्यते
६१	१	तर्पति (त) तर्पयति	तर्पति (त) तर्पयति
॥	१०		६
॥	१०	तृहति	तृहति
६२	१०	ग्रहनिषेधेद्युतौ	ग्रहनिषेधे द्युतौ
६३	१	त्वक्षति	त्वक्षति
॥	३	गतिकम्पयोः	गतिकम्पयोः
॥	१५	दध	दध
॥	॥	दध्नाति	दध्नाति
॥	१६	दण्डनीपातने	दण्डनिपातने
६४	१२	दश	दंश
॥	१३	दश	दंश
॥	१४		१
॥	१७	दंसयते गात्रं	दंसयते दंसति वा गात्रं
६५	६	आर्जवे	आर्जवे
॥	८	वर्द्धकि	षर्द्धकि

पृष्ठांक.	पक्षयक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
६६	१३	मेतादेशे च	वृतादेशे च
६७	१२	सहज्ञाय	सयज्ञाय
"	१	उपतापे	उपतापे
"	१०	आदाने	आदरे
"	"	१-१	१-१०
६८	१	हृफ	हृफ
"	"	हृफति	हृफति
६९	१	निद्राया	निद्रायां
"	४	द्राघ	द्राघ
"	"	द्राघते	द्राघते
"	१३	द्राहः	द्रोहः
"	१६	दृ	दृ
"	"	द्रायति. रात्रौ लोकः	द्रायति रात्रौ लोकः
७०	१	द्वेषति (वा) द्रपते	द्वेषति (वा) द्वेषते
"	६	२	३
"	"	शुद्धौ च	शुद्धौ च
७१	१	५	१
"	५	अधारे	आधारे
७१	१२	हिंसायां	हिंसायां
७२	१	कपेन	कम्पने
"	४	केसरपुष्पंजातं	केसरपुष्पजातं

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	११	कुंकुमे जनः	कुंकुमेन जनः
७३	४	धर्षयते	धर्षयते
११	८	कपाद्धिनं	कपाद्धिनं
११	१६	उत्क्षेमे	उत्क्षेपे
११	१७	ध्वणति	ध्वणति
७४	४	धाड	ध्राड
११	७	गतिस्थैर्ययोः	गतिस्थैर्ययोः
११	१९	धनुर्द्धन्वी	धनुर्धन्वी
७६	३	याञ्चोपतापैश्वर्यासीःपु	याञ्चोपतापैश्वर्याशीःपु
११	५	याञ्चोपतापैश्वर्याशीःपु	याञ्चोपतापैश्वर्याशीःपु
११	९	सचने	सेचने
११	१३	न	नृ
११	१४	न	नृ
११	२०	पतं गोगगने	पतंगो गगने
८०	८	भाषद्वार्थे	भाषार्थे
११	१४	क्लीशि	क्लेशे
८१	८	शिभुः	शिशुः
८२	८	श्रीप्प	भ्रीप्पः
८३	७	पूप्पयति	पूप्पयति
८७	१	फकति	फक्कति
८८	२	वधते	वधत

पृष्ठांक.	पत्तयक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
८८	१०	बर्ब्ब	वर्ब
"	"	बर्ब्बति	वर्बति
"	"	वर्धौ दीप्तौ च	वधे दीप्तौ च
"	१४	दानवधनिरूपेषु	दानवधनिरूपणेषु
९०	११	ब्रस	ब्रस
"	१७	भज	भज
९२	८	दधिभांड	घधिभाण्डं
"	१२	भयः	भयं
९५	११	मञ्जु	मञ्ज
"	"	मञ्जति	मञ्जति
९८	१६	मार्ज	मार्ज
"	"	मार्जयति मार्जारः	मार्जयति मार्जारः
९९	११	मेघाहिसयोः	मघाहिसयोः
१००	१७	आक्षेपप्रमर्दनयोः	आक्षेपप्रमर्दनयोः
१०१	१४	कंटेकन वार्धौ	कष्टकैर्वार्धौ
१०३	३	मृदनाति	मृदनाति
१०५	७	देवपूजासंगतिकरः णदा-	देवपूजासंगतिकरण-
		नेषु	दानेषु
"	१६	यच्छति पापात्साधुः	यच्छति पापात्साधुः
१०६	३	याज्यायां	याज्यायां
"	१२	युच्छति	युच्छति

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	२०	युध्यत	युध्यते
१०७	१	यूपपते	यूपते
१०८	९	पाशंडी	पाषंडी
११	१४	राभश्य	राभस्ये
१०९	१२	रंहयति	रंहति
११	१६	राद्यतेयुध्वायवीरः	राद्यते युद्धाय वीरः
११	१४	संसिद्धौ	वृद्धौ
११०	९	रिक्तेरोगी	रिक्ते रोगी
११०	१०	कथनयुद्धनिन्दाहिंसा- दानेषु	कथनयुद्धनिन्दाहिं- सादानेषु
१११	७	द्युतौ	द्युतौ
११	१७	गत्तालस्यास्तेयखेटे	गत्यालस्यस्तेयोखेटे
११२	३	गाप्यः (यथा)	गोप्यः (अथवा)
११	५	रुणध्वि	रुणद्धि
११	१२	रोहति मृत्तिकाया घटः	रोहति मृत्तिकाया घटः
११३	५	प्लवे गतौ च	प्लवगतौ
११	१५		गतौ
११	१६		गतौ
११	१८	स्वादापने	आस्वादने
११४	८	भर्त्सने	भर्जने
११	९	भर्त्सने	भर्जने

पृष्ठांक.	पक्षयक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११६	१	श्लेषणविलासयोः	श्लेषणविलासयोः
"	"	लपति	लसति
"	८	भर्गे च	भर्जने
"	९	भर्गे च	भर्जने
"	९	लांजते	लांजति
"	१६		१०
११७	१३	लुंठ	लुट
"	"	लुट्यति	लुट्यति
११८	२	लुंठ	लुष्ट
"	२	लुंठति (वा) लुट्यति	लुष्टति (वा) लुष्टयति
"	१०	लण्डयति	लुण्डयति
११९	१०	स्वलनेच	स्वलने च
"	११	पूर्वभावे स्वेने च	पूर्वभावे स्वप्ने च
१२२	८	इप्सायां	ईप्सायां
१२३	२	वद्ध	वर्ध
"	"	पूर्तिछेदोः	पूर्तिछेदनयोः
"	"	वद्धयति	वर्धयति
१२४	१४	सुखाप्तिगतिसवोसु	सुखाप्तिगतिसेवासु
१२५	३	वाञ्छति	वाञ्छति
"	११	विछ	विच्छ
"	११	विछति	विच्छायति

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	१३	विष्ठ	विच्छ
"	१२	विच्छयति	विच्छयति
"	१३	विवेक्ति	विवेक्ति
१२६	१२	विप्र	विष्ट
"	१२	विवेप्रयति	वेष्टयति
१२७	७	वीरयति	वीरयते
१२८	६	वृण्यते	वृणुते
१२८	८	संभक्तो	वरणे
१२०	२	व्यचति	विचति
"	१५	संस्कृतौ गतौ त्यागेच	मार्गसंस्कारगत्योः त्या- गे च
"	"	त्रि	त्रो
१२१	७	वृन्नाति	वृन्नानि
"	१४	शर्वति	शयति
१२२	४	संस्कारगत्योः	असंस्कारगत्योः
१२३	२	सवुः	शंवुः
१२५	५	शिष्यति	शिष्यति
१२६	१७	शुध्वः	शुद्धः
१२७	५	शुप	शुंष
"	१०	सस्या नविनांवृ वाहं	सम्यानि विनांवृवाहं
१२८	२	जलन	जलेन

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	१५	श्मील	स्मील
११	११	श्मीलति	स्मीलति
१४०	१०	श्रवत्यामद्यटाज्जलं	श्रुणोति
१४२	६	ष्वग	पग
११	१०	सेचते	सचते
१४३	३	सघ्नोति	सघ्नोति
११	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
१४५	४	भैस्ययोः	ऐश्वर्यदाप्त्योः
११	१	प्राणि गर्भविमोचने	प्राणिगर्भविमोचने
११	९	क्षेपे	प्रेरणे
११	१०	क्षणने	क्षरणे
११	१३	पूक्ष्य (वा) शूष्य	पूक्ष्य (वा) शूष्य
११	१७	चालगत्योः	चलनगत्योः
१४६	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
११	९	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
११	१०	ष्टल	घुल
११	१६	आद्भीभावे	आद्भीभावे
११	१८	आद्भीभावं	आद्भीभावे
१४७	१	स्तौवि (वा) स्तुते स्ववः	स्तौवि (वा) स्तुतेवः
११	२	प्रसदे	
११	७	ष्टेव	

पृष्ठांक.	पंचयंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	७	ष्टेवति	ष्ठेवति
११	१२	स्थसति	स्थस्यति
१४८	१६	गात्रप्ररक्षणे	गात्रप्रक्षरणे
११	१९	धैमण	धैमण
१४९	८	सठ स्वठ	सठ स्वठ
११	९	सन्तान क्रियायां	सन्तानक्रियायां
११	११	सज्ज	सर्ज
११	११	अज्जने	अर्जने
११	११	सज्जति	सर्जति
११	१७	सर्व	सर्व
११	११	सर्वति	सर्वति
१९१	५	ऐश्वर्य दीप्तयोः	ऐश्वर्यदीप्तयोः
११	७	सूक्ष	सूक्ष
११	११	सूक्षति	सूक्षति
११	१०	सूत्रणे	सूत्रेण
१९२	१	आपवे उद्धतै	आप्लवे उद्धतौ
११	९	बाणैर्जुनः	बाणैर्जुनः
११	११	स्कन्दते शाखा मृगोवृ-	स्कन्दते शाखामृगो वृ-
		क्षादक्षान्तरं	क्षादक्षान्तरं
११	१२	विदारै	विदारणे
११	१३	चथच ल्योः	संचलने

पृष्ठांक.	पंचयंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	१५	श्मील	स्मील
११	११	श्मीलति	स्मीलति
१४०	१०	श्रवत्यामद्यटाज्जलं	श्रुणोति
१४२	६	ष्वग	षग
११	१०	सेचते	सचते
१४३	३	सघ्नोति	सघ्नोति
११	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
१४५	४	भैस्ययोः	ऐश्वर्यदीप्त्योः
११	६	प्राणि गर्भविमोचने	प्राणिगर्भविमोचने
११	९	क्षेपे	प्रेरणे
११	१०	क्षणने	क्षरणे
११	१३	पूर्य (वा) शूर्य	पूर्य (वा) पूर्य
११	१७	चालगत्योः	चलनगत्योः
१४६	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
११	९	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
११	१०	ष्टल	ष्टल
११	१६	आर्दीभावे	आर्दीभावे
११	१८	आर्दीभावे	आर्दीभावे
१४७	१	स्तौवि (वा) स्तुते स्ववः	स्तौति (वा) स्तुतेवः
११	२	प्रसदे	प्रसादे
११	७	ष्टेव	ष्टेव

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	७	ष्टेवति	ष्ठेवति
११	१२	स्थसति	स्थस्यति
१४८	१६	गात्रप्ररक्षणे	गात्रप्रक्षरणे
११	१९	धैमण	वर्मेण
१४९	८	सठ स्वठ	सठ स्वठ
११	९	सन्तान क्रियायां	सन्तानक्रियायां
११	११	सज्ज	सर्ज
११	११	अज्जने	अर्जने
११	११	सज्जति	सर्जति
११	१७	सर्व	सर्व
११	११	सर्वति	सर्वति
१९१	५	ऐश्वर्य्य दीप्तयोः	ऐश्वर्य्यदीप्त्योः
११	७	सूक्ष	सूक्ष्
११	११	सूक्षति	सूक्ष्ति
११	१०	सूत्रणे	सूत्रेण
१९२	१	आपवे उद्धतै	आप्लवे उद्धतौ
११	९	वाणैरर्जुनः	वाणैरर्जुनः
११	११	स्कुन्दते शाखा मृगोवृ-	स्कुन्दते शाखामृगो वृ-
		क्षादृक्षान्तरं	क्षादृक्षान्तरं
११	१२	विदारै	विदारणे
११	१३	चथच लयोः	संचलने

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१५३	३	स्तृणुतेया सप्ता देहं	स्तृणुते या सप्तदेहं
"	४	आच्छादने	आच्छादने
"	१४	संचयं-स्थाने	संचये स्थाने च
"	५	स्तृणानि	स्तृणाति
१५४	१०	स्फूर्तो	स्फूर्तो
"	११	स्फूर्तो	स्फूर्तो
१५५	२	विकशने	विकसने
"	३	विसरणे	विशरणे
"	४	विसरणे	विशरणे
"	८	विकशने	विकसने
"	१०	स्फुटयति	स्फुटति
"	१३	स्फूर्ज	स्फूर्ज
१५६	६	स्पन्द	स्यन्द
१५६	६	स्पन्दत	स्यन्दते
"	७		
"	"	ध्वनने	शब्दे
"	८	स्यम	स्यम
१५७	९	स्त्रेकते	स्त्रेकते
"	११	पयोयतिः	पयो यतिः
"	१७	केशं कुंकुमेन नारी	केशान् कुंकुमेन नारी
१५८	१	आतके	आतंके

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
॥	७	त्विप्वि	त्विषि
॥	८	हट	हठ
॥	॥	हंठतिराजा	हठति राजा
॥	१०		
१९९	३	चोर भयान्नरः	चोरभयान्नरः
॥	५	हावकरणे	भावकरणे
॥	१०	दानादानयोः	दानादानयोः
॥	१२	सर्वप्रलयाग्निः	सर्व प्रलयाग्निः
॥	११	वेर्णच	वरेण च
११०	३	लृश्यति	दृष्यति